CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्दन दोहावली

6.28.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

-4

वली ....

....

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुस्तक सं० 1165 दिनांक 18.3.62
क्रमांक
१०४२०

कृपया इस ग्रन्थको निम्नांकित तिथि पर या उसके पूर्व
लौटा दें। विलम्बसे लौटानेपर ५ पैसे
प्रतिदिन दण्ड देना होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वन्दे जिनवरम्

चन्दन-दोहावली

हि० ४२०

कविरत्न

श्री चन्दन मुनि जी

११६५

पूज्य जीवनराम
जैन पुस्तक प्रकाशक समिति
गीदड़बाहा (पञ्जाब)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य जीवनराम जैन पुष्प-माला का पुष्प नं० २६

पुस्तक :
चन्दन-दोहावली

लेखक :
कविरत्न श्री चन्दन मुनि जी

सम्पादक :
श्री तिलकधर शास्त्री
सम्पादक आत्म-रश्मि
लु धि या ना

संस्करण : प्रथम
ज्येष्ठ २०२८

मूल्य :
दो रुपए

मुद्रक :
आत्म जैन प्रिंटिंग प्रेस,
३५०, इण्डस्ट्रियल एरिया-ए
लु धि या ना, (पंजाब)

प्रकाशक :
पूज्य जीवनराम जैन
पुस्तक-प्रकाशक-समिति,
गीदड़बाहा मण्डी, (पंजाब)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

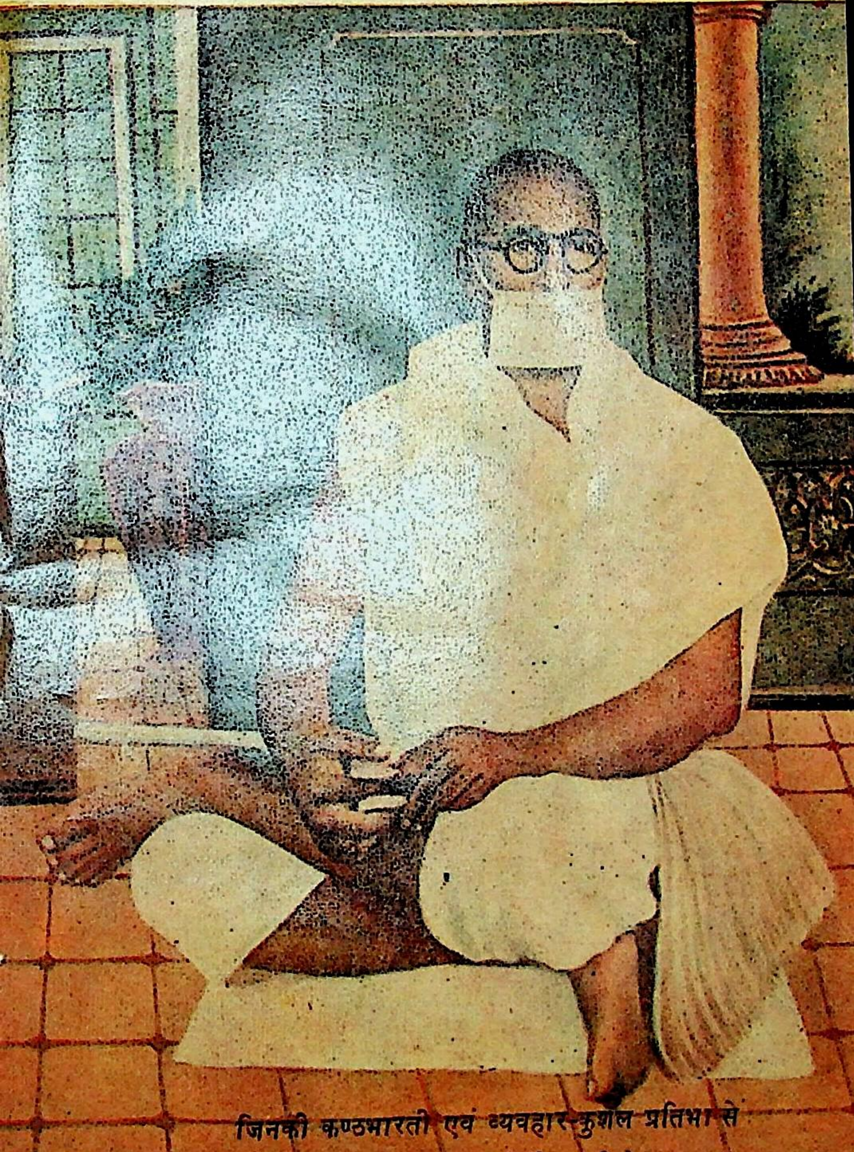

जिनकी कण्ठभारती एवं व्यवहार-कुशल प्रतिभा से
चन्दन-दोहावली निर्मित हुई है

कविरत्न श्री चन्दन मुनि जी महाराज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन्यवाद !

१. चिरंजीव कमलकिशोर जी, सुपुत्र श्री हेमराज जी कांसल बरनाला [पंजाब]।
२. श्री शिवजीराम हेमराज जी मित्तल, बरनाला (पंजाब)।
३. श्री ओमप्रकाश ललितमोहन जी मित्तल, बरनाला (पंजाब)
४. श्री टी. आर. जैन, लुधियाना ने अपनी सुपुत्री आयुष्मती शशिबाला बी.ए. के शुभ-विवाहोपलक्ष में।
५. श्री ओमप्रकाश जी जैन, लुधियाना ने अपने सुपुत्र श्री सुरेशकुमार के शुभ-विवाहोपलक्ष में।
६. श्री धर्मचन्द जैन, संगरया मण्डी ने अपने सुपुत्र श्री जैनप्रकाश जी के शुभ विवाहोपलक्ष में।
७. श्री रौनकराम पालाराम जी गुप्ता, रामामण्डी ने श्री वज़ीरचन्द जी के शुभ विवाहोपलक्ष में।
८. श्री हंसराज चैनलाल जी जैन, जालन्धर शहर (पंजाब)।
९. श्री यशपाल जी जैन, मालेरकोटला (पंजाब)।
१०. श्री मुलखराज जी जैन, मालेर कोटला (पंजाब)।
११. मुनशी श्री वलीरामजी जैन, मालेर कोटला (पंजाब)।
१२. श्री देवीदयाल जी जैन मालेर कोटला (पंजाब)।
१३. श्री रोशनलाल सतपाल गुप्ता, गीदड़बाहा मंडी (पंजाब)।
१४. श्री चाननराम रोशन लाल जैन, बलाचौर (दोआबा)।
१५. श्री कबूलचन्द जुगमिन्द्रलाल जैन, पद्मपुर (राजस्थान)।
१६. श्री पृथ्वीराज अभयकुमार जैन, पद्मपुर (राजस्थान)।
१७. श्री हिम्मतराय चन्द्रभान जैन, तलवण्डी मज्जूकी (संगरूर)।
१८. डा० देवकीनन्दन मित्तल, संगरूर (पंजाब)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९. वैद्य तेजपाल जैन, भाईरूपा (भटिण्डा)।
२०. श्री हरचरण दास जैन, अहमदगढ़ मण्डी, (पंजाब)।
२१. श्री जयगोपाल जैन, जगरावां।
२२. श्री जगन्नाथ जैन, जगरावां।
२३. श्री ज्ञानचन्द जैन, जगरावां।
(स्व० श्री लछमनदाल जैन की पुण्य स्मृति में उनके ऊपर लिखित तीनों पुत्रों की ओर से)।
२४. श्रीमती निहालो देवी, धर्मपत्नी श्री हेमराज जी कांसल बरनाला (पंजाब)।
२५. श्रीमती दुर्गा देवी, धर्मपत्नी श्री देसराज जी मित्तल बरनाला (पंजाब)।
२६. श्रीमती विद्यादेवी, धर्मपत्नी श्री देवराज जी मित्तल बरनाला (पंजाब)।
२७. श्रीमती परमेश्वरी देवी, धर्मपत्नी श्री बंसीलाल जी गोयल, बरनाला (पंजाब।)
२८. श्रीमती तारावन्ती, धर्मपत्नी श्री अमरनाथ जी जैन, रायकोट (पंजाब)।
२९. श्रीमती आशारानी जैन, मेरठ।
३०. वैरागिन कुमारी शिमला जैन बी० ए० आनर्ज़ प्रभाकर अबोहर मण्डी। अपनी दीक्षा के उपलक्ष में।

उक्त सम्माननीय दानियों के सराहनीय सहयोग से ही यह पुस्तक स्वल्प मूल्य में प्रिय पाठकों के कर-कमलों तक पहुंची है। अतः समिति की ओर से सभी का हार्दिक धन्यवाद किया जाता है। आशा है भविष्य में भी सभी से इसी प्रकार स्तुत्य सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

चरणदास जैन
मन्त्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुख्य सहायक-ग्रन्थ सूची

श्री आचाराङ्ग सूत्र (पूज्य श्री अमोलक ऋषि जी महाराज)
श्री ठाणांग सूत्र ”
श्री समवायांग सूत्र ”
श्री भगवती सूत्र ”
श्री ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र ”
श्री उवासगदसांग सूत्र ”
श्री अन्तगडदसांग सूत्र ”
श्री अनुत्तरोववाइअदसांग सूत्र ”
श्री विपाकश्रुत ”
श्री रायपसेणी सूत्र ”
श्री उत्तराध्ययन सूत्र (पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज)
श्री दशवैकालिक सूत्र ”
पर्युषण-प्रवचन (राष्ट्र-सन्त उपाध्याय पं. श्री अमर मुनि जी)
तीन बात ”
गृहस्थ-धर्म (योगनिष्ठ पं. मुनि श्री फूलचन्द्र जी 'श्रमण')
श्रावक-कर्त्तव्य (पं मुनि श्री सुमनकुमार जी)
विचार-रेखा (पं. गणेश मुनि जी शास्त्री, साहित्यरत्न)
जैन-सिद्धान्त बोल-संग्रह (श्री भैरोंदान जी सेठिया, बीकानेर)
श्रीमद्भगवद्गीता
मनुस्मृति
शतक-त्रय (भर्तृहरि)
पंचतन्त्र (विष्णु शर्मा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अमरकोष	(श्री मुनि अमरसिंह)
चाणक्यनीति-दर्पण	(महर्षि चाणक्य)
आत्म-विकास	(श्री आनन्दकुमार)
अमर-वाणी	(हिन्दी पाकेट बुक्स प्रा० लि० दिल्ली)
श्री अमर-भारती	(आगरा)
आत्म-रश्मि	(लुधियाना)

जिनवाणी (मासिक)
ओसवाल हितैषी (मासिक)
श्रमण "
जैन प्रकाश (साप्ताहिक)
तरुण जैन "

हिन्दुस्तान, पंजाब केसरी, वीरप्रताप, हिन्दी मिलाप, नवभारत-टाइम्स आदि के साप्ताहिक और विशेष संस्करण आदि।

इनके लेखक विज्ञ जो, और प्रकाशक सुज्ञ।
सबका ही है स्नेह से, 'चन्दन' बहुत कृतज्ञ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्दन-दोहावली

समीक्षात्मक-अध्ययन

जब मनुष्य इस संसार को देखता है तो दृश्य का प्रभाव उसके मन और मस्तिष्क को आन्दोलित कर देता है, यही आन्दोलन वाणी के माध्यम से व्यक्त होने के लिये मचल उठता है, इसी अवस्था में हृदय के भाव, मस्तिष्क के विचार और उन भावों एवं विचारों से प्रभावित द्रष्टा का व्यक्तित्व मुखरित होकर साहित्य का रूप धारण कर लेता है। इस प्रकार युगयुगान्तरों से जो साहित्य-वर्षण हो रहा है, आज उसने एक विशाल साहित्य-सिन्धु का रूप धारण कर लिया है।

जब हम उस साहित्य-सिन्धु का मन्थन करते हैं तो उसमें तीन तत्त्वों की प्रधानता दृष्टिगोचर होती है—कल्पनातत्त्व, बुद्धि-तत्त्व और रस-तत्त्व। साहित्य में कहीं कल्पनातत्व की प्रधानता रहती है, कहीं बुद्धितत्व की और कहीं रस तत्त्व की, किन्तु उत्तम साहित्य में तीनों तत्त्वों का सामञ्जस्य होता है और इस सामञ्जस्य से युक्त साहित्य कल्पना के कारण सुन्दर, बुद्धितत्त्व के कारण शिव और रस-तत्त्व के कारण सत्य एवं स्थायी हो जाता है। ऐसा साहित्य कभी पुराना नहीं पड़ता। हमारा प्राचीन साहित्य इसी सामञ्जस्य के कारण आज भी नवीन है और कल भी नवीन ही रहेगा।

समय-समय पर समाज में ऐसे मनीषी विद्वान् अवतरित होते रहते हैं जो मानवता के पथ को प्रशस्त करने के लिये प्राचीन साहित्य-परम्परा में युगोपयोगी नया अध्याय जोड़कर उस परम्परा को अमरता एवं अक्षयता प्रदान करते हैं। हमारे प्रबुद्ध चेता-मनीषी सन्त श्री चन्दन मुनि जी इसी परम्परा के सन्त साहित्यकार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं, जिनकी कवि-लेखनी ने समय-समय पर अपने रस से जन-मानस को उद्बुद्ध किया है, उसकी सुप्त धार्मिक चेतना को झकझोरा है और उसे श्रेय-मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित किया है।

श्री चन्दन मुनि जी की प्रतिभा बहुमुखी है, वे काव्यकार हैं, कथाकार हैं, गीतिकाव्य के गायक हैं, आशुकवि हैं, परन्तु प्रस्तुत रचना "चन्दन-दोहावली" ने उनके एक नए ही उद्बुद्ध रूप को जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है।

'चन्दन-दोहावली' दोहा छन्द में लिखी गई रचना है। साहित्य-इतिहास के मर्मज्ञ इस निष्कर्ष पर पहुँच रहे हैं कि जिसको प्राचीन भाषा में 'दूहा-बन्ध' कहा जाता था, वही आज का 'दोहा छन्द' है और यह दोहा छन्द जैन मुनियों के मस्तिष्क की ही देन है। श्री हेमचन्द्राचार्य जी ने अपने सिद्ध शब्दानुशासन में अपने से ५-६ शती पूर्व तक के जैन मुनीश्वरों की जो रचनाएं उदाहरण रूप में संग्रहीत की हैं, उनमें 'दूहा' का प्रयोग अभीष्ट रूप में प्राप्त होता है। मुनिराज स्वयम्भू के 'पउम-चरिउ' की रामकथा-धारा में दोहों के कमल खिले दृष्टिगोचर होते हैं। नाथों ने और कबीर आदि सन्तों ने अपनी अनुभूतियां दोहों में ही व्यक्त की हैं। तुलसी की 'दोहावली', रहीम की 'सतसई,' विहारी की 'बिहारी सतसई', वृन्द की 'वृन्द सतसई' और वियोगी हरि जी की 'वीर-सतसई' इसी परम्परा के रत्न हैं।

परन्तु 'चन्दन दोहावली' का स्तुत्य प्रयास पहले तो संख्या में ही सबसे आगे बढ़ गया है। २२६० दोहों को देखकर सोचता हूँ कि मुनिराज का मस्तिष्क है या दोहे रचने की मशीन ?

परन्तु रचना के गौरव की श्रेष्ठता का आधार उसकी छन्द-संख्या नहीं होती, वह तो होता है उसका अनुभूति पक्ष जिसमें बुद्धितत्त्व और रस-तत्त्व की प्रमुखता रहती है, अतः हम अनुभूति-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पक्ष को दृष्टि से भी चन्दन दोहावली के उक्ति-रत्न अत्यन्त मोहक, आकर्षक एवं प्रभावशील हैं।

पहली बात तो यह है कि कवि युग-गति को भूलता नहीं, क्योंकि कवि-मस्तिष्क को ज्ञात है—

वायुयान युग आज है, गाड़ी-युग नहिं जान।
इसको 'चन्दन' चाल तूं, चातुर बन पहचान॥

सचमुच कविश्री जी ने चतुर बन कर युग-गति को समझा है और वर्तमान के मार्ग पर प्राचीनता की गाड़ी कैसे चल सकती है? इसके मर्म को उपस्थित किया है।

आज के युग की पहली मांग है 'समन्वय' और भगवान महावीर के युग की भी प्रबल मांग थी 'समन्वय'। भगवान् महावीर ने 'अनेकान्तवाद—स्याद्वाद' के सिद्धान्त-सूर्य से संसार को आलोकित किया था और श्री चन्दन मुनि जी ने उसी आलोक में बैठकर नवीन भाषा-शैली में समन्वयवाद को उपस्थित किया है। एक ओर वे जैन-संस्कृति की अमृत-वर्षिणी भावना को साहित्यिक रूप में उपस्थित करते हुए कहते हैं—

जन्म-मरण के चक्र की, जो सीमा से पार।
'चन्दन' जो भी हैं वहां, करें नमन स्वीकार॥

'जो भी हैं वहां'—इन शब्दों में कवि का औदार्य ही नमन-शील है, इसकी वन्दना है उन सबको जो सांसारिक बन्धनों से मुक्त हैं, शुद्ध हैं, बुद्ध हैं, सिद्ध हैं और वन्दनीय हैं। इस वन्दना में सबको अपनी वन्दन भावनाएं समर्पित कर कवि का उदारता और समन्वय को सन्तोष नहीं हुआ, अतः वह आगे बढ़कर स्पष्ट भाषा एवं गद्गद्-वाणी में बोल उठा है—

राम-जयन्ती आपको, कहती बनना राम।
जुल्म और अन्याय का, कभी न लेना नाम॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

युगद्रष्टा कवि में एक असाधारण गुण होता है—निर्भीकता, क्योंकि वह सत्य का उपासक है और सत्य-प्रवचन निर्भीकता के बल से ही व्यक्त होता है। इस प्रकार के सत्यवक्ता को आज की भाषा में 'क्रान्तिकारी' कहा जाता है, परन्तु मैं 'क्रान्तिकारी' नहीं कह सकता, क्योंकि 'क्रान्ति' शब्द में ध्वंस की गन्ध भर गई है. अतः मैं मुनिश्री को सत्य का समर्थक निर्भीक कवि एवं व्यंग्य का मर्मज्ञ विचारक कह सकता हूं। वैसे तो भारतीय संस्कृति की प्रत्येक परम्परा 'गुरु-गुण-गान' में ही अपनी धार्मिकता की पराकाष्ठा समझती है और साधु-वर्ग तो 'गुरु-महत्त्व' पर प्रवचन देता थकता ही नहीं है, किन्तु स्वार्थों की कुण्ठाओं से मुक्त कवि की सत्यशील वाणी कहती है—

गुरु की तारे जाति नहिं, गुरु का तारे त्याग।
गुरु के तप से त्याग से, करें अतः अनुराग॥
जो है कामी लालची, जो है दुनियादार।
तीन काल भी वह कभी, गुरु नहिं तारनहार॥
माया-ममता में बंधा, गुरु ही हो जो आप।
दूर करेगा आपके, कहिए कैसे पाप?

मुनिराज गुरुडम से ऊंचे हैं, तप एवं त्याग के समर्थक हैं। उन्होंने देखा त्यागी संन्यासियों के नाम होती जायदादों को। बाप-दादों की जायदादों को छोड़कर जन-धन से जायदादें बनवा कर अपने नाम से रजिस्ट्रियां करवाना सन्तत्व को कैसे सहन हो सकता है. अतः मुनिजी का त्यागमय मुनित्व कह उठा—

जिसको प्यारा त्याग-तप, ज्ञान, ध्यान भगवन्त।
रजिस्ट्री खेत मकान की, क्यों करवाए सन्त॥

दिव्य-द्रष्टा कवि-हृदय के सत्य ने किसी को बख्शा नहीं है। तथाकथित सन्तों की साज संभाल की है तो श्रावकों को भी उद्बुद्ध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करने के दायित्व को पूर्ण करती हुई कविवाणी स्पष्टता के लाउड-स्पीकर पर बोल उठी--

धन्य आज के श्रावको ! बने महा डरपोक !
मढ़ी मसानी कब्र को, देते फिरते धोक ?

समाज-दर्शन :

सन्त-कवि भी तो आखिर समाज का एक अंग है और समाज के प्रति उसका एक कर्तव्य भी है--उसे बुराइयों से बचाना। कविश्री जी का कर्तव्य मौन नहीं रहा और उन्होंने समाज पर ऐसे तीखे व्यंग्य किए हैं जो समाज को फ़ौरन ही जागृत करनेवाले हैं। पहला व्यंग्य तो 'मम्मी-डेडी' पर ही करते हुए कितनी ओजस्विनी भाषा में कहा गया है--

'चन्दन' मम्मी अब कहो, माँ कहने में पाप।
खबरदार जो बाप को, कहा किसी ने बाप ॥

चाहे इस दोहे को पढ़कर मम्मो मिमिआए या डेडी डांडें मारे या कोई बच्चा चीखे-चिल्लाए, कवि जी ने तो जो कहना था सो कह दिया है, कहने योग्य जो है।

बरातों में भांडों-सा भंगड़ा भारतीय-समाज के लिये एक कलंक ही तो है, उद्‌बुद्ध चेता समाज-सुधारक कवि इसे देखकर मौन कैसे रह सकता था, वह अफसोस की वाणी में बोला--

'चन्दन' जिसका नाचता, बाप बीच बाजार।
डालें क्यों नहिं भंगड़ा, उसके बरखुरदार ॥
पड़ती ज्यों-ज्यों ढोल पर, उलटी चन्दन चोट।
मूर्ख खूब उछालते, उछल-उछल तब नोट ॥

आज का युग नारी के समानाधिकार की रट लगा रहा है, परन्तु उसकी दृष्टि में समानाधिकार का अर्थ यही है कि नारी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समस्त सांस्कृतिक बन्धनों का परित्याग कर, लज्जा के आभूषण को उतार फेंके, परन्तु मुनिराज इसके विरुद्ध हैं, वे नारी को मर्यादा की देवी के रूप में पूजनीय ही देखना चाहते हैं। उन्हीं के शब्दों में—

पत्नी को गृह-लक्ष्मी, समझ सदा दें मान।
'चन्दन' घर को वे पुरुष, पाते स्वर्ग समान॥
जो चाहो चन्दन बने, जीवन यह खुशहाल।
पत्नी को पीटो नहीं, नहिं निन्दा सुसराल॥

दूसरे पक्ष में वे इस सामाजिक बुराई की ओर भी समाज का ध्यान खींचना चाहते हैं—

मानें चाहे आप न, मानें मेरी बात।
ठीक न लेकिन देवियां, वर-यात्रा के साथ॥

साथ ही वे गृहस्थ-जीवन के लिये आवश्यक निर्देश देते हुए कहते हैं—

पत्नी में पति देव में, छिड़ी जहां भी जंग।
चन्दन सुख का काफ़िया, हुआ वहीं बस तंग॥

हिन्दी-प्रेम :

हिन्दी देश की राष्ट्र-भाषा है और अपनी भाषा का व्यवहार ही राष्ट्र-गौरव को सुरक्षित रखता है। सजग कवि-बुद्धि इस सत्य के प्रति उदासीन नहीं हैं। वे हिन्दी की उपेक्षा के दुख को अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं—

इंगलिश है हर काम में, हिन्दी से परहेज़।
'चन्दन' हिन्दी बन चले, एक तरह अंग्रेज़॥
पत्रों पर इंगलिश पते, तन पर इंगलिश वेश।
बोर्ड हैं इंगलिश के यहां, यह है भारत देश!!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुछ लोग हिन्दी को अपनाने भी लग गये हैं, परन्तु इंगलिश के मोह का परित्याग नहीं कर पाए, ऐसे लोग भी क्रान्तद्रष्टा मुनिराज की नजरों से बच नहीं पाए। उनके लिये भी सजग कवि वाणी कह उठी है :—

नज़र मार चन्दन ज़रा, देखो तो बाजार।
इंगलिश बोर्ड हैं सैकड़ों, हिन्दी के दो चार॥
उनमें भी हिन्दी तले, ऊपर इंगलिश मेम।
चन्दन हिन्दुस्तान का, यह है हिन्दी प्रेम ?

इस सन्दर्भ में यह समझना आवश्यक होगा कि मुनिराज इंगलिश भाषा के विरुद्ध नहीं, इंगलिश-प्रेम के विरुद्ध हैं। उनका कथन है—

इंगलिश पढ़ने के कभी, 'चन्दन' नहीं विरुद्ध।
बनिये पर अंग्रेज मत, रखिये निर्मल बुद्ध॥

राष्ट्र-भक्ति :

श्री चन्दन मुनि जी जो कुछ कह रहे हैं उस सबके पीछे प्रेरणा-बिन्दु के रूप में देश-प्रेम एवं राष्ट्र-भक्ति ही है, जैसे माला के सभी मनकों के बीच धागा है, वैसे ही उनके प्रत्येक वचन के पीछे राष्ट्र-प्रेम है। उदाहरण के रूप में—

तन मन धन चन्दन सभी, वारे वही सहर्ष।
रोम-रोम में रम रहा, जिसके भारतवर्ष॥

आज हमारा प्यारा विद्यार्थी-वर्ग पथभ्रष्ट हो रहा है। राष्ट्र के जागरूक सन्त 'चन्दन' जी की दृष्टि से राष्ट्रव्यापिनी यह बुराई भी छिपी नहीं रही। वे कहते हैं—

वैरी विद्या के बड़े, तोड़ फोड़ हड़ताल।
दोनों ही से दूर तुम, रहना चन्दनलाल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेकर अच्छे अंक जो, होना चाहो पास।
फ़िल्म सुरा सिगरेट के, कभी न फटको पास ॥

इस प्रकार चन्दन दोहावली में धर्म, जाति, देश और समाज के लिये जो कुछ उपयोगी है उसे कहने में कोई कसर नहीं रक्खी गई है। कहना कवि-धर्म है, समाज माने या न माने। मुनिराज जी ने अपने धर्म का पालन करते हुए अन्त में दृढ़ विश्वास के साथ यह कह अवश्य दिया है—

चन्दन की सुनते नहीं, अब जो नेक सलाह।
इक दिन वे पछतायेंगे, होकरके गुमराह ॥

इस प्रकार चन्दन-दोहावली का अनुभूति-पक्ष अत्यन्त व्यापक, मार्मिक, उपयोगी समर्थ एवं सत्य की सुदृढ़ आधार शिला पर व्यवस्थित है।

चन्दन-दोहावली का कला-पक्ष भी अत्यन्त समर्थ रहा है। बड़ी से बड़ी बात को दोहे जैसे छोटे छन्द में और वह भी खड़ी बोली में कह देने की कवि-कला अभिनन्दनीय है। देखिए गागर में सागर कैसे छलक रहा है—

आलस निन्दा ईर्ष्या, काम क्रोध मद मोह।
करें दोष दस मन मलिन, कपट कुटिलता द्रोह ॥

'बाप बीच बाजार' आदि श्रुत्यनुप्रासों और 'तन मन धन' 'चन्दन' सभी जैसे अन्त्यानुप्रासों ने भाषा को मोहक बना दिया है। भाषा की दृष्टि से कवि को अभिव्यक्ति का मोह है, किसी शब्द-विशेष के प्रति आसक्ति नहीं। न उन्हें हिन्दी से प्रयोजन है, न उर्दू से घृणा है, वे भाषा से ज़बरदस्ती वह कहलवा देते हैं जो उन्हें कहना होता है। बीच-बीच में मुहावरों के प्रयोग ने भाषा को अत्यधिक व्यावहारिक बना दिया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैंने बटलोई के एक दाने के समान 'चन्दन दोहावली' का कुछ रूप प्रस्तुत किया है। वस्तुतः 'चन्दन दोहावली' का प्रत्येक दोहा अपने आप में पूर्ण है, परन्तु उसकी विस्तृत व्याख्या की जाए तो प्रत्येक दोहा अपने आप में सिमटा हुआ एक प्रवचन है।

सांस्कृतिक दृष्टि से चन्दन दोहावली को शीघ्र ही वह स्थान प्राप्त होगा जो कबीर दोहावली या तुलसी दोहावली को प्राप्त है, अनुभव की दृष्टि से 'चन्दन दोहावली' की तुलना रहीम की दोहावली से की जाया करेगी और कला की दृष्टि से 'चन्दन-दोहावली', बिहारी सतसई के समकक्ष मानी जायेगी, यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

यह चन्दन - दोहावली,
सुन्दर सरस अनूप।
बिन्दु-बिन्दु में सिन्धु है,
या गागर में कूप॥

लुधियाना
वैशाख शुक्ला प्रतिपदा २०२८
२५-४-७१

तिलकधर शास्त्री
सम्पादक 'आत्म-रश्मि'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्या कहां है ?

मङ्गलाचरण	:	५
एक बात	:	७
दो बात	:	५९
तीन बात	:	८५
चार बात	:	१०९
पांच बात	:	१३९
छः बात	:	१४७
सात बात	:	१५३
आठ बात	:	१५९
नौ बात	:	१६३
दस बात	:	१६७
विविध दोहे	:	१७१
चौबीसी	:	१७३
महान माला	:	१७७
पुण्यपर्व पच्चीसी	:	१९१
पर्युषण पच्चीसी	:	१९५
विवाह् बावनी	:	१९९
वचन बहत्तरी	:	२०७
गुरु	:	२१८
जैनमुनि	:	२२१
मुनि-महिमा	:	२२३
मानव	:	२२५
नारियां	:	२२९
सन्नारियां	:	२३१
समय	:	२३५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन	:	२३९
दान	:	२४३
शासक	:	२५१
विद्यार्थियों से	:	२५३
पश्चिम पुजारी	:	२५५
खान-दान	:	२५९
हंसना	:	२६१
चोरी	:	२६३
मूर्ख	:	२६५
मूर्ख-नीति	:	२६९
बुद्धि	:	२७१
मित्रता	:	२७३
युवा वर्ग से	:	२७९
सिगरेट	:	२८३
वचन-वीर	:	२८७
वाणी से परीक्षा	:	२८९
समादर	:	२९१
गृह-जीवन	:	२९३
व्यापार	:	२९५
शिष्टाचार	:	२९९
सन्तति	:	३०३
वेश	:	३०५
दृष्टि	:	३०७
नीति निचोड़	:	३११
क्रोध	:	३१९
अहंकारी	:	३२३
माया	:	३२५
लोभ	:	३२९
विनय	:	३३७
हम पूछें आप बताएं	:	३३९
आत्म-परिचय	:	३४१
उपसंहार	:	३४३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्दन दोहावली

जीवन की

मार्मिक अनुभूतियों का

सुन्दर संग्रह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होगा जिसके पठन से,
पाठक - वर्ग निहाल।
वह 'चन्दन - दोहावली',
लिखता 'चन्दनलाल'॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

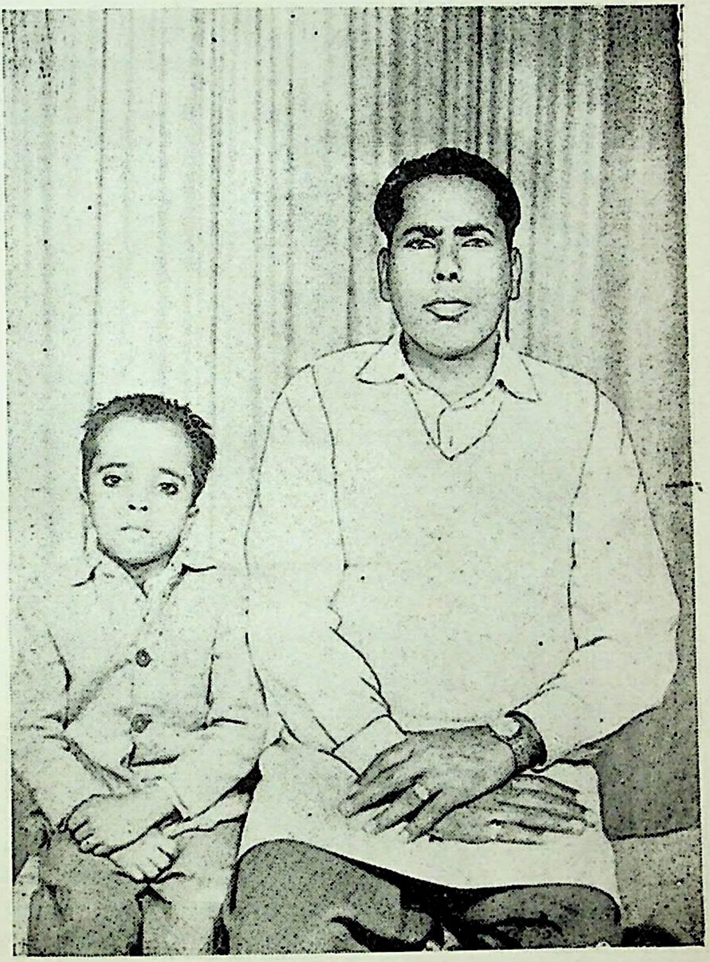

श्री हेमराज कमलकिशोर जी कांसल

(तपे वाले)

बरनाला (पंजाब)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंगलाचरण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंगलकारी काम हों, किए मंगलाचरण ।
अतः आज 'चन्दन' गहे, प्यारे प्रभु की शरण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स म र्प ण

महावीर के संघ में, चमके चन्द्र समान।
'धर्मदास जी' पूज्यवर, ज्ञान-ध्यान-गुण-खान॥

शिष्य उन्हीं के पूज्यवर, 'योगराज' विद्वान।
पूज्य 'हजारीमल्ल जी', उनके शिष्य सुजान॥

'लालचन्द जी' पूज्य थे, शिष्य उन्हीं के और।
जिनको कहना चाहिये, मुनि-मण्डल-शिर-मौर॥

शिष्य उन्हीं के पूज्य थे, ज्ञानी 'गंगाराम'।
जप-तप-संयम-साधना, करते थे अविराम॥

कहते सीधा सत्य थे, बिन कुछ लाग-लपेट।
यह 'चन्दन दोहावली', 'चन्दन' करता भेंट॥

चन्दन मुनि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

❋ मंगलाचरण ❋

परम पुरुष चैतन्यमय, अजर अमर अविकार।
चरणन 'चन्दन' कर रहा, वन्दन बारम्बार॥

'चन्दन' चिन्ता, शोक, भय, दुःख का नहीं निशान।
लीन स्वकीयानन्द में, जयतु सिद्ध भगवान॥

जन्म-मरण के चक्र की, जो सीमा से पार।
'चन्दन' जो भी हैं वहां, करें नमन स्वीकार॥

जिनकी सेवा से सदा, हो 'चन्दन' कल्याण।
निश-दिन वे मन में बसें, वीतराग भगवान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋषभदेव, अथवा कहें, आदिनाथ भगवान।
'चन्दन' चरणन का धरे, गद्-गद् मन से ध्यान।

राग - द्वेष का, काम का, किया जिन्होंने क्षय।
'वर्द्धमान' भगवान की, 'चन्दन' जय-जय-जय।

ऋषभदेव जिनराज से, महावीर - पर्यन्त
'चन्दन' चौबीसों रहें, जिनवर जी जयवन्त

'गणधर' ग्यारह वीर के, ज्ञान, ध्यान, गुण खान
'चन्दन' वन्दन कर रहा, सादर कर सम्मान

कोई भी जिससे नहीं, 'चन्दन' मन्त्र महान
'महामन्त्र नवकार' का, धरूं हृदय में ध्यान।

सौम्य मूर्ति तपशीलयुत, उन्नत भाल विशाल
प्रिय गुरुवर ज्ञानी गुणी, जय जय 'पन्नालाल'

दिव्य दया, दम, दान से, शोभित जो अत्यन्त
युग-युग तक 'चन्दन' रहे, 'जैन - धर्म' जयवन्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक बात

१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

●

जिससे अ्रय 'चन्दन' मिटे,
पाप - ताप - सन्ताप ।
'एक बात' पाठक ! पढ़ें,
हर दोहे में आप ।।

●

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक बात

ऊंचा उठने का अगर, है सच्चा चित-चाव ।
'चन्दन' सतत बनाइये, उन्नत-सरल स्वभाव ॥

'चन्दन' जो गुणवान हो, उच्च चरित्र महान ।
निर्धन हो, बदरूप हो, बनता विश्व-प्रधान ॥

पीड़ित-जन की जो करे, सेवा हो निस्वार्थ ।
'चन्दन' यश पाता वही, साध सके परमार्थ ॥

किसी धर्म को भी भले, आप लीजिये मान ।
बिना चरित्र 'चन्दन' कभी, होगा नहिं कल्याण ॥

कष्ट, असुविधा हानि भय, पीड़ा जिससे होय ।
अय 'चन्दन' 'हिंसा' उसे, कहता है हर कोय ॥

कान खोल सुन लीजिये, कहता 'चन्दन' साफ़ ।
रिश्वत लेना पाप है, देना भी है पाप ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महापाप कम तोलना, महा पाप कम माप ।
मगर मिलावट बन्धुओ ! सब पापों का बाप ।।

बिना विचारे दीजिये, वचन कभी नहिं भूल ।
अगर दिया तब तोड़ना, अच्छा नहीं असूल ।।

मोल बताना और ही, लेना लेकिन और ।
'चन्दन' अच्छे बनिक के, अच्छे नहिं ये तौर ।।

क्रोध, मोह, मद, मान से, अन्तर हुआ अशुद्ध ।
तन मांजे, मांजे न मन, बुद्धि हुई अवरुद्ध ?

बर्तन ऊपर से मले, अन्दर से नहिं धोय ।
उसमें डाले दूध को, पीता है क्या कोय ?

रह हंसता हर हाल में, हंसता जैसे फूल ।
'चन्दन' जीवन अन्यथा, होगा तीखा शूल ।।

शान्ति-सुमन खिलते जहां, वृक्ष निराला 'मौन' ।
'चन्दन' कहो मुकाबला, करे मौन का कौन ?

जीवन-जल का बुलबुला, जो जाने यह मर्म ।
'चन्दन' तज दुष्कर्म वह, करे सर्वदा धर्म ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सदा महान विचार जो, रखता है इन्सान।
वह कुछकर जाता यहां, 'चन्दन' कृत्य महान ॥

'वीर' न जो करता फिरे, औरों का संहार।
वीर वही 'चन्दन' सही, जो ले मन को मार ॥

जिसके जीवन में नहीं, सुख - दाता सन्तोष।
'चन्दन' उस इनसान पै, लाख-लाख अफ़सोस ॥

'चन्दन' क्या है लेख में, पहले लीजे देख।
हस्ताक्षर नहिं कीजिये, बिना पढ़े ही लेख ॥

करता है व्यवहार क्या, लघु लोगों के साथ।
सदा बड़प्पन परखिये, 'चन्दन' छोटी बात ॥

जिसमें अच्छा एक भी, बने न सुन्दर काम।
'चन्दन' वह दिन समझिए, निष्फल हुआ तमाम ॥

वैर भूल जो आ गया, वैरी घर दरम्यान।
'चन्दन' उस नर का कभी, करो न तुम अपमान ॥

बड़े खड़े हों पास जो, तब यदि बैठें आप।
'चन्दन' शिष्टाचार के, है यह सख्त खिलाफ़ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' सच्ची सभ्यता, करती है ऐलान।
आगे बढ़कर कीजिये, पूज्य जनों का मान ।।

गलियों में बाजार में, चलते गाना गीत।
अच्छे पुरुषों की नहीं, अय 'चन्दन' यह रीत ।।

जहां भक्त भगवान से, बैठे हों मन जोड़।
वहां न 'चन्दन' चाहिये, करना कुछ भी शोर ।।

कभी किसी के लीजिये, भूल न प्यारे प्राण।
धर्म अहिंसा जगत में, 'चन्दन' परम प्रधान ।।

गंध रहित खुश रंग भी, किंशुक है किस अर्थ ?
'चन्दन' धन भी धर्म बिन, होता बिल्कुल व्यर्थ ।।

तृष्णा देवी ! धन्य तू, धनिकों की सिरमौर।
अनुचित कामों में लगा, भेजे दुर्गम ठौर ।।

सुत भाई भी अर्थ - हित, बनते काले नाग।
अतः अर्थ को दूर से, दीजे 'चन्दन' त्याग ।।

सुधरे जिससे लोक नहिं, नहिं सुधरे परलोक।
'चन्दन' ऐसे अर्थ का, अन्त नतीजा शोक ।।

एक बा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' कितना हो भले, उनका यों नुकसान ।
'आज नहीं कल' है यही, आलसियों का गान ।।

आत्म-तत्त्व का है नहीं, 'चन्दन' जिसको ज्ञान ।
वह नर हो विद्वान भी, कहलाता अज्ञान ।।

सच्चे गुरु के चरण से, जिसे न 'चन्दन' प्यार ।
ऐसे मूढ कुशिष्य को, कौन उतारे पार ?

सच्चे गुरु पर जो हुआ, विनयवन्त बलिहार ।
यहां-वहां उस का रहे, 'चन्दन' जय-जयकार ।।

कैसा गुरु जो शिष्य की, जेबें करदे साफ़ ।
सही वही गुरुदेव जो, करदे दिल निष्पाप ।।

जो चाहो 'चन्दन' मिले, मुक्तिधाम सुख-धाम ।
सभी इन्द्रियाँ जीत कर, जीतो वैरी काम ।।

मन समेत सब इन्द्रियाँ, जो लेता है जीत ।
स्वयं, स्वयं का है वही, सच्चा 'चन्दन' मीत ।।

इन्द्रिय, मन को जो नहीं, जीत सका इनसान ।
वैरी अपना आप है, वह 'चन्दन' नादान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिसे देख दिल दंग हो, ज्ञान-गंग बह जाय।
सन्त-संग के रंग से, अंग-अंग मुस्काय॥

श्रेष्ठ कुलों के लोग भी, पीने लगे शराब !
'चन्दन' उनका आगया, समझो समय खराब॥

पहले भी थे कुछ बुरे, मगर अधिक हैं आज।
चला रसातल जा रहा, उनसे आज समाज॥

'चन्दन' सर्व समाज में, इक भी बुरा खराब।
गन्दी मछली एक भी, गन्दा करे तलाब॥

कभी किसी को तारते, बुरे न 'चन्दन' भाव।
बेईमानी को समझिए, ज्यों काग़ज की नाव॥

रहता हैं परिवार में, जैसे हर इनसान।
'चन्दन' चाहिये प्रेम से, रहना जग दरम्यान॥

बने न वैरी अन्य का, बने न वैरी अन्य।
वही एक सविवेक है, 'चन्दन' जीवन धन्य॥

कभी न होना चाहिए, 'चन्दन' दिन बर्बाद ?'
कभी न होवे नर दुखी, जो यह करले याद॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस कपटी संसार की, किए बिना परवाह।
'चन्दन' चलते जाइये, निश-दिन सीधी राह॥

दुख - दाता संसार में, जितने भी हैं काम।
'चन्दन' उनमें प्रथम है, 'लोभ' पाप का धाम॥

वायु रहित घर में जले, 'चन्दन' दीप समान।
निश्चल मन जिसका सदा, उसको योगी जान॥

तज़ अपयश,वश मन नहीं, कर सकते जो लोग।
ऐसे नर 'चन्दन' कभी, साध न सकते योग॥

मानव ! तू इस जन्म में, जो चाहे कल्याण।
ज्ञान-ध्यान से स्वयं की, कर 'चन्दन' पहचान॥

सज्जन 'चन्दन-से' कहे, सद्गुण के भण्डार।
करे सुगन्धित काटता, जो भी उसे कुठार॥

वैर, वैर से नहिं मिटे, वैर प्रेम से जाय।
भरे रुधिर से वसन को, जल ही शुद्ध बनाय॥

कितना ही हो आपका, अय 'चन्दन' विश्वास।
किसी अकेली नार के, कभी न बैठो पास॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेने में भी हर्ज है, देने में भी हर्ज।
बचना 'चन्दन' चाहिये, कभी भला नहिं 'कर्ज' ॥

दानव को मानव करे, मानव को भगवान।
'धर्म' उसी को ही सदा, कहते हैं गुणवान ॥

जिससे अय 'चन्दन' मिले, दुःख, चिन्ता-सन्ताप।
सन्त, गुणी, ज्ञानी मुनी, कहते उसको 'पाप' ॥

नहीं जहां से लौटना, नहीं कर्म का बन्ध।
'मुक्ति' वही 'चन्दन' कहो, जहां नित्य आनन्द ॥

जिससे जगका सुख मिले, सदा नहीं, कुछ काल।
नाम उसी का 'पुण्य' है, कहता 'चन्दन लाल' ॥

जो 'चन्दन' चंचल चपल, मुश्किल काबू आय।
टिके न टिकने दे कभी, नटखट 'मन' कहलाय ॥

'चन्दन' चढ़ छत पर कभी, रजनी में लें देख।
चित्रा, आर्द्रा, स्वाति का, तारा होगा एक ॥

भेद-भाव 'चन्दन' नहीं, त्याग, तपस्यावन्त।
वर्षा, मारुत, धूप-सा, सबका सांझा 'सन्त' ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बीस वर्ष की जानिये, अय 'चन्दन' हर एक ।
जितनी रेख ललाट पर; उतना जीवन देख ।।

काले सरल सतेज हों, सिर के बिरले बाल ।
नारी-नर हो वह सुखी, कहता 'चन्दन लाल' ।।

सख्त, विकट, मोटे, फटे, जिसके सिर के बाल ।
चोर, चुगल, द्वेषी, दुखी, वह नर 'चन्दनलाल' ।।

पण्डित नहिं धर्मात्मा, बेटा वह बेसूद ।
'चन्दन' जैसे व्यर्थ गौ, जो नहिं देती दूध ।।

यश, विद्या, गुणयुक्त जो, जीवन जीवन जान ।
यों तो रखता काग भी, 'चन्दन' प्यारे प्रान ।।

डूब रहे का जो बने, अय 'चन्दन' आधार ।
नदी-तीर के घास का—भी है जीवन सार ।।

वृद्धि आयु आनन्द सुख, जो भी चाहे खास ।
वाचस्पति का भी करे, नहिं 'चन्दन' विश्वास ।।

'चन्दन' होता सफल जो, बौद्धिक बल से काम ।
नहिं कर सकते हैं उसे, अस्त्र-शस्त्र, बल, दाम ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आ सकते हैं थाह में, नभ गिरि सिन्धु अनन्त ।
'चन्दन' शासक के मगर, मिले न मन का अन्त ॥

सदाचार से, सत्य से, जो भूषित भूपाल ।
जाता सीधा स्वर्ग को, आख़िर 'चन्दनलाल ॥

दुराचार, छल. झूठ से, जो दूषित भूपाल ।
जाता सीधा नर्क को, आख़िर 'चन्दनलाल' ॥

'मन्त्रीगण का मान्य हूं', जो समझे इनसान ।
सींग रहित वह बैल-सा, है 'चन्दन' नादान ॥

अन्न-दान, भू-दान हो, या 'चन्दन' गोदान ।
'अभयदान' ही एक है, सब में परम प्रधान ॥

है 'चन्दन' संसार में, जो कोई कुलवान ।
भक्षण करे अभक्ष्य न, निकलें चाहे प्रान ॥

बनता कारण कोप का, मूर्ख को व्याख्यान ।
विष-वर्द्धक 'चन्दन' कहा, पन्नग को पय-पान ॥

पूछे से 'चन्दन' कहो, जो हो श्रद्धावान ।
कहना श्रद्धाहीन को, है वन-रुदन समान ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थोड़ा धन भी विज्ञ न, कभी दिखाए खोल।
ऋषियों के भी देखकर, जाते हैं मन डोल॥

पशुओं, पुरुषों, प्राणियों, का है जो आधार।
पेड़ सार 'चन्दन' वही, बाक़ी तो भू-भार॥

जितना सहता कष्ट है, धन ख़ातिर इनसान।
सहे ज़रा भी धर्म-हित, हो जाए कल्याण॥

फूल खिला उद्यान में, लिये रूप-अभिमान।
'चन्दन' जाने मूढ़ न, दो दिन का महमान॥

नीच नरन को जानिये, जैसे विषधर सर्प।
'चन्दन झुकता है नहीं, उनके दिल का दर्प॥

'चन्दन' आशा-छोर का, जो जन करता त्याग।
सुप्त भाग्य भी एक दिन, उसका जाता जाग॥

हो हर्षित पर हानि लख, उल्टी दुर्जन - चाल।
ओला खेती गाल गल– जाता 'चन्दनलाल'॥

'चन्दन' हो जो पास में; मानवता हर तौर।
मानव-जीवन-सा नहीं, जीवन जग में और॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानव-तन पाकर किया, जिसने नहिं उत्थान ।
अय 'चन्दन' संसार में, उस-सा नहिं नादान ।।

'चन्दन' पढ़कर अज्ञ-कर, जो विष हरता प्राण ।
पड़ा प्राज्ञ के कर वही, देता जीवन - दान ।।

सत्य, सत्य है सर्वदा, अन्तर 'चन्दन' नहीं ।
सत्य पुराना या नया, होता है क्या कहीं ?

नाच-गान से, तान से, रीझें नहिं भगवान ।
'चन्दन' जीवन नेक पर, वह तो बस कुर्बान ।।

'चन्दन' बढ़ी जरूरतें, देंगी दुःख ज़रूर ।
बढ़ने दें न ज़रूरतें, जो हो सुख मंजूर ।।

भजता जिन भगवान जो, तजता 'चन्दन' प्राण ।
पुण्यवान इनसान वह, पाता स्वर्ग विमान ।।

घर में घर 'चन्दन' अगर, झगड़े का नित डर ।
बनवासा बेहतर मगर, घर में घर मत कर ।।

आने - जाने के लिये, जहाँ एक ही द्वार ।
भवन सुरक्षित है वही, 'चन्दन' सभी प्रकार ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छोटा जो ख़ुद को गिने, 'चन्दन' वही महान।
ओछा अपने आपको, समझे शैल समान।।

'चन्दन' भले असफलता, होवे शत-शत बार।
पुनः-पुनः कोशिश करो, मत बैठो मन मार।।

निर्मल मन हो आपका, चाहे बर्फ़ समान।
'चन्दन' निन्दा से कठिन, बचना जग में जान।।

कौन जगत में है हुआ, सब से श्रेष्ठ महान?
एक नहीं 'चन्दन' हुए, अनगिनती इन्सान।।

बड़े-बड़े भी मात हों, जिससे सब नर-नार।
'चन्दन' है वह श्रेष्ठ गुण, सब से सद्-व्यवहार।।

जो चाहे भगवान का, दर्शन तू अनमोल।
तो 'चन्दन' तू शीघ्र ही, मन की घुंडी खोल।।

देख-देख 'चन्दन' हुआ, मन ही मन हैरान।
ज्यों-ज्यों मानव वृद्ध हो, त्यों-त्यों लोभ जवान।।

बाहर बन्दे! ढूंढता, बन कर क्या नादान?
अन्तर आंखें खोल लख, है भीतर भगवान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बुरे काम का अन्त में, बहुत बुरा परिणाम ।
'चन्दन' भूल न कीजिये, बुरा कभी भी काम ।।

अय 'चन्दन' जब तक नहीं, तब मन बेईमान ।
तब तक नीयत साफ़ है, सबकी निश्चय जान ।।

कहते 'चन्दन' है घटा, मानव का अब मोल ।
समय सगाई के मगर, नयन देखिये खोल ।।

'चन्दन ! तू किस बात का, करता है अभिमान ?
रहे चढ़ी न नित्य ही, गुड्डी अय नादान !

संकट में इनसान का, सभी छोड़ते साथ ।
साहस 'चन्दन' मित्र जो, कभी न छोड़े हाथ ।।

अय 'चन्दन' लख लीजिये, अखिल विश्व दरम्यान ।
पराधीनता - सा नहीं, अन्य और अपमान ।।

धर्म-ध्यान से क्यों करे, रे नर ! टालमटाल ।
काल लखै त्रैकाल न, 'चन्दन' काल-अकाल ।।

रोके क्या आंधी उन्हें, रोके क्या तूफ़ान ।
जग-विजयी 'चन्दन' बने, दृढ़-प्रतिज्ञ इनसान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुनर्जन्म जो जीव का, करता है स्वीकार।
'आत्मोपासक' है वही, 'चन्दन' कहे पुकार॥

दौलत से इज्ज़त बड़ी, 'चन्दन' जग दरम्यान।
परम मर्म इसका मगर, कब जाने नादान॥

"हिंसा' जिसको कह रहे, सारे आगमकार।
'चन्दन' बन्धन है यही; यही नरक का द्वार॥

मोह-ग्रस्त साधक रहे, न इस न उस पार।
दुर्गति-दाता मोह को, 'चन्दन' शीघ्र निवार॥

बांट सकें जो और का, किसकी कहो मजाल।
अपना-अपना है सभी, सुख-दुख 'चन्दन लाल'॥

रहता है दिन-रात जो, काम - भोग आसक्त।
बन सकता है वह नहीं, 'चन्दन' प्रभु का भक्त॥

बाल जीव के संग से, जो हैं रहते दूर।
'चन्दन' पाते सुख वही, नर-नारी भरपूर॥

इच्छा पूरी कर गया, कोई भी क्या वीर ?
'चन्दन' चलनी में भला, कभी भरा है नीर ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अय 'चन्दन' मतिमान यह, साधक रक्खे याद।
करे साधना में कभी, किंचित नहीं प्रमाद॥

जगत-दुखों का ठीक जो, कर लेता है ज्ञान।
पाप-कर्म करता न वह, 'चन्दन' प्रज्ञावान॥

शान्ति, सरलता, सौम्यता, मुखड़े पर लहराय।
'चन्दन' जन सन्तुष्ट का, अंग-अंग मुस्काय॥

अय 'चन्दन' जो चाहता, अपना तू कल्याण।
जैसी अपनी आत्मा, वैसी सब की जान॥

ज़ोर लगाकर देखले, चाहे कितना कोय।
'चन्दन' चेतन जड़ न हो, जड़ नहिं चेतन होय॥

'चन्दन' की इस बात में, नहीं ज़रा भी फ़र्क।
जन्म-मरण से छूटता, मानव सदा सतर्क॥

कर्मों से ही जीव यह गया मुक्ति को भूल।
कर्मों का 'चन्दन' मगर, हिंसा ही है मूल॥

'चन्दन' सच्ची बात यह, कहते 'वीर' जिनेश।
अपना मन जो परखता, वह ही है परमेश॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो कोई 'चन्दन' यहाँ, करे असत्य प्रचार।
बार - बार जन्मे-मरे, नहिं पहुंचे भव-पार ॥

अन्तर तन का जानिये, अन्य न अन्तर जान।
कीड़ी, कुंजर का कहा, 'चन्दन', 'जीव' समान ॥

जितने भी संसार में, हैं 'चन्दन' नर-नार।
नहीं एक-से देखलो, सबके विविध विचार ॥

'चन्दन' पुरुष समर्थ जो, तजता विषय-विकार।
महा निर्जरा वह करे, पाए अविचल-द्वार ॥

शब्द पड़ें नहिं कान में, ऐसा कैसे होय।
राग-द्वेष उन पर मगर, करे न 'चन्दन' कोय ॥

नज़र पड़े नहिं रूप पर, ऐसा कैसे होय।
राग-द्वेष उस पर मगर, करे न 'चन्दन' कोय ॥

गन्ध पड़े नहिं नाक में, ऐसा कैसे होय।
राग-द्वेष उस पर मगर, करे न 'चन्दन' कोय ॥

रस रसना पर नहिं पड़े, ऐसा कैसे होय।
राग-द्वेष उस पर मगर, करे न 'चन्दन' कोय ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वसंन आदि का स्पर्श जो, अपने तन से होय ।
राग-द्वेष उस पर कभी, करे न 'चन्दन' कोय ।।

परम अहिंसा धर्म में, मन जो सदा रमाय ।
उसके 'चन्दन' चरण में, सुर भी शीश झुकाय ।।

कोटि कोटि जो जीव का, करता है संहार ।
पर उससे भी है अधिक, मुनि-हत्या-अघ-भार ।।

सब पर ही समभाव को, जो कोई बरताय ।
'चन्दन' ऐसा साधु ही, 'श्रमण' सदा कहलाय ।।

धन, बल, विद्या, रूप से, उच्च न हो इनसान ।
पावन जिसका मन सदा, 'चन्दन' वही महान ।।

नहीं अनादर कीजिये, कभी किसी का भूल ।
'चन्दन' सदा बनाइये, अपना प्रेम असूल ।।

मृषावाद को निन्दते, सभी जगत के लोग ।
अतः किसी भी हाल में, झूठ न कहना योग ।।

पाप-नींव पर जो खड़ा, किया गया हो राज ।
'चन्दन' उसका शीघ्र ही, होय नष्ट सब साज ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुण्यवान, गुणवान की, यह 'चन्दन' पहचान।
विनयवान बनता चले, ज्यों-ज्यों पाता ज्ञान ॥

मनों बिगाड़े दूध ज्यों, एक बून्द भी ज़हर।
'चन्दन' छोटा झूठ भी, त्यों ढाता है क़हर ॥

जो कोई नर भूल भी, कर्म करेगा नीच।
चुभता 'चन्दन' वह रहे, जीवन-भर उर बीच ॥

पृष्ठ-मांस भक्षण-सदृश, चुग़ली 'चन्दन' जान।
जो नर इससे बच सके, वह ऋषि-तुल्य महान ॥

झड़ जाते ज्यों पात सब, खड़िया-से हो पीत।
नर-जीवन की भी वही, है 'चन्दन' यह रीत ॥

महा उदधि को तैर क्यों, थका किनारे आन।
'चन्दन' परले पार का, कर जल्दी सामान ॥

'चन्दन' कुन्दन बदन क्या, देख-देख गर्वाय।
देख जरा के रूप को, रूप हवा हो जाय ॥

जिनवाणी का सार है, 'चन्दन' सद्-आचार।
इसका ही आधार ले, कर भव-सागर पार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुप्त किया विष-पान भी, देता जैसे मार ।
गुप्त पाप भी मारता, 'चन्दन' उसी प्रकार ।।

धर्म-शास्त्र कितने पढ़े, सदाचार से हीन ।
उसकी अय 'चन्दन' सभी, करनी तेरह-तीन ।।

ज्यों-ज्यों बढ़ते चित्त में, 'चन्दन' चार कषाय ।
त्यों-त्यों तारक धर्म भी, घटता-घटता जाय ।।

मुक्ति-मुक्ति सब ही कहें, नहीं मुक्ति का ज्ञान ।
सदाचार 'चन्दन' प्रथम, मुक्तिपुरी - सोपान ।।

दुर्विनीत को व्यर्थ है, सदाचार की सीख ।
कर्ण-कटे को क्या कहो, कुण्डल देना ठीक ?

कान खोलकर ध्यान से, सुनें मनीषी लोग ।
'चन्दन' है वह द्रव्य-श्रुत, नहिं जिसमें उपयोग ।।

अपना ही जिसको नहीं, अय 'चन्दन' कुछ ज्ञान ।
जानेगा वह और को, कहिये क्या नादान ?

मानव का कर्त्तव्य है, मानव बने महान ।
वरना अय 'चन्दन' भला, उससे तो हैवान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल्दी या कुछ देर से, हैं फल देते पाप।
निष्फल जाते वे नहीं, कहता 'चन्दन' साफ़॥

'चन्दन' गुण बिन सन्त नहिं, भले मांग कर खाय।
पीतल, पीतल ही रहे, चाहे स्वर्ण मढ़ाय॥

सोए को क्या है पता, लगी भवन में आग।
'चन्दन' सच्चा बन्धु वह, जो झट कहदे जाग॥

शान्ति मलिन मन को नहीं, शास्त्र पठन से मीत!
मैले कपड़े पर कहां, चढ़ता रंग पुनीत॥

कभी न सद्गुण ठहरते, विनय हीन के पास॥
'चन्दन' फूटे कलश में, क्या जल-स्थिति की आस?

नहीं किसी का, स्वयं का, मानो सभी क़सूर।
'चन्दन' सदा उद्दण्ड से, सब ही रहते दूर॥

ढूंढ-ढूंढ कर और को, गया स्वयं को भूल।
ढूंढ स्वयं को जो मिटे, 'चन्दन' कष्ट समूल॥

'चन्दन' दिया अपात्र को, ज्ञान बहुत दे कष्ट।
कच्चे घट का जल करे, घट को ही ज्यों नष्ट॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' मोह मिटते सभी, अन्य कर्म हों दूर।
सूखी जड़ न हो हरी, यत्न करो भरपूर॥

'चन्दन' पढ़ने से नहीं, पण्डित हो इनसान।
बचे पाप, पाखण्ड से, 'पण्डित' उसको जान॥

'चन्दन' यह ही कह गये, महावीर भगवान।
नष्ट पाप जो सब करे, वही 'तपस्या' जान॥

'चन्दन' चिन्तन जीव यह, जिससे करता नित्त।
उसको ही ज्ञानी, गुणी, कहते हैं सब 'चित्त'॥

मन-मतंग वश में अगर, करने का अरमान।
'चन्दन' लीजे हाथ में, अद्भुत अंकुश ज्ञान॥

मन-नृप मरते मर गई, इन्द्रियगण की फ़ौज।
'चन्दन' चेतन तब करे, मुक्तिपुरी में मौज॥

मरते कायर, धीर भी, सदा न रहता कोय।
'चन्दन' मरिये इस तरह, फिर-फिर मरण न होय॥

झूठ बोलने में नहीं, जिसको कुछ भी शर्म।
उसको अथ 'चन्दन' नहीं, कोई कर्म अकर्म॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल्दी - जल्दी आदमी, होता नहिं बीमार।
गुणकारी है बहुत ही, 'चन्दन' अल्पाहार ॥

जो भी करना कीजिये, भली तरह से काम।
बुरी तरह से काम का, कभी न लीजे नाम ॥

छोड़ सु-संग, कुसंग जो, मूढ़ सदा अपनाय।
कृष्ण पक्ष के चांद सा, 'चन्दन' घटता जाय ॥

'चन्दन' सज्जन गुण कभी, कहें न अपने आप।
करे प्रकट आचरण से, उनका पुण्य - प्रताप ॥

धन के ही क्यों ध्यान में, घड़ी-घड़ी लग जाय।
धन से अय 'चन्दन' उमर, बड़ी न कभी कहाय ॥

वर्तमान जिस जीव ने, 'चन्दन' लिया सुधार।
भूत-भविष्य उसके स्वयं, सुधरें सभी प्रकार ॥

देत दोष निर्दोष को, जो 'चन्दन' नादान।
उसी दोष से एक दिन, पाता वह अपमान ॥

अय 'चन्दन' अपराध को, करले जो स्वीकार।
उसे क्षमा न दे उसे, लाख-लाख धिक्कार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुनिया से यदि चाहते, भले सभी व्यवहार।
भले स्वयं चन्दन बनो, करो सदा उपकार॥

कभी न करना भूल भी, कोई खोटा काम।
यह भी अच्छा काम है, 'चन्दन' सुनो तमाम॥

औरों के आराम का, जिसे न 'चन्दन' ध्यान।
कैसा यात्री वह अरे !, कैसा वह इनसान॥

गुणियों की गणना समय, गिना न जाए जौन।
'चन्दन' जीवित आदमी, उसको कहता कौन ?

धर्म सिवा रक्षक नहीं, अखिल विश्व में और।
अतः धर्म अपनाइये, अय 'चन्दन' हर ठौर॥

'चन्दन' जिसको 'आत्मा', कहते हैं सब सन्त।
ज्ञान स्वरूप अरूप है, नित्य अनादि अनन्त॥

पर्वतराज सुमेरु युत, योजन लक्ष प्रमाण।
मध्य लोक के मध्य में, 'जम्बू-द्वीप' महान॥

रहे लड़ाई नित्य ही, जिस घर 'चन्दनलाल'।
जीना जो चाहो उसे, तज दीजे तत्काल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वस्त्र बिगाड़ें रंग से, राख गुलाल उछाल।
कहें न 'हो-ली' ख़ाक है, 'होली' 'चन्दनलाल'॥

'चन्दन' चाहें वसन सब, चमकीले पुरजोर।
ख़बर मगर क्या आपको, नज़र करें कमज़ोर॥

लैंटर खुलने के समय, कभी न जाओ पास।
अय 'चन्दन' कितने मरे, तज जीवन की आस॥

नहीं वेदना भूख से, बढ़ कर कोई अन्य।
भूख जिन्होंने जीतली, 'चन्दन' जन वे धन्य!

स्कूटर पर 'चन्दन' बहुत, मुश्किल है कण्ट्रोल।
लेकर मुफ्त जहेज़ में, लो मत संकट मोल॥

गोप सके न गुह्य न, मत्सर–हरण समर्थ।
'चन्दन' धर्म–विहीन नर, श्वान-पुच्छ सम व्यर्थ॥

सार पठन का है यही, करो समझ सब काम।
'चन्दन' पढ़ना व्यर्थ हो, बनकर 'तोताराम'॥

नहीं क्रिया में उतरता, जो है कोरा ज्ञान।
तीन:काल में भी करे, 'चन्दन' नहिं कल्याण॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

औरों को उपदेश दे, करे अमल नहिं आप ।
'चन्दन' उसको जानिये, ठग्गों का भी बाप ।।

'चन्दन' कोई कुटिल को, कैसे मुंह लगाय ।
खारे सागर निकट क्यों, प्यासी चिड़िया जाय ।।

जैसे सुमन सुगन्ध से, अद्भुत शोभा पाय ।
सभी गुणों को नम्रता, अय 'चन्दन' चमकाय ।।

कितनेही गुण क्यों न हों, संग अगर हो गर्व ।
विष-मिश्रित पक्वान्न ज्यों, 'चन्दन' निष्फल सर्व ।।

'चन्दन' जिसके कोष सब, थे कुबेर सम सर्व ।
कहिये उस लंकेश का, रहा कहीं क्या गर्व ?

कौरव सौ थे इसलिये, बल का था अभिमान ।
'चन्दन' मगर बताइये, उनका कहाँ निशान ?

भूल गया था मौत को, वह अभिमानी कंस ।
कहो कहीं 'चन्दन' रहा, उसका बाक़ी वंश ?

'चन्दन' इस संसार को, देखो नज़र पसार ।
मानी से नफ़रत करे, नम्र नरन से प्यार ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो ऐश्वर्यवान या, गुणी, बली, विद्वान।
पर, चरित्र से हीन जो, कौड़ी का इनसान ॥

आत्म-बोध जिसको हुआ, करे कभी नहिं पाप।
'चन्दन' होगा अन्यथा, भारी पश्चाताप ॥

पाप क्रोध है, काम है, पाप कपट है क्लेश।
'चन्दन' भारी पाप है, श्रेष्ठ जनों से द्वेष ॥

भला अकेले का सफ़र, अय 'चन्दन' हर ढंग।
मूर्ख मनुज का पर कभी, भला न होता संग ॥

'चन्दन' बार हज़ार भी, है कहना बेकार।
प्रामाणिकता का पता, देता है व्यवहार ॥

धर्म-कर्म को भूल जो, कोई करता पाप।
'चन्दन' दोनों लोक में, पाय शोक, सन्ताप ॥

भूख, जरा. इच्छा यही, तीन प्रथम थे रोग।
जब से पशु-वध है बढ़ा, 'चन्दन' रोगी लोग ॥

करे और को किस तरह, पापी जन निष्पाप।
तारे कैसे अन्य को, डूब रहा जो आप।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुछ तो नर ! सत्कर्म कर, जीवन सफल बनाय।
जिससे 'चन्दन' अन्त में, तू न अरे ! पछताय ।।

रहो किनारे जगत से, समझ जगत की चाल।
फंसे न जैसे जाल में, मारुत 'चन्दन लाल' ।।

आंखें देखें बहुत कुछ, सुनें बहुत कुछ कान।
पर 'चन्दन' मतिमान वह, मौन रहे हर स्थान ।।

बहुत समय के साथ से, घट जाता है प्यार।
अतः देर तक मत बनो, कभी किसी पर भार ।।

जिसके नीचे हो किया, अय 'चन्दन' विश्राम।
उसी विटप को तोड़ना, महामूढ़ का काम ।।

कहते हैं, करते नहीं, जो 'चन्दन' नादान।
दुनिया भर के निन्दते; उन्हें सभी विद्वान ।।

जो चाहो 'चन्दन' मिले, अच्छा ही परिणाम।
तो जल्दी में कीजिए, कभी न कोई काम ।।

जिससे 'चन्दन' बहुत हो, पीछे पश्चाताप।
कोई ऐसा काम तो, करें कभी नहिं आप ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काम करें जो लोग सब, 'चन्दन' सोच-विचार।
उनका ही संसार में, होता यश विस्तार॥

शोभे लालों से लदा– ऐसा नहीं नृपाल।
जैसे शोभें शील से, मानव 'चन्दन लाल'॥

बने बाल-सा सरल जो, तज विद्या का मान।
'चन्दन' ऐसा पुरुष ही, 'आत्मज्ञान की खान॥

बेटा ऐसा चाहिये, जिसको कहै जहान।
'चन्दन' 'दादा-बाप से, है आगे गुणवान॥

कर्म करे जो शुभ सदा, रहे अशुभ से दूर।
'चन्दन' सद्गति-स्वर्गगति, उसको मिले ज़रूर॥

'चन्दन' चले न संग धन, मात-पिता, सुत, भ्रात।
धर्म एक सच्चा सुहृद, अन्त निभाता साथ॥

धर्म रहे जिस पक्ष में, अन्त उसी की जीत।
'चन्दन' काल अनादि की, है यह पक्की रीत॥

इज्ज़त से बढ़कर नहीं, दौलत कोई अन्य।
इज्ज़त वाला आदमी, अय 'चन्दन' है धन्य॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूर करे इनसान के, सारे जो दुख दोष।
'चन्दन' उसका नाम शुभ, है 'मन का सन्तोष'॥

धन को ही ईमान औ— समझे जो भगवान।
अय 'चन्दन' नहिं दूसरा, उस-सा है नादान॥

थक करके ही बीच में, बैठ नहीं जो जाय।
जो भी चाहे चीज़ वह, 'चन्दन' आख़िर पाय॥

रसना का ही जीतना, सब से कठिन कहाय।
'चन्दन' इसकी जीत से, सब कुछ जीता जाय॥

अमल बिना भव फन्द से, 'चन्दन' मुक्ति न होय।
बिना किये जल-पान क्या? प्यास बुझाता कोय?

अद्भुत और महान जो, वस्तु जगत दरम्यान।
'चन्दन' कहते हैं सभी, उसको ही 'इनसान'।

'चन्दन' अच्छे काम को, करें शीघ्र ही आप।
अवसर खोनें पर पड़े, करना पश्चाताप॥

जग-जीवों से वैर जो, रखता 'चन्दन लाल'।
पा सकता नहिं शान्ति-सुख, वह जन तीनों काल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोशिश कितनी कीजिये, चाहे 'चन्दन लाल'।
पता न धीरज का लगे, पर बिन आपद्-काल ॥

जो चाहो 'चन्दन' बने, शान्ति-धाम संसार।
विश्व-प्रेम में पलटिये, जन्म-देश का प्यार ॥

कितने ऊंचे वंश का, हो कोई नर-नार।
सदाचार बिन पा सके, नहिं 'चन्दन' सत्कार ॥

'चन्दन' सब ज्ञानी गुणी, कहते हैं यह सत्त।
'हिंसा' है वह जीव-वध, जिसमें योग-प्रमत्त ॥

यथातथ्य से उलट जब, तन, मन, वच बन जाय।
अय 'चन्दन' सच जानिये, 'झूठ' वही कहलाय ॥

तोल-माप को कम करे, करे मिलावट आम।
बिन आज्ञा हर चीज़ ले, 'चोरी उसका नाम ॥

दुराचार से प्यार हो, सदाचार में ढील।
दुर्गति-दुख-दाता उसे, 'चन्दन' कहें 'कुशील' ॥

'चन्दन' ममता भाव को, जो भी चीज़ बढ़ाय।
चाहे जड़ हो, जीव हो, 'परिग्रह' वह कहलाय ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीक्ष्णता तलवार-सी, तन-मन सब बेचैन ।
'क्रोध' उसे 'चन्दन' कहें, अरुण वर्ण द्वय नैन ॥

सिवा स्वयं के न दिखे, कोई भी गुणवन्त ।
'चन्दन' उसको 'मान' हैं, कहते सारे सन्त ॥

'चन्दन' कहना और कुछ, करना पर कुछ और ।
'माया' नामक पाप है, ठग विद्या-सिर मौर ॥

किंचित भी सन्तोष नहिं, निन्दित कर्म कमाय ।
भव-भव में भटकाय जो, 'चन्दन' 'लोभ' कहाय ॥

दोषी जन जिससे दिखें, अय 'चन्दन' गुणधाम ।
असर सचाई का नहीं, 'राग' उसी का नाम ॥

गुण भी जिससे दोष ही, 'चन्दन' दिखें हमेश ।
जन्म-जन्म दे दर्द-दुख, पाप वही है 'द्वेष' ॥

नमक नीर में जिस तरह, 'चन्दन' घुल-मिल जाय ।
वैसे सब सुख घोल दे, 'कलह' वही कहलाय ॥

जिन दोषों का है नहीं, कोई नाम-निशान ।
उसका ही आरोप है, 'चन्दन' 'अभ्याख्यान' ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हों, न हों कहता फिरे, दोष पीठ पश्चात् ।
'चन्दन' 'चुग़ली' पाप है, विश्व बीच विख्यात ॥

चाहे निन्दे सामने, चाहे निन्दे बाद ।
पाप उसी को है कहा, 'चन्दन' 'परपरिवाद' ॥

भली चीज़ पा हर्ष हो, शोक बुरी को पाय ।
अय 'चन्दन' वह पाप ही, 'रति-अरति' कहलाय ॥

'चन्दन' माया युक्त हो, कहना झूठी बात ।
दुखदायक 'मायामृषा', पाप वही विख्यात ॥

'चन्दन' जिससे मुक्ति औ - होता नहिं कैवल्य ।
श्रद्धा का वैपरीत्य वह, मिथ्यादर्शनशल्य' ॥

आए नंगे ही यहां, लाए नहिं कुछ साथ ।
'चन्दन' चलते वक्त भी, खाली होंगे हाथ ॥

'चन्दन' जन धर्मान्ध जो, करे न धर्म लगार ।
मगर धर्म के नाम पर, मरने को तैयार ॥

'चन्दन' नर नादान को, कहो कौन समझाय ।
कर ग़लती से ग़लतियां, फिर पीछे पछताय ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिस में हो हरएक ही, भूपों का भी भूप।
जीवन का सबसे अधिक, पावन 'बचपन रूप' ॥

'चन्दन' फ़ैशन क्यों करे, हो जिसका मन शुद्ध।
फ़ैशन सारे जानिये, मन की शुद्धि-विरुद्ध ॥

नहिं नेता जी, नागरिक— सच्चे हैं दरकार।
जिससे अय 'चन्दन' बने, स्वर्ग तुल्य संसार ॥

सच्चे सुखका चाहिये, जो 'चन्दन' भण्डार।
बाल, वृद्ध पर कीजिये, करुणा की बौछार ॥

चाहे दुनियादार है, चाहे है वह सन्त।
पाता पर सद्गति सदा, 'चन्दन' करुणावन्त ॥

'चन्दन' जैसा काम हो, हो वैसा परिणाम।
इमली से इमली मिले, मिले आम से आम ॥

पलटे से पलटे नहीं, अय 'चन्दन' तक़दीर।
कर्म कमाए भोगते, राजा-रंक - फ़कीर ॥

'चन्दन' चन्दा क्यों बने, जब धन्धा अन्याय।
बन्दा अन्धा, स्वार्थमय, गन्दा पथ अपनाय ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मद, माया में रमण कर, मन! क्यों करता पाप।
अगर रमे भगवान में, मिटें सकल सन्ताप ॥

ज़रा-ज़रा सी बात पर, लड़ मरते नादान।
पर, समता से काम लें, 'चन्दन' चतुर-सुजान ॥

किसी जीव का जीव सुख, अगर करेगा नष्ट।
'चन्दन' कहता स्पष्ट है, सदा सहेगा कष्ट ॥

औरों के दुख-दर्द को, अपना समझे दर्द।
चले नीति पर, न्याय पर, 'चन्दन' सच्चा मर्द ॥

'चन्दन' गरिमा गुणन को, और सभीं छल-छन्द।
पूनम-चन्दा छोड़ सब, देखें द्वितिया-चन्द ॥

रहा फूल ! क्या फूल तू, होना इक दिन धूल।
'चन्दन' काल अनादिका, पक्का अटल असूल ॥

पुण्य, पाप, परलोक औ– जो माने भगवान।
'आस्तिक'जन सच्चा उसे, अय 'चन्दन' तू जान ॥

आस्तिक जन बन निर्दयी, करता है यदि पाप।
'चन्दन' वह जन तो सदा, है नास्तिक का बाप ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कामी का सुमरन किये, उपजत मन में काम।
पावनता का हो उदय, सुमरे पावन नाम॥

नर-नारी हर एक पर, चढ़ता वैसा रंग।
जैसा भी उसको मिले, 'चन्दन' संग कु-संग॥

तजा न 'चन्दन' लोभ-छल, तजे न विषय विकार।
पढ़-पढ़ प्यारे! पोथियां, कौन निकाला सार?

'चन्दन' देखो श्वान को, कैसा है नादान।
अपना भाई देख कर, लेना चाहे प्राण॥

'चन्दन' चाहे काग में, रूप, रंग नहिं बोल।
जाति-प्रेम पर देखिये, कैसा है अनमोल॥

निश-दिन सिनमा रेडियो, फैंक रहे जो लहर।
'चन्दन' कहता है उसे, मारक मीठा ज़हर॥

बाना, खाना देश का, गया भाड़ में शुद्ध।
फ़ैशन, मदिरा-मांस ने, भ्रष्ट बनाई बुद्ध॥

अमल बिना सब व्यर्थ हैं, पढ़े, पढ़ाए ग्रन्थ।
पहुंचे 'चन्दन' किस तरह, चले न जब तक पन्थ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो चाहो आनन्द के, खिलें हमेशा फूल।
आवश्यकता से अधिक, करो न संग्रह भूल॥

एक तरह है जगत यह, 'चन्दन' साफ़ सलेट।
स्वार्थ साधा नाम लिख, लिखा दिया फिर मेट॥

चाहे ठण्डक माघ की, चाहे गर्मी जेठ।
स्वासों की सरिता बहे, जीवन के पुल हेठ॥

गुणग्राही गुण का नहीं, केवल करे बखान।
'चन्दन' अपनाकर उसे, बने स्वयं गुणवान॥

उस जैसा दुखिया नहीं, 'चन्दन' जग दरम्यान।
करता तो कुछ भी नहीं, बड़े–बड़े अरमान॥

पवन कदाचित पकड़लें, नभ में करदें छेद।
क्षण भी जीवन न बढ़े, 'चन्दन' कहे स-खेद॥

जल-भंवरों को गांठ भी, कोई कभी लगाय।
संभव लेकिन यह नहीं, एक श्वास बढ़ जाय॥

मेटेंगे जो अन्य को, मिट जायेंगे आप।
जाता निष्फल है नहीं, 'चन्दन' कोई पाप॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुख का नहिं अनुभव करे, जो थोड़ा धन पाय।
'चन्दन' ज्यादा धन उसे, कैसे सुखी बनाय ?

कार्याकार्य, भय, अभय, वा, बन्ध, मोक्ष का ज्ञान।
जिससे हो 'चन्दन' सही, 'सात्विक' प्रज्ञा जान ।।

माने धर्म-अधर्म को, और धर्म को पाप।
उसको 'चन्दन' 'तामसी', प्रज्ञा समझें आप ।।

प्रायः पढ़ना तो यहाँ, जाने है हर कोय।
पर पढ़ना क्या चाहिये? पता किसी को होय ।।

छोटा हो चाहे बड़ा, करो सभी से प्रेम।
अय 'चन्दन' बिन प्रेम के, कहीं कुशल नहिं क्षेम ।।

अय 'चन्दन' यह सत्य हो, सब कहते विद्वान।
'जितना छोटा आदमी, उतना मोटा मान' ।।

अन्तर 'चन्दन' है नहीं, मनुज-मनुज के बीच।
'उत्तम' उत्तम कर्म से, नीच कर्म से 'नीच' ।।

इच्छाएं जो जीतता, वही जीतता 'चित्त'।
इच्छाओं का जीतना, बड़ा कठिन है मित्त !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करें घृणा दुर्गुणन से, दुर्गुणियों से नाहिं ।
एक तरह का जीव है, 'चन्दन' सब के मांहि ॥

यह स्वभाव है मनुज का, करता 'चन्दन' भूल ।
उत्तम जन ही पर उसे, करता सदा क़बूल ॥

धीरज से बढ़कर नहीं, दौलत जग में श्रौर ।
'चन्दन' यह रक्षा करे, जन को ठौर-कुठौर ॥

कर सकती जो कार्य है, 'चन्दन' मधु मुस्कान ।
कर सकती हरगिज़ नहीं, उसको तेज कृपान ॥

'चन्दन' गिरना क्या बुरा, गिर कर जो उठ जाय ।
गिरे श्रौर नहिं फिर उठे, गिरना निन्द्य कहाय ॥

'चन्दन' करता कौन न, बहुतों से हो भूल ।
पुनः-पुनः पर भूल वह, करता नामाकूल ॥

गीदड़ सम सौ साल भी, जीने का क्या श्रर्थ ?
उत्तम जीना एक दिन, बन कर सिंह समर्थ ॥

वही श्रात्मा शुद्ध है, जिसका है मन शुद्ध ।
'चन्दन' मगर श्रशुद्ध वह, उपजी जिसे कु-बुद्ध ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाहर के कुछ और तो, भीतर के कुछ और।
दुर्जन के 'चन्दन' लखो, बगुले जैसे तौर॥

नहीं काम की अधिकता, बनती सिर का भार।
अनियमितता ही काम की, 'चन्दन' डाले मार॥

'चन्दन' मन ही वस्त्र है, रंग पुण्य औ' पाप।
सोच-समझ कर रंग ले, हो नहिं पश्चाताप॥

करने में दौलत जमा, खो मत उम्र सुजान!
'चन्दन' धन है ठीकरी, जीवन रतन समान॥

दया-भावना से करे, शासन जो भूपाल।
रहे हमेशा फूलता, फलता 'चन्दन लाल'॥

लोग लिफ़ाफ़ा बन चले, अन्दर पोलमपोल।
इसीलिए 'चन्दन' बजें, दुराचार के ढोल॥

दुरुपयोग जिसका करें, 'चन्दन' जन नादान।
कहते सब ज्ञानी-गुणी, धन वह ज़हर समान॥

'लाओ पैसा बाप से, वरना जाओ भाग।
पत्नी को दुख दे रहे, यह कह काले नाग॥

एक बा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लालच वश जो ले रहे, प्रिय पत्नी के प्राण।
उन से बढ़ 'चन्दन' कहो, कौन और शैतान ?

'चन्दन' चमकाना अगर, अखिल विश्व में नाम।
करें कभी नहिं भूल कर, कोई घटिया काम॥

धर्म-धर्म रटते रहें, कितना चाहे आप।
धर्म किये बिन पर कभी, कटें न 'चन्दन' पाप॥

जिससे हो नहिं भूल भी, आपस में मुठभेड़।
पंचम स्वर वह प्रेम का, अय 'चन्दन' दो छेड़॥

जीवन स्वप्न समान है, क्षण का नहिं विश्वास।
बचते रहिये पाप से, अय 'चन्दन' हर श्वास॥

वन, पर्वत, नदियां, नगर, 'चन्दन' ढूंढे खूब।
ढूंढा अन्तर नहिं जहाँ, है बैठा महबूब॥

'चन्दन' जिस रस-पान से, बने भक्त भगवान।
बड़े प्रेम से—प्यार से, करें भक्ति-रस-पान॥

कड़छी चिकनी हो न ज्यों, घृत में रह सौ साल।
करें अमल न बहुत त्यों, श्रोता 'चन्दन लाल'॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभी बना फिर नहिं बने, अय 'चन्दन' तक़दीर ।
आग लगे खोदे कुआं, कैसे निकले नीर ?

'चन्दन' अरे मलाह! क्यों, नयनन भरा खुमार ।
अभी नाव मंझधार है, संभल पकड़ पतवार ॥

पाता है जन जागता, सोता सब कुछ खोय ।
'चन्दन' मंज़िल दूर है, राही ! क्यों तू सोय ॥

तुझको राही ! राह में, बहुत मिलेंगे फूल ।
बचना उनसे इस तरह, जैसे तीखे शूल ॥

छल-छन्दों से जोड़ता, जिसको 'चन्दन लाल' ।
मुंदते ही बस नयन द्वय, सभी पराया माल ॥

धर्म-कर्म कर लीजिये, जब तक देह समर्थ ।
पीछे अय 'चन्दन' मगर, है पछताना व्यर्थ ॥

'चन्दन' सुख दो और को, जो हो सुख मंजूर ।
मिलते हैं अंगूर ही, बीज बेल अंगूर ॥

सिर पर धर अमृत घड़ा, अमर हुआ नहिं कोय ।
शास्त्र-श्रवण त्यों अमल बिन, 'चन्दन' निष्फल होय ॥

एक बा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज़ीवन उसका सफल है, जिसे धर्म से प्यार।
अय 'चन्दन' है धर्म बिन, मानव भूतल-भार ॥

बहुत दुःख, सुख अल्पतर, करो भूल नहिं प्यार।
छलिये की छाया सदृश, 'चन्दन' विषय-विकार ॥

धनिकों के संकेत पर, नाच रहा संसार।
कौन ग़रीबों की सुने, 'चन्दन' चीख-पुकार ॥

विद्या-धन-संयुक्त भी, दीजे दुर्जन त्याग।
मणियों से भी युक्त क्या, नहीं भयंकर नाग ?

घिस जाती है एक दिन, लोहे की भी मेख।
बिन भोगे पर नहिं मिटें, 'चन्दन' क़िस्मत-रेख ॥

'चन्दन' विरला ही बचा, सेवक सब संसार।
रिश्वतदेवो ! आपकी, महिमा अपरम्पार ॥

कभी यहां गोपाल थे, घर-घर माखन-दूध।
अब तो उनकी याद भी, अय 'चन्दन' बेसूद ॥

भारत में गोपाल कम, अब हैं 'चन्दन लाल'।
ज्यादा सूअरपाल या— कुत्ते-बिल्ली पाल ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो करना कर लीजिये, पहले ही कल्याण।
'चन्दन' होगा कुछ नहीं, अन्त चले जब प्राण॥

बुद्धिहीन को व्यर्थ है, शास्त्र-ज्ञान - भण्डार।
अन्धे को 'चन्दन' यथा, दर्पण है बेकार॥

कर सकते वे गुण नहीं, पैदा अपने बीच।
औरों का यश देख यों, 'चन्दन' जलते नीच॥

काटा चन्दन भी नहीं, बने गन्ध से हीन।
निर्धनता में भी तजे, सज्जनता न कुलीन॥

दुखिया-दीन-अनाथ पर, होकर करुणावान।
संकट हरने का सदा, रखना 'चन्दन' ध्यान॥

चंचलता 'चन्दन' सदा, हलकापन प्रगटाय।
धन्य पुरुष गम्भीरता, जिसमें पाई जाय॥

सेवा से मेवा मिले, अगर करे मन लाय।
'चन्दन' सेवा वृद्ध की, कभी न निष्फल जाय॥

जो पाना संसार से, प्यार और सत्कार।
लोक-सुधारक बाद बन, आपा प्रथम सुधार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करता तो हर एक है, सद्गुण की तारीफ़।
बनता पर वह आप नहिं, 'चन्दन' ज़रा शरीफ़॥

बूंद-बूंद से ज्यों बनें, 'चन्दन' नदी महान।
अक्षर-अक्षर के पढ़े, हो मानव विद्वान॥

सरलरूप भगवान का, 'चन्दन' कोमल फूल।
पांच वर्ष तक ताड़िये, बच्चों को नहिं भूल॥

सुमन-सुगन्धित-युत विटप, इक भी वन महकाय।
अच्छा बेटा वंश त्यों, अय 'चन्दन' चमकाय॥

रजनी जैसे चन्द्र से, शोभा भारी पाय।
'चन्दन' एक सपूत से, सारा वंश सुहाय॥

इक भी जलते पेड़ से, ज्यों जंगल जल जाय।
'चन्दन' एक कपूत त्यों, सारा वंश मिटाय॥

'चन्दन' आंखें खोलकर, देखो दुनिया आज।
अधिक धनी जो पुरुष हैं, अधिक वही मोहताज॥

'चन्दन' जो भी जगत में, बने शान्ति से काम।
उस-सा कोई दूसरा, नहीं काम अभिराम॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहाँ लाभ हो वह कहें, 'चन्दन' देख प्रसंग।
श्वेत वस्त्र पर ही चढ़े, जैसे पक्का रंग॥

द्वेषी से तो दूर है, पर प्रेमी के पास।
अय 'चन्दन' भगवान की, घट में करो तलाश॥

गुण ग्राहक माना गया, मानव गुणी महान।
'चन्दन' सबसे सर्वदा, पाता वह सम्मान॥

अक़लमन्द है बोलता, हो जब मतलब ख़ास।
व्यर्थ बोलने को सभी, हैं कहते बकवास॥

मन के लड्डू फोड़ कर, काम बने नहिं कोय।
'चन्दन' सतत प्रयास से, सदा सफलता होय॥

'चन्दन' नित्य प्रसन्न जो, रहते हैं नर-नार।
उनके सदा दिमाग़ में, आते नये विचार॥

'चन्दन' सुख लख और का, जलते जड़मति लोग।
जिसका कहीं इलाज नहिं, बुरा-डाह का रोग॥

खुश रखने का सभी को, यत्न करे जो कोय।
खुश उससे 'चन्दन' कभी, कोई भी नहिं होय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीव दया से नहिं बड़ा, धर्म-पुण्य रे जीव !
जीव दया से ही मिले, 'चन्दन' प्यारा पीव ।।

जैसे बट के बीज में, बट का पेड़ विशाल ।
ऐसे ही हर जीव में, ईश्वर 'चन्दन लाल' ।।

दावानल जल से बुझे, अगर कभी लग जाय ।
बुझे न 'चन्दन' मन-अनल, जल सागर का पाय ।।

'चन्दन' ज्वाला जठर की, दो रोटी से जाय ।
भरे न भूखा मन मगर, लाखों मन भी खाय ।।

'चन्दन' इस संसार में, गए अनेक ठगाय ।
लेकिन ज्ञानी जन गए, अपना आप बचाय ।।

जिसके गुण जाने न जो, निंदत है दिन-रात ।
गजमुक्ता तज भीलनी, लेती गुंजा-पांत ।।

आवश्यकता से अधिक, लेना समझें दोष ।
'चन्दन' उसका नाम है, सुख-सागर 'सन्तोष' ।।

'चन्दन' देखो आ गया, कैसा समय खराब ।
गए गगन में कूप से, मंहगाई के भाव ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवन में नहिं कठिन कुछ, सब कुछ है आसान।
एक बात 'चन्दन' कठिन, आत्म-तत्त्व का ज्ञान॥

हो सकते हैं दूर सब, दुनिया भर के पाप।
सच्चे दिल से जो करे, 'चन्दन' पश्चाताप॥

कांटों की बाड़ी जगत, संभल-संभल रख पैर।
वरना विष बन जायगी, पगले ! तेरी सैर॥

जिसे 'शान्त जीवन' कहें, अक़लमन्द इनसान।
उससे अच्छी चीज़ नहिं, और जगत दरम्यान॥

तृष्णा का है जीतना, अय 'चन्दन' दुश्वार।
तृष्णा जिसने जीत ली, जीत लिया संसार॥

'चन्दन' चाहे आंख का, है मिलना आसान।
मिलना सम्यग्दृष्टि का, मुश्किल मगर महान॥

लो, बतलाऊं आपको, सुनें ध्यान से आप।
मन में जो खटके वही, अय 'चन्दन' है 'पाप'॥

टूटे छप्पर में घुसे, ज्यों 'चन्दन' बरसात।
ग़ाफ़िल मन में पाप त्यों, हैं घुसते दिन-रात॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो चाहो कि आपकी, करें बड़ाई लोग।
मुख से अपने आपकी, नहिं बड़ाई योग॥

कमल कहां दिनकर कहां, जलधर कहां मयूर ?
जो जिसके मन में बसे, कैसा 'चन्दन' दूर ?

अपने पर शासन नहीं, रखता जो इनसान।
दुनिया में नहिं दूसरा, उस-सा फिर नादान॥

करे नर्क के वास्ते, जितना श्रम इनसान।
आधा भी शुभ में करे, पाए स्वर्ग-विमान॥

सुधा उगलता जो रहे, करके भी विषपान।
चन्दन उस-सा दूसरा, मानव कहां महान ?

जाए 'चन्दन' धन भले, जाए नहिं ईमान।
इसमें ही अय आदमी ! तेरी सच्ची शान॥

अगर आपको चाहिये, स्वर्ग धाम औ' नाम।
नेकी बिन नहिं कीजिये, कभी दूसरा काम॥

नक़ली हैं घी-दूध सब, नक़ली मोहनभोग।
नक़ली चली दवाइयां, लेकिन असली रोग !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
पृथ्वी पर आया नहीं, इसको रहना रास।
'चन्दन' चाहे आदमी, चन्द्रलोक में वास ।।

लगी चोट तो पकड़ पग, करें रोष-अफ़सोस।
चलें न आंखें खोलकर, किसका 'चन्दन' दोष?

खर्च न शिष्टाचार पर, पैसा इक भी आय।
मगर ख़रीदा बहुत कुछ, इससे 'चन्दन' जाय ।।

जिसने अपने आप को, ठीक लिया पहचान।
सचमुच 'चन्दन' हो गया, उसको ईश्वर-ज्ञान ।।

पी करके भी आम-रस, करे न कोकिल मान।
टर्राते मेंढक फिरें, कर कर्दम-जल पान ।।

'चन्दन' मन से दो घड़ी, भक्ति करे जो कोय।
बिन मन शत भी वर्ष की, उसके तुल्य न होय ।।

दीनों के दुख-दर्द में, अगर न तड़पे प्राण।
बन करके भू-भार ही, आया तू इनसान!

महावीर का नाम लो, अय 'चन्दन' हर वक्त।
ऊंचे उठते ही गए, महावीर के भक्त ।।

।। ३६६ दोहे पूर्ण ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दो बात

२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह इनसानी ज़िंदगी,
जिनसे हो खुशहाल ।
हर दोहे में बात 'दो',
पढ़िये 'चन्दन लाल' ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दो बात

'चन्दन' जप, तप, त्याग से, कर कर्मों का अन्त ।
मुक्त अनन्ते हो गए, होंगे और अनन्त ।।

'चन्दन' जिनसे नित्य ही, होते पावन कर्म ।
वीतराग-सा 'देव' नहिं, दया धर्म-सा 'धर्म' ।।

शान्ति-वचन तो एक भी, 'चन्दन' समझें सार ।
व्यर्थ-वचन बेकार हैं, हों भी अगर हज़ार ।।

धर्म-दान-सा दान नहिं, तीन लोक दरम्यान ।
सर्व रसों में धर्म-रस, 'चन्दन' परम प्रधान ।।

क्षुद्र नदी 'चन्दन' चले, करती शोर प्रलाप ।
बहती रहती पर सदा, बड़ी नदी चुपचाप ।।

'चन्दन' कायिक 'मानसिक', यों सुख के दो भेद ।
मुख्य मानसिक सुख मगर, हरता सब दुख-खेद ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक करे उपकार जो, जो माने उपकार।
दो दुर्लभ संसार में, श्रय'चन्दन'नर-नार॥

धर्मंहीन शासक जहां, दुखी वहाँ सब लोग।
धर्म-निरत शासक जहां, तंह 'चन्दन' नहिं शोक॥

दोष अन्य के देखना, है 'चन्दन' आसान।
दोष स्वयं के देखना, लेकिन कठिन महान॥

पता पठित का, मूढ़ का, लगने दे नहिं मौन।
बातचीत से जानिये, 'चन्दन' है क्या कौन॥

करे कलंकित प्रथम तो, पीछे पश्चाताप।
नीच नरन के संग में, दो 'चन्दन' सन्ताप॥

'चन्दन' बेड़ा बांधते, रहे अज्ञ नर-नार।
सन्त, गुणी, ज्ञानी मगर, पहुंच गए भव-पार॥

कोई भी कुछ भी कहे, करो नहीं परवाह।
कहने से कोई बने, चोर न 'चन्दन' शाह॥

पामर जन को पाप हैं, करने ज्यों आसान।
धर्मी को 'चन्दन' वही, मुश्किल मगर महान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
धर्मीजन को धर्म है, करना ज्यों आसान ॥
पामर को 'चन्दन' वही, मुश्किल मगर महान ।

'चन्दन' चंचल हो नहीं, अनासक्त का चित्त ।
लेकिन जन 'आसक्त' का, मन मर्कट-सा नित्त ॥

अय 'चन्दन' नर धर्म-युत, सीधा स्वर्ग सिधाय ।
पर पापी जा नरक में, रोता है दुख पाय ॥

माने धर्म अधर्म को, औ' अधर्म को धर्म ।
ये 'चन्दन' संसार में, दो हैं मूर्ख-परम ॥

पूज्य जनों की जो करें, निन्दा या परिवाद ।
श्वान, गधे की वे बनें, अय 'चन्दन' औलाद ॥

धर्म किया है या नहीं, इसने 'चन्दन लाल' ।
रोग, मौत किंचित् कभी, करते नहीं खयाल ॥

अय 'चन्दन' आगम सभी, गरल बिना स्वाध्याय ।
पुनः-पुनः स्वाध्याय से, सुधा वही बन जाय ॥

'चन्दन' 'वक्ता' श्रेष्ठ वह, जिसकी मधुर ज़बान ।
'श्रोता' उत्तम वह, करे-जो गुण की पहचान ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
दान दिया या खा लिया, धन है अपना वही।
बाक़ी पर का है सभी, कहता 'चन्दन' सही॥

'दौलत-स्वामी' एक है, दूजा 'दौलत-दास'।
दोनों में अन्तर यथा, अवनि और आकाश॥

लिखें पुस्तकें श्रेष्ठ या, कर्म करें यश-योग।
मृत्यु बाद भी आपको, तब नहिं भूलें लोग॥

राग-द्वेष मन में नहीं, रखता जो इनसान।
वही बनेगा एक दिन, अय 'चन्दन' भगवान॥

वैरी जन अपकार औ', करे मीत उपकार।
अन्तर वैरी, मीत का, 'चन्दन' यही विचार॥

अधिक दूध से उज्ज्वला, कीर्ति कही निश्शंक।
काले काजल से अधिक, 'चन्दन' मगर कलंक॥

अधिक तरणि से तेज जो, करो आंख का बोध।
दाहक पावक से अधिक, अय 'चन्दन' है क्रोध॥

'कठिनवचन' अतिकठिन है, कठिन जिसतरह लोह।
मादक मदिरा से अधिक, अय 'चन्दन' है मोह॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मीठा मिश्री से अधिक, 'स्वार्थ' विश्व दरम्यान ।
कोमल माखन से अधिक, 'चन्दन' 'मधुर ज़बान' ।।

'आत्म-संयम' और फिर—'चन्दन' 'आत्म-ज्ञान' ।
जो हों दोनों पास में, कठिन कहाँ कल्याण ?

अल्प जियें या हम अधिक, तजो बहस बेकार ।
ठीक जिये, बे-ठीक या, 'चन्दन' करो विचार ।।

जो चाहो सुख-सम्पदा, 'चन्दन' आप अखूट ।
सत्य सदा कहना मधुर, 'मधुर न कहना झूठ' ।।

गुण से शोभा रूप की, सहस गुणी बढ़ जाय ।
कुल को 'चन्दन' चाँद-सा, सदाचार चमकाय ।।

जो चाहें 'चन्दन' खुशी, नहिं चाहें दुख-शोक ।
याद रखें हर क्षण सदा, लोक और परलोक ।।

जैसे जीना है कला, कला कही त्यों मरण ।
'चन्दन' पर कोई इसे, समझे तारण-तरण ।।

'चन्दन' थोड़े जानिये, जो हों मीत पचास ।
शत्रु अधिक पर एक भी, क़दम-क़दम दे त्रास ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो चाहो 'चन्दन' रहें, दूर दुरित - सन्ताप।
कहना मुख से धर्म ही, कभी न कहना पाप॥

'चन्दन' आलस है भला, अगर पाप में होय।
धर्म-कर्म में भूल भी, करे न आलस कोय॥

'चन्दन' चाहो खोलना, जो स्वर्गों का द्वार।
दूर दुखी का दुख करो, करो सदा उपकार॥

बने प्रेम से स्वर्ग जग, बने द्वेष से नर्क।
'चन्दन' की इस बात में, नहीं ज़रा भी फ़र्क॥

जितने जग के जीव हैं, हंसे कभी नहिं कोय।
नर, सुर, ही 'चन्दन' सदा, केवल हंसते दोय॥

जिसमें 'चन्दन' बन पड़े, अच्छी कोई बात।
'वही सुहाना दिवस है, वही सुहानी रात॥

'सुन्दर भी मदहोश हो', 'दर्शक भी मद होश'।
'चन्दन' तन-सौन्दर्य में, बहुत बड़े दो दोष॥

खाना कुछ नहिं चाहिये, चलते-फिरते वक्त।
'चन्दन' पढ़ना लेट कर, निषिध समझिये सख्त॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सभी जगह पर थूकता, बिन देखे नादान ।
मगर किनारे थूकता, 'चन्दन' चतुर-सुजान ॥

खेद सहित है एक तो, एक रहित है खेद ।
है 'संसारी', 'सिद्ध' दो, जीवों के यों भेद ॥

'स्थावर' 'त्रस' दो भेद सब, जग-जीवों के जान ।
है चौरासी लाख ही, दोनों के दरम्यान ॥

जन्म-मरण का एक दिन, हो जिससे उच्छेद ।
समकित के 'चन्दन' कहे, 'द्रव्य' 'भाव' दो भेद ॥

करें पार संसार से, 'चन्दन' आखिरकार ।
समकित के फिर भेद दो, 'निश्चय' औ 'व्यवहार ॥

अहंकार में भूल तू, अय 'चन्दन' मत भूल ।
शल मिलेंगे शूल से, और फूल से फूल ॥

भोजन दिन में जो करें, करें कभी नहिं रात ।
फलियां भी और पुण्य भी, दोनों 'चन्दन' साथ ॥

बचो बुराई से सदा, भजो भलाई नित्य ।
कभी भलाई का छिपे, नहिं 'चन्दन' आदित्य ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'उत्सर्पिणी' 'अवसर्पिणी, दो विध का यों काल ।
'कालचक्र' के नाम से, चलता 'चन्दन लाल' ॥

एक नियम 'उत्सर्ग' है, एक नियम अपवाद ।
दोनों को ही चाहिये, 'चन्दन' रखना याद ॥

'उपादान' 'निमित्त' ये, 'कारण' दो बतलाय ।
'चन्दन' दोनों बिन मिले, कुछ भी नहिं हो पाय ॥

'चन्दन' 'साता' एक है, एक 'असाता' जान ।
'वेदनीय' के भेद दो, गए भाख भगवान ॥

'चन्दन' एक 'अभव्य' तो, 'भव्य' दूसरा जान ।
किसी किस्म का अन्य नहिं, जीव जगत दरम्यान ॥

'श्रुत', 'चरित्र' भेद से, चन्दन दो विध-धर्म ।
दो विध के यों धर्म का, सदा समझिये मर्म ॥

'चन्दन' चन्दा-सा अगर, यह बन्दा बन जाय ।
'करे उजेला जगत में', 'शीतलता छिटकाय' ॥

अपयश का सौ साल भी, जीना बिल्कुल व्यर्थ ।
पल जीना यश-युक्त भी, रखता 'चन्दन' अर्थ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुख-दुख 'चन्दन' नित्य नहिं, रहे याद यह बात।
कभी उजेला दिवस का, कभी अन्धेरी रात॥

'चन्दन' से जो पूछिये, यही बताये साफ़।
नेक ज़िन्दगी धर्म है, नीच ज़िन्दगी पाप॥

आना-जाना सत्य है, इस में मीन न मेख।
भला-बुरा 'चन्दन' अतः, निश-दिन अपना देख॥

'चन्दन' माने 'आस्तिक', पुण्य, पाप, परलोक।
नहीं मानता 'नास्तिक', शोक! शोक! हा शोक!

जीना उसका धन्य जो, बहुतों का आधार।
निज हित हो जो जन जिये, है 'चन्दन' धिक्कार॥

बनना स्वामी अन्य का, यहां बहुत आसान।
बनना स्वामी स्वयं का, मुश्किल 'चन्दन' जान॥

अधिक उछलते लोग लघु, उछलें नहीं महान।
'चन्दन' आधे छलकते– घड़े, न पूरे जान॥

'तब तक रहे प्रसन्न मुख, 'पूज्य जनों से प्रीत
'चन्दन' जब तक नारी से, हुई न प्रीत की रीत॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो नहिं दुर्जन, सर्प के, आशय के अनुसार।
टिका हुआ है इसी से, अय 'चन्दन' संसार ॥

अय 'चन्दन' जिनके नहीं, कुल, धन सम ये दोय।
प्राणिग्रहण औ मित्रता, सफल वहां नहिं होय ॥

थोड़े से ऊपर उठें, थोड़े से झुक जायं।
तुला, दुष्ट को एक-सा, 'चन्दन' विज्ञ बतायं ॥

अच्छी आदत डालना, ज्यों 'चन्दन' दुश्वार।
बुरी आदतें छोड़ना, तैसे कठिन अपार ॥

'पाप रहित है' 'शान्त है', 'चन्दन' जिसका चित्त।
पाता परमानन्द है, ऐसा योगी नित्त ॥

मन वश करने के कहे, साधन दो ही ख़ास।
'चन्दन' इक 'वैराग्य' है, दूजा है 'अभ्यास' ॥

जैसे जीवन में भरे, भले - बुरे आचार।
आते आख़िर वक्त में, 'चन्दन' वही विचार ॥

दीन-दुखी इम्दाद जो, चाहें 'चन्दन लाल'।
'कभी न अपमानित करें, 'दें नहिं झूठा आल' ॥

दो बा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' चाहे आज मत, मानें आप जनाब।
अधिक सिनेमा-शौक से, आंखें, खून-खराब॥

जितने भी भगवान के, हैं उपदेश महान।
'चन्दन' कहने से नहीं, करने से कल्याण॥

घटते उनके रोग हैं, खुश जो रहते लोग।
'चन्दन' रहते जो दुखी, बढ़ते दिन-दिन रोग॥

'ज्ञान बिना की जो क्रिया, 'क्रिया बिना जो ज्ञान।
कर सकते 'चन्दन' नहीं, तीन काल कल्याण॥

'दुराचार से' 'द्वेष से', जिनको द्वेष महान।
पाते सद्गति, स्वर्ग गति, 'चन्दन' वे इनसान॥

मानव जब जग में स्वयं, लाया क्लेश, विद्वेष।
रोता क्यों अब आप है, 'चन्दन' वही विशेष॥

मिलते ही करता सुखी, मानव देव समान।
मिलते ही करता दुखी, दानव-सा इनसान॥

'करे मिलावट जो बणिक', 'अफ़सर रिश्वतख़ोर'।
'चन्दन' सभ्य समाज में, दोनों ही हैं चोर॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनका श्रय 'चन्दन' रहे, श्रटल दीन - ईमान ।
नर-नारी-सा दूसरा, कौन जगत दरम्यान ।।

पल-पल बीते जा रहे, जीवन, यौवन दोय ।
सुरदुर्लभ नर-जन्म को, क्यों 'चन्दन' फिर खोय ?

देह-भेद नर-नार में, भेद श्रन्य नहिं जान ।
'चन्दन' बन्धन काट कर, हों दोनों भगवान ।।

जो चाहें 'चन्दन' चुभें, कभी न पग में शूल ।
'करें पाप नहिं श्राप ही', 'न करवाएं भूल' ।।

जगत जिन्होंने है किया, 'चन्दन' सदा गुलाम ।
नाम एक का 'काम' है, श्रौर दूसरा 'दाम' ।।

'चन्दन' चाहे जिस तरफ़, देखें नयन पसार ।
सुखी भक्त भगवान के, दुखी सभी संसार ।।

'जीवन की श्राशा नहीं', 'नहीं मृत्यु की भीति ।
सच्चे साधक की यही, सरल परीक्षा-रीति ।।

सद्धर्मी इनसान का, शुभ होना बलवान ।
पापी तो निर्बल भला, हैं कहते भगवान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सदा सुखी 'चन्दन' रहें, पक्के प्रभु के भक्त।
उभय लोक में हों दुखी, 'चन्दन' विषयासक्त ॥

हिंसा कारण से करें, बिन कारण कुछ लोग।
'चन्दन' हिंसा द्विविध यह, बतलाते मुनि लोग ॥

डरे हुए को घेरते, अय 'चन्दन' भय-भूत।
भूत भागते दूर ही, जो हो मन मज़बूत ॥

'पर-निन्दा' 'स्व स्तव' कहे, दोनों झूठ समान।
जो इनसे बचता वही, 'चन्दन' मर्त्य महान ॥

'जिसे न डर परलोक का', 'नहीं किसी की शर्म'।
तज सकता 'चन्दन' न वह, कभी निकम्मे कर्म ॥

सदाचार से, ज्ञान से, जो नर-नारी युक्त।
मरण समय में भी रहें, अय 'चन्दन' भय-मुक्त ॥

वीर नहीं जो—युद्ध में, जीते लाख-हज़ार।
वीर वही जो मन चपल, अय 'चन्दन' ले मार ॥

'सुख तो देते क्षणिक ही', 'दुख देते चिरकाल'।
विषय-भोग संसार के, विष सम 'चन्दन लाल' ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लघुशंका का रोकना, आँखें करता नष्ट।
'चन्दन' मल का रोकना, अनगिनती दें कष्ट॥

'चन्दन' केवल ग्रन्थ के, पण्डित फिरें अनेक।
सच्चा पण्डित पर वही, जिसमें 'विनय' 'विवेक'॥

ज्ञान बिना नहिं आत्मा, आत्म बिना नहिं ज्ञान।
'चन्दन' चन्दा-चान्दनी, जैसे दोनों जान॥

करे अव्रती भाव की, हिंसा निशदिन नव्य।
करे भूल से संयमी, 'चन्दन' हिंसा द्रव्य॥

'चन्दन' 'सद्गुण हों प्रगट;' 'उन्नत हो आचार'।
एक इसी उद्देश्य से, चाहिए धर्म-प्रचार॥

बुद्धिमान की आँख में, करती शर्म निवास।
'चन्दन' मूर्ख के मगर, कभी न फटके पास॥

'चन्दन' देखो देश के, बूढ़े, बाल, जवान।
'अबला' अंखियन में बसे, बसता 'तबला' कान!!

रोटी हो जो पास तो, निर्धन देगा बांट।
एक मुलक के बाद पर, चाहे और सम्राट॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यग् यदि उत्साह है, 'चन्दन' सुधा-समान ।
है अन्धे उत्साह में, मगर महा नुक़सान ।।

मानव आता किस तरह, यह चर्चा बेकार ।
जीवित रहता किस तरह, 'चन्दन' करें विचार ।।

मर कर भी गुण से अमर, बहुत विश्व दरम्यान ।
गुण बिन पर लाखों फिरें, जीवित मृतक समान ।।

न वह सच्चा त्याग है, न वह सच्चा ज्ञान ।
जिस से कि उत्पन्न हो, अय 'चन्दन' अभिमान ।।

अपने पीछे, अन्य के— रहें सामने दोष ।
इसीलिये संसार यह, डूब रहा अफ़सोस ! !

रखें दबा कर धन अगर, रखें छुपा कर ज्ञान ।
दोनों का ही लाभ क्या, कहें धनी, विद्वान ।।

नक़ल बुराई-पाप की, अय 'चन्दन' आसान ।
नक़ल भलाई-धर्म की, मुश्किल मगर महान ।।

ईश-भक्ति 'चन्दन' तथा, मानवता से प्यार ।
दोनों को ही है कहा, गुणियों ने इकसार ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अमृत भी नहिं पीजिये, जो अज्ञानी देय।
ज्ञानी विष भी दे अगर, चन्दन वह भी लेय ॥

दुनिया भर के कह गये, सन्त, गुणी, विद्वान।
अय 'चन्दन' 'ब्रह्मचर्य' 'तप', बिन ही सलिल स्नान ॥

रक्षक रक्षक को मिले, भक्षक भक्षक पाय।
कुदरत का 'चन्दन' लखो, अहो! अनोखा न्याय!

विद्या, सद् आचार से, जो जन हैं सम्पन्न।
नरों, सुरों में, सर्व में, अय 'चन्दन' वे धन्य!

वैरी से बढ़ वैर तो, माता से बढ़ प्यार।
करने वाला जगत में, है चन्दन दुश्वार ॥

तन, मन के सौन्दर्य में, कैसी 'चन्दन' होड़।
पहला है जो लाख तो, दूजा कहो करोड़ ॥

आदमियत 'चन्दन' सदा, देती दो पैग़ाम।
बनो आदमी, कर चलो– नेकी के कुछ काम ॥

'चन्दन' शुभ स्वाधीनता, भले नरक की होय।
पराधीनता स्वर्ग की– भी नहिं चाहे कोय ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पत्नी सेवा भाविनी, बेटा आज्ञाकार।
जिसके हों 'चन्दन' उसे, स्वर्ग सदा संसार ॥

व्याख्याता पहले लखो, लखो बाद व्याख्यान।
दोनों ही जो ठीक हों, हो 'चन्दन' कल्याण ॥

उत्तम ही आचरण है, उत्तम ही व्यवहार।
वही भक्त भगवान का, 'चन्दन' गुण-भण्डार ॥

जो 'चन्दन' धर्मात्मा, बनने का चित चाव।
दुराचार पहले तजो, पीछे क्रूर स्वभाव ॥

मन-वाणी से, कर्म से, सज्जन होता एक।
मन-वाणी से, कर्म से, दुर्जन मगर अनेक ॥

बलशाली वह नर नहीं, जो दे सिंह पछाड़।
'चन्दन' बलशाली वही, क्रोध, काम ले मार ॥

बिना विचारे मत करो, सहसा कोई काम।
निकलेगा नहिं अन्यथा, 'चन्दन' शुभ परिणाम ॥

सादा जीवन और फिर, जिनके उच्च विचार।
'चन्दन' वे संसार में, हैं बिरले नर-नार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो कुछ करना कीजियें, सोच-समझ मन मांहिं ।
'चन्दन' 'सरिता' औ समय, करें प्रतीक्षा नाहिं ।।

बे-मौके जो बोलता, उसे मूढ़ पहचान ।
बे-मौके नहिं बोलता, 'चन्दन' चतुर-सुजान ।।

आए जग में रिक्त थे, कुछ भी नहिं था साथ ।
'चन्दन' चलते वक्त भी, खाली होंगे हाथ ।।

चाहे दुनियादार हो, चाहे 'चन्दन' सन्त ।
जीव रुले 'मिथ्यात्त्वी', तरता 'समकितवन्त' ।।

बारातों के झगड़े, औ साझे का काम ।
'चन्दन' अच्छे आदि में, अन्त अशुभ परिणाम ।।

एक किया था कंस ने, एक 'दशार्ण' भूप ।
'चन्दन' देखो दर्प के, भिन्न-भिन्न दो रूप ।।

'चन्दन' 'मम्मी' अब कहो, मां कहने में पाप !
ख़बरदार ! जो बाप को, कहा किसी ने बाप !!

पति-पत्नी में है जहां, 'चन्दन' नहीं कलेश ।
घर है वह बैकुण्ठ-सा, लक्ष्मी बसे हमेश ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नृप-सा 'चन्दन, वह सुखी, अर्द्धचन्द्र-सम भाल।
सकल भोग, पण्डित, गुणी, जिसका भाल-विशाल॥

करे न गो-वध बन्द जो, करे न मद्य-निषेध।
'चन्दन' उस सरकार पर, लाख-लाख है खेद!!

करने से अज्ञान तप, मुक्ति न हो त्रैकाल।
वह तो सम्यग्ज्ञान से, मिलती 'चन्दनलाल'॥

पाने को सुख स्वर्ग का, पाने को निर्वाण।
नहिं महत्व है जाति का, 'चन्दन' कर्म प्रधान॥

'चन्दन' सज्जन तो सदा, स्वर्ग-द्वार दिखलाय।
लेकिन दुर्जन नरक में, प्राणी को पहुंचाय॥

अच्छा ही आचार है, अच्छे और विचार।
'चन्दन' वे नर-नार हैं, तीन लोक का सार॥

आमदनी से खर्च कम, असल वही धनवान।
खर्च अधिक, कम आमदन, निर्धन 'चन्दन' जान॥

मन का स्वामी ही सदा, स्वामी-पदवी पाय।
'चन्दन' मन का दास पर, दास पुकारा जाय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है त्रिशूल या वज्र का, स्पष्ट चिन्ह जिस भाल।
सुखदायक, नायक, गुणी, जन वह 'चन्दनलाल'॥

सदाचार से, ज्ञान से, जो हीना इनसान।
'चन्दन' अंधे महिष-सा, नर वह जग दरम्यान॥

जन्म-मरण के बीज बस, राग-द्वेष दो जान।
'चन्दन' मेटे जो इन्हें, विश्व-वन्द्य भगवान॥

सोने से भी युद्ध में, है लोहा अनमोल।
अय 'चन्दन' पर बुद्धि का, कोई मोल न तोल॥

कठिन बहुत बनना भला, बुरा बहुत आसान।
मुश्किल मदिरा छोड़ना, मुश्किल क्या मधुपान॥

माया, ममता के यहाँ, बहुत बिछे हैं जाल।
संभल-संभल हर क़दम, चलना 'चन्दनलाल'॥

सहज सरलता, सादगी, नज़र कहीं ही आय।
जीवन आज बनावटी, 'चन्दन' बनता जाय!!

कौन बड़ाई मधुर जल, खारा अगर बनाय।
करे कटुक को जो मधुर, 'चन्दन' कला कहाय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैरी आलस-सा नहीं, उद्यम-सा नहिं मीत।
जीवन की इक हार है, इक है जीवन-जीत॥

सदाचार को सत्पुरुष, 'सतयुग' कहते आम।
'चन्दन' 'कलियुग' है मगर, दुराचार का नाम॥

सुखिया हैं संसार में, जिन्हें नाम आधार।
बाक़ी 'चन्दन' है दुखी, सारा ही संसार॥

बेटा हो या छात्र हो, अधिक दुलारे जाँय।
बिगड़ें वे हर हाल में, हरगिज़ सुधरे नाँय॥

दुर्जन, अहि में है भला, अहि ही 'चन्दनलाल'।
दुर्जन तो प्रतिपल डसे, अहि पर अन्तिम काल॥

अमर वही जो धर्म पर, मिटता है इनसान।
धर्महीन 'चन्दन' मगर, जीवित मृतक समान॥

दूर रहा भी दूर नहिं, जो जिसके मन माँहि।
निकट रहे भी दूर पर, जो जिसके मन नांहि॥

जगत रूप इस वृक्ष के, दो फ़ल सुधा समान।
'चन्दन' 'सज्ज़न-संग इक, 'दूजे मधुर ज़बान'॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवन तो 'चन्दन' सदा, 'सुख-दुःख करे प्रदान।
दोनों का ही मृत्यु पर, मेटे नाम-निशान ॥

हर्ष हमेशा ही रहे, नेक पुरुष के पास।
नीच नरन का मन मगर, 'चन्दन' नित्य निराश ॥

अय 'चन्दन' धर्मी, गुणी, जीवित दो इनसान।
धर्महीन-गुण रहित का, जीवन मृतक समान ॥

'चन्दन' घुसना सरल है, दुनिया के दरम्यान।
इस फन्दे से निकलना, मुश्किल मगर महान ॥

सड़े पान के संग सै, सड़ जाता है पान।
'चन्दन' चन्दन-विटप से, महके वन - उद्यान ॥

'चन्दन' दिखें बुराइयां, जितनी जग दरम्यान।
मात 'कु-संगति' सबन की; और पिता 'अज्ञान' ॥

मर्यादा - पालन करें, हर हालत में नेक।
पर, मर्यादा तोड़ते, 'चन्दन' दुर्जन देख ॥

सोच अधिक पढ़ अल्प पर, ज्यादा सुन कमबोल।
बोल-बोल-पर व्यर्थ नहिं, जन्म रोल अनमोल ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रिश्वत देना पाप है, लेना भी है पाप।
'चन्दन' रिश्वत छोड़िये, जो हों धर्मी आप ॥

आलस में जो कार्य है, 'चन्दन' कठिन महान।
वही कार्य पुरुषार्थ से, बन जाता आसान ॥

'चन्दन' जीवन में अगर, होना चाहें पास।
'प्रेम सभी से कीजिये', 'थोड़ों का विश्वास' ॥

आंधी में टीले उड़ें, उड़ें न परबत-मूल।
दोनों से शिक्षा सरस, 'चन्दन' करें क़बूल ॥

जिन कीड़ों से खोखला, हो जाता इनसान।
'चन्दन' उनका नाम है, 'आलस' वा 'अज्ञान' ॥

बने गुणी गुणहीन भी, गुणियों का गुण गाय।
लघु हो जाता इन्द्र भी, 'चन्दन' स्वयं बड़ाय ॥

पूरी सभी ज़रूरतें, होनी हैं आसान।
इच्छाएं पूर्ण सभी, मुश्किल मगर महान ॥

जीवन हर जग-जीव का, है 'चन्दन' इक फूल।
खिलना, मुर्भाना सदा, जिसका अटल असूल ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'मान सुशीला का नहीं, नहिं सु-पात्र को दान ।
उस घर को 'चन्दन' गुणी, हैं कहते शमशान ॥

अन्धा-बहरा है नहीं, जिसको कहते प्यार ।
अन्धी-बहरी वासना, 'चन्दन' करो विचार ॥

'चन्दन' लोभी, स्वार्थी, दिखें अधिक अब लोग ।
मानव मुश्किल से मिलें, मानव कहने योग ॥

मुक्त हुए बिन शान्ति-सुख, हो नहिं 'चन्दन' प्राप्त ।
मुक्ति जिसे भी चाहिये, करदे कर्म समाप्त ॥

देना नहीं अपात्र को, कभो शास्त्र का ज्ञान ।
वंचित रहे सुपात्र नहिं, इसका रक्खो ध्यान ॥

अय 'चन्दन' हैं कह गए, महावीर भगवन्त ।
सन्त सदा हैं जागते, सोए सदा असन्त ॥

चलना प्रभु-उपदेश पर, जपना प्रभु का नाम ।
'चन्दन' तरने के लिये, दो ही काफ़ी काम ॥

॥ १८९ दोहे पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीन बात

३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन से विकसित सुख-सुमन,
हो फिर यश कल्याण ।
तीन बात' 'चन्दन' पढ़ें,
हर दोहे दरम्यान ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीन बात

'प्रतिक्रमण' 'स्वाध्याय' में, 'माला' में मत बोल।
भक्ति कही है मौनयुत, अय 'चन्दन' अनमोल॥

दिया वचन नहिं भंग हो, करें सत्य व्यवहार।
मन, वच, काया तीन ही, हों 'चन्दन' इकसार॥

मात-पिता, गुरुदेव के, दया-धर्म के और।
वश में रहना चाहिये, अय 'चन्दन' हर तौर॥

अय 'चन्दन' 'सौजन्य' औ— 'शील' व 'शिष्टाचार'।
कभी कहीं नहिं भूलते, सभ्य-शिष्ट नर-नार॥

'चन्दन' करता क्रोध है, मन-मलीन, तन-क्षीण।
क्षमा, मौन व विलम्ब हैं, दवा क्रोध की तीन॥

बचपन, यौवन, तीसरी— बृद्धावस्था जान।
रहे अडिग जो बीच में, 'चन्दन' वही महान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अय 'चन्दन' इनसानियत, अगर आप में रंच ।
इधर-उधर नहिं फैंकिये, कंकर, कांटें, कंच ।।

अत्याचारी पुरुष को, या तो धर्म सुनाय ।
'चन्दन' रखिए मौन या, चला वहां से जाय ।।

'चन्दन' तृष्णा रोग है, भूख, बुढ़ापा रोग ।
देह-रोग को ही अहो ! रोग कहें सब लोग ।।

संचय कीजे पुण्य का, करें न संचय पाप ।
रखना 'चन्दन' शुद्ध मन, जो चाहें सुख आप ।।

सदाचार से सम्पदा, सदाचार से यश ।
सदाचार से स्वर्ग भी, 'चन्दन' मिले अवश्य ।।

क्रोध न 'चन्दन' जो करे, बोले मधुर ज़बान ।
याचक को दिल खोल दे, जन वह देव- समान ।।

सेवे नहिं मां-बाप को, ऋण ले जो नट जाय ।
लांछित गुणियों को करे, नर चण्डाल कहाय ।।

हित-मित-मीठा बोलना, भूलों का स्वीकार ।
सेवा दुखिया-दीन की, अय 'चन्दन' दुश्वार ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' क्षमा समर्थ में, दरिद्रता में दान।
यौवन में इन्द्रिय-दमन, तीनों कठिन महान॥

प्रज्ञा-बल से, विनय से, करने से सम्मान।
'चन्दन' मिलता मान है, दुनिया के दरम्यान॥

तन से, मन से, वचन से, बने नित्य जो दोष।
'चन्दन' चिन्तन कीजिये, नित्य बैठ खामोश॥

भूत, भविष्यत, तीसरा, वर्तमान है काल।
काल अन्य नहिं जगत में, कहता 'चन्दनलाल'॥

स्व-चिन्तन औ ब्रह्मचर्य, शास्त्रों का स्वाध्याय।
'चन्दन मुनि' उपवास में, आवश्यक बतलाय॥

गरिष्ठ, अधिक, औ चटपटा, अय 'चन्दन' आहार।
पहले दिन उपवास के, देना आप बिसार॥

देव-मनौती, ख्याति औ– स्वर्गों की अभिलाष।
इनके हित नहिं कीजिए, 'चन्दन' तप-उपवास॥

गर्भवती, अति दुर्बली, जिसका छोटा बाल।
तीनों को उपवास नहिं, करना 'चन्दनलाल'॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शारीरिक औ मानसिक, वाचिक तीजा जान।
दुराचार ये तीन ही, 'चन्दन' दुख की खान॥

शारीरिक औ मानसिक, वाचिक तीजा जान।
सदाचार ये तीन ही, 'चन्दन' सुख की खान॥

शारीरिक औ मानसिक, वाचिक तीजी जान।
पवित्रताएं तीन ये, 'चन्दन' सुख की खान॥

धर्म, देव, गुरुदेव हैं, कहे तीन ये तत्त्व।
'चन्दन' भटके नहिं कभी, समझे अगर महत्व॥

'चन्दन' गर्भ, सम्मूर्छिम, और कहा उपपात।
तीन तरह का जन्म यों, दुनिया में विख्यात॥

ऊंचा, नीचा, तीसरा– तिरछा 'चन्दन' लोक।
तीनों में ही जीव-जड़, घूम रहे बे-रोक॥

असि, मसि, कृषि हैं तीन ये, कर्म जगत दरम्यान।
तीनों से आजीविका, करता सकल जहान॥

सम्यग्, मिथ्या, मिश्र यों, 'दर्शन' के त्रय भेद।
'चन्दन' इन में प्रथम ही, है हरता दुख - खेद॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक प्रव्रज्या-वृद्ध हैं, एक ज्ञान से वृद्ध।
आयु-वृद्ध हैं तीसरे, 'चन्दन' जगत-प्रसिद्ध।।

कर, कानों से जीभ से, जो सच्चे नर-नार।
करते हैं 'चन्दन' सदा, निर्मल यश-विस्तार।।

तिरछी जिनकी नज़र है, टेढ़ी जिनकी चाल।
मुख में जिनके गालियां, सभ्य न 'चन्दनलाल'।।

जैसा समझे आपको, जैसा समझें और।
जैसा हो वह असल में, नर के यों त्रय तौर।।

अय 'चन्दन' कितना करे, कोई पुनः प्रयास।
गए कभी नहिं फिर मिलें, शक्ति, शील औ श्वास।।

कुछ तो होते जन्म से, कुछ हैं बनते बाद।
'चन्दन' मगर महानता, कुछ पर दे जग लाद।।

अच्छा अधिक विचारना, अल्प बोलना ठीक।
लेखन सब से कम करें, है 'चन्दन' की सीख।।

मात-पिता, गुरुदेव औ– तीजा स्वामी जान।
तीनों के उपकार का, बदला कठिन महान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आलस औ उद्दण्डता, तीजे अपने पाप।
दया करें नहिं भूल कर, इन पर 'चन्दन' आप ॥

कटुक कहे नहिं दुखित को, दुख से नहिं घबराय।
याचक को मत 'ना' कहे, 'मानव' वह कहलाय ॥

दीन-दुखी के निकट, औ– सन्तों के दरबार।
'चन्दन' जाना दौड़ कर, सुनें जहां बीमार ॥

मालिक और महन्त ना, नेता बनना भूल।
'चन्दन' चिन्ता खायगी, वरना जान फ़ज़ूल ॥

आर्त रुग्ण अन्त्यज सभी, हैं आख़िर इनसान।
'चन्दन' नफ़रत मत करो, गए भाख भगवान ॥

बिना बुलाये जिस तरह, अय 'चन्दन' दुख आयं।
आयं त्यों-धन, शान्ति, सुख, दृढ़ धर्मी बन जायं ॥

पर-निन्दा, पर-भामिनी, और पराया माल।
चाहे जो सुख-स्वर्ग ये, तजदे 'चन्दनलाल' ॥

'चन्दन' दूंगा दान कब, और बनूंगा सन्त।
श्रावक भावे भावना, कब हो अनशन अन्त ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपना हर इक दोष औ, औरों का सम्मान।
रहे निरन्तर ध्यान में, अय 'चन्दन' भगवान॥

करे न निन्दा अन्य की, हंसे न दुखिया-देख।
अपनी करे सराहना, नहिं 'चन्दन' नर नेक॥

राग-द्वेष औ डाह हैं, अय 'चन्दन' दुख-खान।
तीनों के ही निकट नहिं, जाये प्रज्ञावान॥

काम-वासना और फिर, क्रोध लोभ से हीन।
'चन्दन' ऐसे शुभ पुरुष, बनते कभी न दीन॥

वाणी में तो मधुरता, आँखों में अनुराग।
मन में 'चन्दन' सरलता, 'श्रावक' वह बड़भाग॥

साधू को साधू कहे, कहे धर्म को धर्म।
'चन्दन' श्रावक खोलता, नहीं पराया मर्म॥

श्रावक-जीवन की अहो! कैसो अद्भुत बात।
द्वन्द्व, अनर्थ, अन्याय का, कभी न देता साथ॥

दुराचार पर, झूठ पर, कूटनीति पर और।
'चन्दन' कर विश्वास मत, कभी किसी भी तौर॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाकर 'चन्दन' सम्पदा, पाकर आदर-मान।
पाकर पर के दोष नहिं, फूलो फली समान॥

पर-धन पर नहिं ईर्ष्या, निज-धन पर नहिं मान।
धन मिटने पर शोक नहिं, 'चन्दन' वही महान॥

अवगुण न कह—गुण कहे, सब से मीठे बोल।
बने सहायक विनय से, 'चन्दन' जन अनमोल॥

लाभ-हानि जो परखते, निर्धन जन से प्यार।
करें बुराई पर भला, वे बिरले संसार॥

पहली 'ज्ञानाराधना', 'दर्शन' और 'चरित्र'।
तीनों ही 'आराधना', 'चन्दन' परम पवित्र॥

पहली 'ज्ञान-विराधना', 'दर्शन' और 'चरित्र'।
तीनों कही 'विराधना', अय 'चन्दन' अपवित्र॥

'मनोयोग' 'चन्दन' प्रथम, 'वचनयोग' फिर जान।
'काय-योग' है तीसरा, 'तीनयोग' पहचान॥

करते हैं जो जीव को, धर्म-कर्म से हीन।
'रस' 'साता' औ 'ऋद्धि' ये, 'चन्दन' 'गारव' तीन॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अय 'चन्दन' 'मानव-तनू', दूजा 'भारत देश'।
'उत्तम कुल' में जन्म फिर, चाहें देव-सुरेश॥

'आत्म' औ 'उत्सेद' औ, तीजी कही 'प्रमाण'।
तीन तरह की 'अंगुली', अय 'चन्दन' पहचान॥

'चन्दन' एक 'अलोक' है, एक 'लोक' 'परलोक'।
जो मानें नहिं 'नास्तिक, पड़ता पल्ले शोक॥

'चन्दन' 'माया-शल्य' औ, दूजा शल्य-'निदान'।
'मिथ्यादर्शन-शल्य' ये' तीनों दुख की खान॥

अय 'चन्दन' 'मन-दण्ड' इक, 'वचन-दण्ड' है दोय।
'काय-दण्ड' इन तीन से, दण्डित दुनिया होय॥

विनय, विवेक, विचार हो, सरल सत्य संयुक्त।
होना फिर है क्या कठिन, 'चन्दन' बन्धन-मुक्त॥

झूठे होते फैसले, झूठे चलते केस।
इनके कारण तीन हैं– लोभ, मान, विद्वेष॥

नहीं हुआ, जो मर गया, तीजा बेटा मूढ़।
'चन्दन' दो से अल्प दुख, तीजे से पर गूढ़॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
'चन्दन' बकना, विकलता, गिरना हो बेहोश।
तीनों मदिरा में लखें, सन्निपात-से दोष॥

मानव पेट-प्रपञ्च से, भटके देश-विदेश।
सेवे सतत असेव्य को, बोले झूठ विशेष॥

जिसके कुल का, शीलका, आश्रय का नहिं ज्ञान।
'चन्दन' संगति भूल भी, करे न प्रज्ञावान॥

वनिता जहां अशिक्षिता, जहां अशिक्षित बाल।
दुर्जन हो जिस गेह में, नासे 'चन्दन लाल'॥

आप्त—वैर से मरण हो, शत्रु-वैर धन-ह्रास।
पर, मुनियों के वैर से, कुल का 'चन्दन' नाश॥

मद्य, मांस का, द्यूत का, भूल न लीजे नाम।
अन्त बुरे का है बुरा, अय 'चन्दन' परिणाम॥

मारा था, है मारता, मारेगा यह आज।
करें जीव हिंसा सभी, इतने के ही काज॥

बहुत गए, कुछ जा रहे, खड़े बहुत तैयार।
चला-चली का खेल है; अय 'चन्दन' संसार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' जिसके हृदय में, करता क्रोध निवास ।
शील, सत्य का, विनय का, हो जाता है नाश ।।

अल्प क्रोध में दस गिनो, सौ जब ज्यादा जोश ।
गिनो सहस अति क्रोध में, 'चन्दन' रह खामोश ।।

प्रथम व्यक्ति को परखिये, देश और फिर काल ।
गुप्त रहस्य प्रगटाइये, तब ही 'चन्दन लाल ।।

'चन्दन' धीरज विपद में, बन्धु पड़े जब काम ।
सन्त परखिये त्याग में, है यह नियम महान ।।

गौतम से यों कह गए, महावीर भगवान ।
शान्ति, शील, शम से बने, 'चन्दन' पुरुष महान ।।

'चन्दन' मिलता भाग्य से, नहीं भाग्य का लेख ।
'सूरत' और 'स्वभाव' की, मिलती कभी न रेख ।।

'चुगलखोर' 'जनस्वार्थी', तथा 'विदेशी राज' ।
तीन भलाई नहिं करें, 'चन्दन' दे आवाज ।।

कर्ज़, मर्ज़ को, फ़र्ज़ को, जो जन जाते भूल ।
'चन्दन' उनकी राह में, बिछते तीखे शूल ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो चाहो 'चन्दन' मिले, विजय और यश-मान।
मात, पिता, गुरुदेव का, करो सदा सन्मान॥

अय 'चन्दन' त्यागे बिना, द्वेष, दम्भ, अभिमान।
हो सकता उन्नत कभी, कोई नहिं इनसान॥

काम, क्रोध को वैर को, दिल से जो बिसराय।
वही तपस्या-लीन मुनि, अय 'चन्दन' कहलाय॥

जो 'चन्दन' तृष्णा कटी, बन्धन कटें तमाम।
जन्म, जरा का, मरण का, कहिये क्या फिर काम॥

तजिये-भूत भविष्य की, 'चन्दन' चिन्ता व्यर्थ।
वर्तमान की कीजिये, जिसका है कुछ अर्थ॥

'चन्दन' देखे नहिं बुरा, बुरा न करता और।
बुरा कभी भी नहिं सुनें, वही नेक सब ठौर॥

'चन्दन' यौवन में 'जरा', और स्वास्थ्य में रोग।
मृत्यु छुपी है जन्म में, अहो! लखें नहिं लोग॥

स्नेह, सरलता, सौम्यता; तीन जिन्हों में पायं।
'चन्दन' सज्जन वे भला, क्यों न देव कहलायं ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रोग, बुढ़ापा, मृत्यु ये, तीनों जब तक दूर ।
धर्म-कर्म कर लीजिये, अय 'चन्दन' भरपूर ।।

कोविद क्रोधी नहिं भला, अन्यायी भूपाल ।
सन्त भला नहिं लालची, हरगिज 'चन्दन लाल' ।।

मन, वच, काया का अशुभ, जिस का है व्यापार ।
है 'अज्ञानी' पुरुष वह, 'चन्दन' करें विचार ।।

शिक्षित भी हो, शूर हो, शुद्ध शील हो पास ।
'चन्दन' ऐसे पुरुष की, सारी दुनिया दास ।।

राग, द्वेष की, मोह की, महा अग्नियाँ जान ।
'चन्दन' जिनसे जल रहा, सारा अहो ! जहान ।।

'चन्दन' जाए धर्म, धन, लगते भारी रोग ।
सेवन मादक द्रव्य का, फिर भी करते लोग ! !

मन में तो कुछ और है, कहता है कुछ और ।
करता है कुछ और ही, दुर्जन के ये तौर ।।

लिए हुए गम्भीरता, वाणी, कर्म, विचार ।
अय 'चन्दन' व्यक्तित्व को, देते अधिक निखार ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' की इस बात में, नहीं ज़रा भी फ़र्क।
दाव-पेच, छल, कलह से, गृह बनेगा नर्क ॥

क्या रहस्य किसके छुपा, 'चन्दन' मन दरम्यान।
वाणी से, मुख-वर्ण से, नज़रों से पहचान ॥

असभ्यता, उद्दण्डता, दुर्विनीतता तीन।
दुर्गुण रखता है सदा, 'चन्दन' जन अकुलीन ॥

'चन्दन' चंचल, चपल है, चपला-चमक समान।
तन, धन, यौवन का अरे! क्या करता अभिमान ?

'चन्दन' जिन बिन व्यर्थ सब, किया-कराया धर्म।
जगती में सब से बड़े, शान्ति, शील औ शर्म ॥

उत्तम जन 'चन्दन' करें, सन्त जनों का संग।
धर्म, शर्म, शुभ कर्म का, चढ़े करारा रंग ॥

शील-सुधा सेवे सदा, माता सम परनार।
'चन्दन' सच्चे भक्त को, विष-से विषय विकार ॥

तन से, मन से, वचन से, जीव कमा कर पाप।
'चन्दन' तीनों लोक में, फिरे भटकता आप ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पलटे से पलटे नहीं, अय 'चन्दन' तक़दीर।
कर्म कमाये भोगते, राजा, रंक, फ़क़ीर॥

सत्य, शील, सन्तोष से, जिसको 'चन्दन' प्यार।
लोक और परलोक हैं, दोनों ही गुलज़ार॥

जीवन, निश्छल, शुद्ध हो, मधुर-मधुर व्यवहार।
क्यों नहिं फिर फूले-फले, वह 'चन्दन' परिवार॥

'सभी जगत मम देश हैं' 'सभी मनुज मम भ्रात'।
'चन्दन' 'नेकी धर्म मम', यह सोचो दिन-रात॥

'मैत्री हर इक जीव से, सबसे करना प्रेम।
'सब से सद्व्यवहार हो', 'चन्दन' लो यह नेम॥

सत्य अहिंसा, ब्रह्मचर्य, बिन नहिं सुख कल्याण।
जितना 'चन्दन' दे सकें, अधिक-अधिक दें ध्यान॥

'कैसे दुखिया-दुख हरूं ?' 'पाऊं सज्जन-प्यार ?'
'कैसे मन निष्पाप हो !' 'चन्दन' सदा विचार॥

जीवन में सुख-सफलता, 'चन्दन' अगर क़बूल।
दान, पठन, प्रभु-भजन में, करें बिलम्ब नहिं भूल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दंभ, झूठ, स्वार्थ न दें, जब तक 'चन्दन' छोड़ ।
सच्ची मिले न मित्रता, कोशिश करो करोड़ ।।

'चन्दन' दिखने में दिखे, चाहे बात विचित्र ।
शोक, क्रोध के, दम्भ के, आंसू हों अपवित्र ।।

सदाचार का, सत्य का, दया धर्म का और ।
कीजे सदा सदाग्रह, अय 'चन्दन' हर ठौर ।।

'करें अन्य अपकार जो,' 'करें आप उपकार' ।
'है धन से सत्कार जो,' 'चन्दन' तीन बिसार ।।

करे कु-संगति नहिं कभी, करे सभी से प्यार ।
करे कमाई न्याय से, 'चन्दन' बेड़ा पार ।।

गुण मत निन्दो अन्य के, अपने मत गुण गांय ।
करें रंज नहीं दान दे, तीन प्रतिष्ठा पांय ।।

'आत्म संयम' साथ में, 'चन्दन' 'आत्मज्ञान' ।
हो 'आत्म विश्वास' फिर, निश्चय तब कल्याण ।।

मद्य, मांस, अण्डे अहो ! राक्षस का आहार ।
समझदार इनसान यह, क्यों न करे विचार ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो भी 'चन्दन' बेचता, करता या आहार।
मद्य, मांस, अण्डे सदा, दिखलाते यम-द्वार ॥

जहां अनन्ती भूख है, जहां अनन्ती प्यास।
जहां अनन्ते अन्य दुख, वह है नर्कावास ॥

या सन्तोषी आदमी, या फिर सच्चा सन्त।
'चन्दन' सुखिया तीसरा, याद जिसे भगवन्त ॥

'चन्दन' ले प्रण पालिये, ले लौटाइये क़र्ज़।
करें काम विश्वास दे, समझ स्वयं का फ़र्ज़ ॥

तन, धन, यौवन स्थिर नहीं, क्या करता अभिमान।
तीन दशा से गुज़रता, एक दिवस में भान ॥

'चन्दन' प्रज्ञा, क्रोध, मन, वश जो रक्खें आप।
तीन मिटेंगे आपके, चिन्ता, दुख, सन्ताप ॥

चोरी, चुग़ली, झूठ ये, जो भी तज दे तीन।
वही बड़ा गुणवान है, 'चन्दन' वही प्रवीण ॥

गुण-अवगुण-अनजान औ, सत्य, धर्म से द्वेष।
'चन्दन' जो दम्भी पुरुष, कठिन उसे उपदेश ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'रहन-सहन में सादगी,' 'सदा दुरित से दूर'।
'चन्दन' 'मितव्ययी पुरुष औ, तीन सुखी भरपूर ॥

झूठ तजें, हिंसा तजें; करें सुपात्र को दान।
उम्र बड़ी हैं बान्धते; वे 'चन्दन' गुणवान ॥

झूठ कहें, हिंसा करें, खोटा दें फिर दान।
अल्प उम्र हैं बान्धते, 'चन्दन' वे नादान ॥

सूक्ष्म परम–'प्रदेश' औ– 'समय' 'परमाणु' और।
तीनों के ही खण्ड हों; नहीं किसी भी तौर ॥

नहीं भूलना भूल भी; 'चन्दन' रखना याद।
लोभ, झूठ, निन्दा करें; जीवन को बर्बाद ॥

मुनियों को जो निन्दते; देश-द्रोह में चूर।
धर्म-कर्म से हीन से; रहना 'चन्दन' दूर ॥

दुखदायी है मूढ़ता, 'युवा अवस्था ख़ास।
इससे भी है कष्टतर; 'चन्दन' पर-घर-वास ॥

अगर-मगर से कुटिल जन, दुर्जन दबी ज़बान।
मुक्तकण्ठ सज्जन करे; गुणियों का गुण-गान ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चुग़लख़ोर के; चोर के, भूल न फटको पास।
'चन्दन' झूठे का कभी; करो नहीं विश्वास॥

दान सुपात्र है बड़ा, बड़ा अभय का दान।
सबसे बढ़कर दान पर– देना सम्यग्ज्ञान॥

सरिता से सागर बड़ा, सागर से आकाश।
सबसे ही 'चन्दन' बड़ा, आत्म-ज्ञान – प्रकाश॥

मिलता है उपदेश 'टन', मगर समझते 'मन'।
'चन्दन' अचरज है यही; ग्रहण करें जो 'कण'॥

तजने से सद्धर्म के; करने से रिपु-नमन।
बहुत दुखों से जो मिले, कभी न लीजे धन॥

बुद्धि, नाभि, स्वर-तीन ये, अगर गहन-गम्भीर।
'चन्दन' चन्दा-सा सजे; हर इक पुरुष-शरीर॥

अंग शास्त्र में लिख गए, 'चन्दन' पुरुष प्रवीण।
माथा, वक्षस्थल, तथा, सिर विशाल शुभ तीन॥

पूछे से 'चन्दन' चले, हर इक का हर काम।
पृच्छा, प्रश्न, अनुयोग हैं, तीन 'प्रश्न' के नाम॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' जो दे अशुभगति, कन्दन - कष्ट - क्लेश।
तीन नाम है 'वैर' के, वैर, विरोध, विद्वेष ॥

अय 'चन्दन' उपकार है, जिनका विश्व विख्यात।
नाम पिता के तीन हैं, जनक, पिता औ तात ॥

पहले जन्म, विवाह फिर, मौत तीसरी जान।
मानव-जीवन की कही, घटना तीन प्रधान ॥

शान्त प्रकृति, शुद्ध फिर— हो आहार, विचार।
'चन्दन' नर सुर-तुल्य वह, भूतल का श्रृंगार ॥

भित्ति-चित्र है जिस तरह, अय 'चन्दन' निष्प्राण।
दया, सत्य से, शील से— हीन आदमी जान ॥

किया कौन-सा काम शुभ, कौन किया या पाप।
किया कौन नहिं काम शुभ, प्रतिदिन सोचें आप ॥

सदाचार नहिं, सत्य नहिं, दया न दिल दरम्यान।
कहिये कैसे फिर मिलें, अय 'चन्दन' भगवान ॥

सहनशीलता, नम्रता, प्रेम - पूर्ण व्यवहार।
तीनों से वश कीजिये, अय 'चन्दन' संसार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अय 'चन्दन' मन इन्द्रियां, और आत्मा जान।
तीन किये बिन वश नहीं, तीन काल कल्याण ।।

शिष्य, पुत्र और पुत्र वधू, अधिक तीन नहिं ताड़।
अधिक तीन की ताड़ में, 'चन्दन' बहुत बिगाड़।।

अय 'चन्दन' प्रभु-भक्ति औ, निज बल, शुद्धाचार।
तीनों पै विश्वास कर, कीजे बेड़ा पार ।।

'सम्यग्दर्शन' साथ हो, 'चन्दन' 'सम्यग्ज्ञान'।
'सम्यक् ही चारित्र ये, 'मोक्ष-मार्ग' पहचान ।।

सरल-सत्य-संयुक्त हों– विनय, विवेक, विचार।
होना फिर है क्या कठिन, 'चन्दन' भव से पार।।

जो चाहो 'चन्दन' खिलें, जीवन में सुख-फूल।
मानी, मायावी तथा, बनों कृतघ्न नहिं भूल।।

नाक, नयन औ जीभ का, सर्वाधिक उपयोग।
अय 'चन्दन' संसार के, करते हैं सब लोग ।।

अय 'चन्दन' बहिरातमा, अन्तरातमा और।
परम आतमा तीसरी, परम सुखी हर तौर ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिसके जीवन पर सभी, नारी-नर बलिहार।
स्नेह, सादगी; सरलता, सज्जन के शृंगार॥

क्रोध, कपट से, काम से, जिसका नहिं सम्बन्ध।
लोक तथा परलोक में, पावे परमानन्द॥

शान्ति, शील औ शम नहीं, जिनके जीवन माहिं।
उभयलोक में वे कभी, पाते हैं सुख नाहिं॥

जीवन में समता नहीं, सत्य नहीं सन्तोष।
मूढ फिरें सुख ढूंढते, अय 'चन्दन' अफ़सोस॥

धर्म, शर्म, शुभ कर्म का, जिसके मन में वास।
'अय 'चन्दन परमात्मा, समझो उसके पास॥

कोई कितना भी खपे, चाहे 'चन्दनलाल'।
दया, सत्य और शील बिन, मुक्ति नहीं त्रैकाल॥

त्याग, त्रपा, तप–तीन ये, 'चन्दन' जिसके पास।
नर हो चाहे नार हो, करें अटल विश्वास॥

ज्ञानी, ध्यानी और फिर, दानी मिलें अनेक।
मनो विजेता जगत–में, विरला 'चन्दन' देख॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चार बात

४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुत-बहुत हो आपका,
जिनसे सद्व्यवहार ।
हर दोहे के बीच में,
बातें पढ़िये चार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चार बात

सन्त, सती औ, श्राविका, श्रावक गुण-भण्डार।
जैन-धर्म में 'तीर्थ' ये, 'चन्दन' हैं शुभ चार॥

दान, शील, तप, भावना, धर्म-भेद ये चार।
अथ 'चन्दन' भव से तरें, कर जन अंगीकार॥

क्रोधी, कपटी, अविनयी, पाँच विगय–आसक्त।
बने नहीं 'चन्दन' कभी, गुरुवर का वह भक्त॥

दमितेन्द्रिय, हो शान्त चित, माया रहित, विनीत।
शिष्य युक्त गुण चार से, करता गुरु से प्रीत॥

नहीं भूलना भूल भी, 'चन्दन' रखना याद।
मूढ़, जनक, जननी, गुरू, से नहिं भला विवाद॥

दया, सत्य औ शील नहिं, पल्ले प्रत्याख्यान।
वह 'चन्दन' परलोक में, पछताता इनसान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रोध, लोभ, भय, हास्य से, कहे झूठ इनसान।
'चन्दन' चारों से बचे, जो चाहे कल्याण॥

सदाचार युत सुत-सुता, सरल-सुशीला नार।
निर्मल यश, वा स्वस्थता, सुखकर 'चन्दन' चार॥

पण्डितजन का संग कर, पूज्य जनों को पूज।
बच 'चन्दन' जन मूढ़ से, मर्म धर्म का बूझ॥

पण्डित से अनपढ़ जलें, धनियों से धनहीन।
सन्त, सती से दुष्ट जन, अच्छों से अकुलीन॥

विनय, मधुरता, सरलता, सदाचार से प्यार।
'चन्दन' तन-सौन्दर्य में, चान्द लगाते चार॥

अहंकार, शृंगार, मद, दुराचार से प्यार।
'चन्दन' तन-सौन्दर्य में, महा दोष ये चार॥

अय 'चन्दन' प्रभु-भक्त औ– कथनी-करनी एक।
वक्ता दुर्लभ बहुत हैं, निर अभिमानी, नेक॥

नृप-माता, मन्त्री तथा औ– रानी राजकुमार।
'चन्दन' राजा-सम करें, इन से हर व्यवहार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पय-भोजन, सत्संग औ, नृप-प्रदत्त सम्मान।
प्रिय-दर्शन 'चन्दन' कहे, चारों सुधा समान।।

रिपु नहिं 'चन्दन' लोभ-सा, निधि नहिं दान समान।
भूषण नहिं है शील-सा, तप-सा नहिं स्नान।।

रूपवान, बलवान औ, द्रव्यवान, विद्वान।
धर्म बिना 'चन्दन' कहे, चारों धूल समान।।

दया, सत्य, सन्तोष औ— 'चन्दन' शुद्धाचार।
लक्ष्मी लखती जिस जगह, देती डेरे डार।।

पाता 'श्रद्धावान' है— 'चन्दन' सम्यग्ज्ञान।
उत्तम करणी, कर्म-क्षय, आख़िर पद निर्वाण।।

पतिव्रता का जो करे, अय 'चन्दन' अपमान।
मिले उसे नहिं शान्ति, सुख, लक्ष्मी औ भगवान।।

बिन शशधर ज्यों शर्वरी, दिवस बिना ज्यों भान।
नृप बिन 'चन्दन' राज्य-ज्यों, मन्त्र-बिना गुरु जान।।

रोग-मीत औषधि कही, गृह-मीत मां-बाप।
धर्म मीत द्वय लोक का, नर्क मीत है पाप।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काम, क्रोध व लोभ है, चौथा है अज्ञान।
हिंसा के कारण कहे, 'चन्दन' चार प्रधान॥

चाहें 'चन्दन' लोग जो, सच्ची जीवन-जीत।
मौत, बुढ़ापा, रोग, भय— से मत हों भयभीत॥

स्वजन, पापी, मीत, रिपु— में जो भाव समान।
रखता है 'चन्दन' सदा, निश्चय ही कल्याण॥

तन का, मन का, वचन का, और उपधि का जान।
संयम चार प्रकार यों, कहें 'वीर भगवान'॥

निरभिमानी आदमी, सब को भारी भाय।
यशः, सम्पदा, ज्ञान, धन, 'चन्दन' चारों पाय॥

'चन्दन' चुग़ली, कटुवचन, झूठ और बकवास।
चारों ही को झूठ की, किस्म जानिये ख़ास॥

चेतन नाविक, नाव तन, है सागर संसार।
'चन्दन' चप्पू त्याग, ले, पहुंचो परले पार॥

'धर्म' विश्व का सार है, धर्म-सार है—'ज्ञान'।
ज्ञान-सार 'संयम' सुखद, संयम का 'निर्वाण'॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' ऋण, व्रण, औ अनल, चौथी कही कषाय।
थोड़े से ये हों अधिक, अधिक उपेक्षा पाय॥

'बंधा वैर से पुरुष जो', 'स्वच्छन्दी', 'खल' होय।
'चन्दन' चौथा 'आलसी', संग करो नहिं कोय॥

अय 'चन्दन' माता-पिता, यौवन, रूप अहो!
कभी किसीको क्या मिले, दूजी बार कहो?

'चन्दन' समझेंगे इसे, समझदार ही मर्द।
भोज, भजन, धन, भामिनी, भले नहीं बे-पर्द॥

जन्म, जरा का, रोग का, और मृत्यु का जान।
दु:ख हैं ये संसार में, 'चन्दन' चार महान॥

चो चाहों 'चन्दन' मिले, दिल का चैन-क़रार।
तजो सांझ का काम औ, सट्टा द्यूत, उधार॥

खाना, सोना, जागना, चौथे विषय-विकार।
अगर अधिक हों चार ये, 'चन्दन' रोग अपार॥

'चन्दन' रोना बाल-बल, वनिता - बल है हठ।
आगम बल है सन्त का, वनचर-बल है लट्ठ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रुद्ध मनुज राक्षस सदृश, महा भयंकर होय।
सत्य, स्नेह, लज्जा दया, 'चन्दन' चारों खोय ।।

किया हुआ हो आपने, यदि 'चन्दन' उपवास।
क्रोध, काम, निन्दा, अहं, के नहिं जाना पास ।।

सजे अकामी नहिं कभी, निस्पृह ले नहिं धन।
स्फुट वक्ता वंचक नहीं, मधुर मूढ़ नहिं जन ।।

सत्य, असत्य मिश्र फिर, चौथी है व्यवहार।
'पन्नवणा' बतला रहा, 'भाषा' 'चन्दन' चार ।।

मैत्री' और प्रमोद औ- 'करुणा' औ मध्यस्थ।
'चन्दन' चारों भावना, देतीं सौख्य समस्त ।।

'कन्दर्पी' 'अभियौगिकी, 'किल्विषिकी' 'आसुरी'।
'चन्दन' चारों भावना, समझो बहुत बुरी ।।

त्याग, त्रपा, तप, सत्य से, भूषित जो गुणवान।
'चन्दन' है वह देवता, कहने को इनसान ।।

पुण्य, पाप, परलोक औ, जो माने भगवान।
है वह सच्चा 'आस्तिक', कहते सब गुणवान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'ब्रह्मचर्य-सा तप नहीं', 'अभयदान-सा दान'।
'चन्दन' उत्तम वीर-सा, 'वचन न सत्य समान'॥

ग्रामांतर जाते जपें, पहले प्रभु का नाम।
'चदन' त्यागें क्रोध औ, आलस वा आराम॥

'चदन' इज़्ज़त, आबरू, नैतिकता औ त्याग।
जिनमें होते चार ये, वे जन हैं बड़ भाग॥

रतन, रजत या स्वर्ण के, 'चन्दन' सभी महान।
नहीं सादगी-सा मगर, गहना जग दरम्यान॥

दुष्टा पत्नी, मीत शठ, उत्तरदायक दास।
मृत्यु-तुल्य ही जानिये, सर्प-सहित गृह-वास॥

त्यागभाव, भय, चतुरता, चौथी 'चन्दन' लाज।
जिसमें नहिं ये चार हों, ऐसी तजो समाज॥

मीत विपद किंकर कर्म, निर्धनता में नार।
बान्धव संकट के समय, परखो 'चन्दन' चार॥

जहां न 'चन्दन' जीविका, जहां न बान्धव, मान।
जहां न विद्या प्राप्त हो, रहे न चतुर-सुजान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शैल-शैल माणक नहीं, गज-गज मोती नाहिं ।
वन-वन में चन्दन नहीं, साधू त्यों जग माहिं ॥

निर्धनता हो, कर्ज़ हो, अपनों से अपमान ।
विषम सभा 'चन्दन' कहे, चारों आग - समान ॥

पर घर प्रमदा, पतित नर, मन्त्री बिन भूपाल ।
नदी-तीर-तरु नष्ट हो, जल्दी 'चन्दन लाल' ॥

भाषण कहता देश को, कहे वंश आचार ।
'चन्दन' तन भोजन कहे, कहे प्रेम व्यवहार ॥

हरे उद्योग दरिद्रता, जप हरता है पाप ।
'चन्दन' मौन कलह हरे, जाग्रत भय-सन्ताप ॥

मूढ़ पुत्र, विधवा सुता, घर कलिहारी नार ।
बुरे गांव का वास—ये, दहें बिना अंगार ॥

तप, ताड़न, छेदन, घिसन— से ज्यों काँचन जान ।
त्याग, शील, गुण, कर्म से, 'चन्दन' नर-पहचान ॥

'नयनन-सी नहिं रोशनी,' 'बादल-सा नहिं नीर' ।
'प्रिय नहिं 'चन्दन' अन्न-सा', 'आत्म-जयी-सा वीर' ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'पत्नी तो हो पतिव्रता', 'आत्मज आज्ञाकार' ।
'धर्म-रुचि हो', 'स्वस्थता', स्वर्ग निशानी चार ॥

शील हरे दुर्गति, तथा— निर्धनता को दान ।
है हरती भव भावना, हरे ज्ञान अज्ञान ॥

'त्यागी को तृण जगत है', 'मन-जित जन को वाम ।
'तृण-सम मरना शूर को, 'ज्ञानी को सुरधाम' ॥

'वर्षा सागर में वृथा', 'धनवानों को दान' ।
'चन्दन' 'भोजन तृप्त को', 'दीपक दिन दरम्यान' ॥

'निर्धन धन चाहें सदा' 'मीठे वचन जहान ।
'चन्दन' सुर सब नर-तनू, 'चाहें मुनि निर्वाण' ॥

सखा - अध्यापक-पत्नियां, तथा सासू, नृप-नार ।
अय 'चन्दन' संसार में, माता-सम ये चार ॥

'पशुओं में-श्वा', 'विहग में— कौवा' 'चन्दनलाल' ।
'मुनियों में-क्रोधी', तथा— 'पुरुष पिशुन चंडाल' ॥

भ्रमणशील मुनिवर, नृप, विप्र लहें सत्कार ।
अय 'चन्दन' हो नष्ट पर, भ्रमणशील हर नार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लखे-दोष नहिं स्वार्थी, कामी जात-कु-जात।
अहं-अन्ध नहिं अन्य को, जन्म-अन्ध दिन-रात॥

'करे कर्म भी आप ही', 'पाता फल भी आप'।
'चन्दन' अमता आप ही', 'बने आप निष्पाप'॥

धन से भाई-'बन्धु' है, 'चन्दन' धन से 'मित्र'।
पुरुष 'पुरुष' है 'विज्ञ' है, दुनिया अहो! विचित्र॥

पति, पत्नी, बेटा, पिता, जो भी करता पाप।
नहीं दूसरा भोगता, भोगे 'चन्दन' आप॥

'पति-पत्नी', 'दो सन्त' औ-'स्वामी-सेवक माहिं।
'हल-बैलों' के बीच से, 'चन्दन' जाना नाहिं॥

सत्य, दया का, प्रेम का, समता का व्याख्यान—
जहाँ नहीं, उसको नहीं, कहना 'धर्म-स्थान'॥

सत्य, दया का, प्रेम का, समता का व्याख्यान—
होते हों 'चन्दन' जहां, वे ही—'धर्म-स्थान'॥

ज्ञान, ध्यान, जप, त्याग का, करने को अभ्यास।
'चन्दन' सतियाँ, सन्त सब, करते 'वर्षावास'॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'सेवा', तथा 'सुशीलता', 'करुणा', 'पर-उपकार'।
जो 'चन्दन' मन मोह लें, बातें हैं ये चार ॥

'अतिशबाजी', 'भंगड़े', 'चन्दन' 'मदिरा', 'माँग'—
जहाँ न, वही विवाह है, बाक़ी तो सब 'सांग' ॥

'नवयौवन' 'फल' 'फूल' औ—'कांचन' लख एकान्त।
'चन्दन' बिरला वीर ही, रख सकता मन शान्त ॥

'अधम लोग धन चाहते', 'मध्यम जन-धन, मान'।
'चन्दन' उत्तम मान ही, 'साधू मुक्ति-स्थान' ॥

'चन्दन' चाहो मुक्ति जो, तजो विषय विष जान।
दया, सत्य को, शील को, पीओ सुधा समान ॥

रोगों में है पूतना, सुख में भोजन जान।
इन्द्रियगण में नयन, शिर—'चन्दन' सर्व-प्रधान ॥

सर्प, सिंह, मूर्ख मनुज, अन्यायी भूपाल।
नहीं जगाने चाहिये, चारों 'चन्दनलाल' ॥

दुग्ध-घृत, गुड़-ईख औ— पुष्प-गन्ध, तिल-तेल।
'चन्दन' ऐसे देह से, देही का है मेल ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वेषी, कामी, लालची, कड़बी ज़हर ज़बान।
ऐसे वक्ता के निकट– जाना पाप महान॥

शान्ति–शील–सन्तोष–युत, वाणी सुधा समान।
सद्वक्ता 'चन्दन' सदा, करे जगत–कल्याण॥

काम, क्रोध को, शोक को, और मोह को नष्ट–
करने को उद्यत रहो, 'चन्दन' कहता स्पष्ट॥

'सन्त-संग', 'स्वाध्याय' हो, 'विनय', 'विचार-विवेक'।
'चन्दन' होगा विरल ही, उस–सा गेही नेक॥

स-हृदयता, प्रसन्नता, अभिवादन, सत्कार।
'चन्दन' शिष्टाचार के, अंग कहे ये चार॥

दृढ़ आसन से कीजिये, जप, तप, पढ़ना ध्यान।
'चन्दन' चार प्रकार से, वश हो मन शैतान॥

मुख मुद्रा, अंग - चेष्टा, वाणी औ व्यवहार।
व्यक्तित्व-अभिव्यक्ति के, कारण 'चन्दन' चार॥

बहुत बोलता जो रहे, अय 'चन्दन' हर वक्त।
अकर्मण्य जानो तथा– अस्थिर, भीरु, अशक्त॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रूप व्यर्थ गुण हीन का, वंश दुष्ट का व्यर्थ।
दान बिना धन, धर्म बिन– नर तन का क्या अर्थ ?

ज्ञान, दान, तप, वीरता, लख कर कहीं महान।
चकित न हो, 'चन्दन' कभी, जग रत्नों की–खान॥

धन, धरनी, पत्नी, सखा, मिलते बार हज़ार।
पर, नर–तन 'चन्दन' नहीं, मिलता बारम्बार॥

नम्र पुत्र हो, पौत्र, धन, पतिव्रता हो नार।
'चन्दन' वासव-सम सुखी, कहे उसे संसार॥

सुख, साता, आजीविका, तथा–मान - सम्मान।
'चन्दन' चीजें चार ये, चाहे हर इनसान॥

जिज्ञासा, स्वाध्याय औ– अनुभव औ अभ्यास।
साधन ज्ञान–विज्ञान के, 'चन्दन' चारों ख़ास॥

अय 'चन्दन' बल, बुद्धि औ– तेज और उद्योग।
इन चारों के साथ ही, उन्नति करते लोग॥

बहुत शास्त्र, विद्या बहुत, अल्प काल, बहु विघ्न।
सार ग्रहण में हंस सम, हो 'चन्दन' संलग्न॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेरस-सी तो तिथि नहीं, प्रिय नहिं माँ-सी जान।
मन्त्र नहीं नवकार-सा, नहीं दया-सा दान ॥

दुष्ट-साथ 'चन्दन' तजें, भजें सु-सज्जन साथ।
सोचें जगत अनित्यता, धर्म करें दिन रात ॥

अति भोजन, आसन विषम, रात जागरण जान।
वेगों का अवरोध फिर, 'चन्दन' रोग-निधान ॥

मक्खी चाहे घाव को, धन चाहे भूपाल।
नीच कलह, शम सन्तजन- चाहें 'चन्दनलाल' ॥

भू-भूषण है सन्त जन, नारी का भर्तार।
तारा भूषण चन्द्र है, विद्या सर्व शृंगार ॥

सज्जनता, शालीनता, मिलनसार स्वभाव।
'चन्दन' और उदारता, विरले ही में पाव ॥

वृश्चिक-पुच्छ, सिर मक्षिका, दन्त व्याल विकराल।
दुर्जन के सर्वांग में, हो विष, 'चन्दनलाल' ॥

स्व-अवलम्बन, योग्यता, तन्मयता, विश्वास।
'चन्दन' चारों से रहे, सदा सफलता पास ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अय 'चन्दन' सौजन्य औ स्नेह, शील, सत्कार ।
इन्हें बताएं—शकल औ नयन, बयन, व्यवहार ॥

कुलटा सतियों से जले, दुर्जन लखकर सन्त ।
मूढ़ जले लख विज्ञको, निर्धन लख धनवन्त ॥

'चन्दन' लक्ष्मी, लाज औ— प्रज्ञा तथा विवेक ।
रहे न मद्यप के निकट, चारों में से एक ॥

बोले बिना बुलाय जो, बिना बुलाये जाय ।
पर-निन्दा, तारीफ़ निज, लघु-लक्षण बतलाय ॥

मधुर वचन, प्रभु-भक्ति औ दया, दान से प्यार ।
स्वर्गागत जन में लखें, मुख्य चिह्न ये चार ॥

भूख हरे जो अन्न है, नीर हरे जो प्यास ।
कष्ट हरे बान्धव वही, सुत जो-चरणन-दास ॥

पीना हो तो क्रोध पी, लेना हो ले ज्ञान ।
गम खा खाना हो अगर, देना हो दे दान ॥

कहना हो तो सत्य कह, रखनी हो रख लाज ।
तजनी हो तज ईर्ष्या, छोड़ प्राण पर-काज ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अय 'चन्दन' हो जिस तरह, चपला का चमकार।
तन, धन, यौवन, आयु ये, कहे क्षणिक हैं चार॥

हों शिक्षक माँ-बाप जो, 'चन्दन' शील-निधान।
प्रेम, सत्यता, धीरता, गुण-युत हो सन्तान॥

मेघ नम्र नव नीर पा, सन्त नम्र पा ज्ञान।
पादप पा फल नम्र हों, नम्र सदा कुलवान॥

'चन्दन' मर्घट, रोग, दुख, और धर्म के स्थान।
जगे भाव जो स्थिर रहें, हो निश्चय कल्याण॥

मनस्ताप, अपमान औ– गेह-दोष, धन-नाश।
समझदार 'चन्दन' नहीं, करते कभी प्रकाश॥

सुनो अधिक, बोलो स्वल्प, रहो शान्त, गम्भीर।
'चन्दन' चन्दा-सी सदा, चमकेगी तक़दीर॥

लख पथ जो 'चन्दन' चले, सबको भारी भाय।
हिंसा, ठोकर से बचे, गिरा माल मिल जाय॥

आशा, साहस, धैर्य फिर, अय 'चन्दन' उत्साह।
है मानव-उत्कर्ष की, चारों सीधी राह॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुनिया में आनन्द का, जो हो गाना गीत।
हर्ष, अमर्ष, उद्वेग, भय, चारों 'चन्दन' जीत॥

प्रिय जो 'चन्दन' भूप का, सर्प, मूढ़, परनार।
रहे दूर इन चार से, यदि हो सुख दरकार॥

दया, सत्य औ सन्त औ— 'चन्दन' अपना देश।
चारों से ही कीजिये, प्रेम हमेश विशेष॥

बेकारी, मंहगाई औ— शोषण, भ्रष्टाचार।
'चन्दन' आज अशान्ति के, ये ही ज़िम्मेवार॥

जीवन, वनिता, वित्त औ— चौथा भोजन जान।
गया न इनसे तृप्त हो, कोई भी इनसान॥

शकट पांच, दश अश्व से, हाथी हाथ हज़ार।
दुर्जन का तो देश ही, 'चन्दन' शीघ्र बिसार॥

दशन, अंगुली, नख, त्वचा, सूक्ष्म 'चन्दन' चार।
कहें सन्त अत्यन्त वे, पुण्यवन्त नर-नार॥

पृष्ठदेश, जंघा तथा, 'चन्दन' ग्रीवा, कान।
अंग ह्रस्व शुभ चार ये, कहता तनु-विज्ञान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' जिसकी यश-कथा, कहता जगत तमाम।
सत्य, तथ्य, सम्यक्, ऋतं, चार 'सत्य' के नाम॥

अय 'चन्दन' मोती सदृश, मुख का जो शृंगार।
दन्त, दशन, रद, रदन ये, नाम 'दन्त' के चार॥

जिस-सा 'चन्दन' और नहिं, बल-विक्रम का धाम।
दुग्ध, अमृत, पय, क्षीर हैं, मुख्य 'दूध' के नाम॥

दानशूर, तपशूर फिर, क्षमा, युद्ध के शूर।
अय 'चन्दन' हैं इस तरह, चार 'शूर' मशहूर॥

धर्म, मोक्ष 'चन्दन' तथा, अर्थ, काम भी जान।
पुरुषार्थ[1] ये चार जो, हर चाहे इनसान॥

धर्म, मोक्ष सुखकार हैं, अर्थ, काम दुखकार।
पुरुषार्थ ये समझिये, अय 'चन्दन' यों चार॥

गेय, गद्य औ पद्य औ, चौथा है फिर कथ्य।
काव्य-भेद हैं चार ये, कहता 'चन्दन' सत्य॥

---

१. पुरुष का प्रयोजन ही पुरुषार्थ है। चारों पुरुषार्थों में मोक्ष ही परम पुरुषार्थ माना गया है। इसी के आराधक पुरुष ही 'उत्तम पुरुष' माने जाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वातज, पित्तज, कफ़ज फिर, सन्निपात से जान।
चार किस्म की व्याधियां, 'चन्दन' जग दरम्यान ॥

दर्शन, भाषण श्रवण हैं, और स्मरण भी जान।
कारण चारों 'हास्य' के, अय 'चन्दन' पहचान ॥

'आगम' औ प्रत्यक्ष औ, 'अनुमान', 'उपमान'।
'चन्दन' चार 'प्रमाण' ये, गए भाख भगवान ॥

'प्राण' 'भूत' 'चन्दन' तथा, 'जीव' 'सत्व' फिर जान।
'जीव-भेद' हैं चार ये, हने न चतुर सुजान ॥

अपलक लोचन, तेज तन, पुष्पमाल अम्लान।
भू से ऊंचा कुछ रहे, चिह्न 'देव-पहचान' ॥

पण्डक, नन्दन, सौमनस, भद्रशाल सुखकार।
जम्बूद्वीप—सुमेरु के, 'चन्दन' 'बन' ये चार ॥

द्रव्य, क्षेत्र औ काल औ, चौथा 'चन्दन' भाव।
बिना विचारे चार ये, करिये नहिं बर्ताव ॥

जिनकी महिमा का नहीं, अय 'चन्दन' कुछ पार।
दर्शन, ज्ञान, चरित्र, तप, कहे मुक्ति-मग चार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दर्शन, वीर्य, ज्ञान, सुख, 'भाव प्राण' यों चार।
पन्नवना पद एक में, है 'चन्दन' विस्तार॥

सज्जनता की, सत्य की, शील, दया की खान।
लाखों में ही एक वा, मिलते दो इन्सान॥

झूठा, चोर, जुआरिया, चुग़लखोर जन और।
चारों का विश्वास मत, करो किसी भी ठौर॥

कैसा भोजन भूख बिन, कैसा स्वर बिन गीत?
कैसा मानव धर्म बिन, कैसी मन बिन प्रीत?

हंसना सीखो सुमन से, भंवरों से मधु गीत।
जल से 'चन्दन' स्वच्छता, नीर-क्षीर से प्रीत॥

सद्-सेवा, सम-मित्रता, वनिता घर दरम्यान।
बनियाई व्यवहार में, 'चन्दन' सजें महान॥

कोकिल का स्वर रूप है, पतिव्रत रमनी–रूप।
विद्या रूप कुरूप का, क्षमा तपस्वी-रूप॥

मौन मूर्ख का बल सदा, निर्बल-बल भूपाल।
चोरों का बल छल सदा, रोना है बल बाल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सरल-सुशीला भामिनी, बेटा विज्ञ–विनीत ।
गेही के दुख-शोक हर, अय 'चन्दन' धन, मीत ॥

बहुत शास्त्र, विद्या बहुत, अल्पकाल, बहु विघ्न ।
सार ग्रहण में हंस सम, हो 'चन्दन' संलग्न ॥

समकित, श्रुत औ देशव्रत, सर्व-विरति फिर जान ।
'चन्दन' चार प्रकार की, 'सामयिक' तू मान ॥

सूत्र-श्रवण श्रद्धा-सहित, सत सुपात्र को दान ।
सम्यक्त्वी, बारह व्रती, 'चन्दन' 'श्रावक'[१] जान ॥

पिता, मात सम, भ्रात सम, सौत[२], अभिन्न[३] समान ।
श्रावक चार प्रकार यों, कहें स्वयं भगवान ॥

खरकण्टक[४] सम एक है, दूजा स्तम्भ[५] समान ।
दर्पण[६] ध्वजा[७] समान फिर, श्रावक–भेद बखान ॥

---

१. देशव्रती को 'श्रावक' कहते हैं । जो प्रतिदिन प्रातःकाल सम्यग्दर्शन को प्राप्त किये हुए साधुओं के समीप प्रमाद-रहित होकर श्रेष्ठ चरित्र का व्याख्यान सुनते हैं वे 'श्रावक' कहलाते हैं ।

२. साधुओं में सदा दोष देखनेवाले और उनका बुरा करनेवाले ।

३. मित्र की तरह दोषों को ढकने वाले और गुणों का प्रकाश करनेवाले ।

४. जो श्रावक समझाने पर भी अपने दुराग्रह को नहीं छोड़ता बल्कि समझानेवाले को कठोर वचन रूपी कांटों से कष्ट पहुंचाता है ।

५. स्तम्भ समान ।

६. जो साधुओं से उत्सर्ग, अपवाद आदि आगम-सम्बन्धी भावों को यथार्थ रूप से ग्रहण करता है ।

७. ध्वजा के समान धर्म में अस्थिर मनवाला ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ठाणांग ठाणा चार में, किया 'वीर' विस्तार।
सुनिये 'चन्दन' ध्यानसे, पुरुष कहें यों चार॥

रूप नहीं है–शील है, शील नहीं है रूप।
रूप शील दोनों नहीं, दोनों कहीं अनूप॥

ठाणांग ठाणा चार में, किया 'वीर' विस्तार।
सुनना 'चन्दन' ध्यान से, कहे 'पुष्प' यों चार॥

'सुन्दर नहीं–सुगन्ध है', 'सुन्दर, नहीं सुगन्ध'।
सुन्दर और सुगन्ध है', इक दोनों से मन्द॥

ठाणांग ठाणा चार में, किया 'वीर' विस्तार।
सुनना 'चन्दन' ध्यान से, 'मेघ' कहे यों चार॥

गर्जे इक–बरसे नहीं, बरसे इक, नहिं गाज।
गर्जे—बरसे, एक से— वर्षा, नहिं आवाज़॥

ऐसे ही भगवान ने, पुरुष कहे हैं चार।
ठाणांग ठाणा चार में, है 'चन्दन' विस्तार॥

'मानी इक, दानी नहीं', 'दानी इक, नहिं मान'।
दानी-मानी एक है, इक है सिफ़र समान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'ठाणांग' ठाणा चार में, किया 'वीर' विस्तार।
सुनना 'चन्दन' ध्यान से, कहे 'मेघ' फिर चार॥

'बरसे खेत, अखेत न', 'एक अखेत, न खेत'।
'चन्दन' खेत-अखेत इक', 'इक नहिं खेत-अखेत'॥

ऐसे ही भगवान ने, चार कहे दातार[1]।
समझ स्वयं ही लें इसे, समझदार नर-नार॥

श्रोत्रेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, स्पर्शन चौथी घ्राण।
चार प्राप्यकारी[2] कहीं, इन्द्रिय श्री भगवान॥

महारंभ, परिग्रह महा, 'चन्दन' मांसाहार।
पंचेन्द्रियवध-नरक के, कारण मोटे चार॥

कूड़-कपट, पाखण्ड औ- कूड़-तोल व माप।
चारों गति तिर्यंञ्च के, कारण 'चन्दन' साफ़॥

१.—१-कोई पुरुष पात्र को दान देता है, पर कुपात्र को नहीं।
२-कोई पुरुष पात्र को दान नहीं देता, पर कुपात्र को देता है।
३-कोई पुरुष पात्र और कुपात्र दोनों को दान देता है। और—
४-कोई पुरुष पात्र और कुपात्र दोनों को ही दान नहीं देता।

२.—विषय से सम्बद्ध होकर उसे जाननेवाली इन्द्रियाँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डाह रहित हो, सरल हो, करुणाशील, विनीत।
मानवगति में गमन की, है यह 'चन्दन' रीत॥

श्रावक, सन्त सराग जो, औ निर्जरा अकाम।
बाल तपस्या से मिले, अय 'चन्दन' सुर-धाम॥

भय, मैथुन औ परिग्रह, चौथी है आहार।
केवल ज्ञानी ने कही, 'संज्ञा'[1] 'चन्दन' चार॥

निर्बलता से, कर्म से, श्रावण-स्मरण भय-बात।
'भय-संज्ञा' के चार हैं, कारण जग विख्यात॥

मोह उदय, वपु-पुष्टता, काम-कथा, स्मर-स्मरण।
'मैथुन-संज्ञा' के कहे, कारण चार कथन॥

दौलत-दर्शन, स्मरण या:- लोभ-वृत्ति या कर्म।
'परिग्रह-संज्ञा' के कहे, कारण चारों परम॥

भोजन, दर्शन, स्मरण या- होते खाली पेट।
क्षुधावेदनीय कर्म से, 'भोजन-संज्ञा' सेठ!

---

१. कर्मोदय के प्राबल्य से होनेवाली अभिलाषा—इच्छा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैथुन, भोजन, परिग्रह, 'चन्दन' चौथी भीत।
उत्तरोत्तर संज्ञा अधिक, नारकियों की रीत॥

परिग्रह औ मैथुन पुनः– 'चन्दन' भय, आहार।
उत्तरोत्तर संज्ञा अधिक, तिर्यञ्चों में चार॥

भय, भोजन औ परिग्रह, मैथुन चौथी जान।
उत्तरोत्तर संज्ञा अधिक, मानव गण में मान॥

भोजन, भय, मैथुन पुनः, और परिग्रहवान।
उत्तरोत्तर संज्ञा अधिक, देवगणों में जान॥

क्रोध, मान, माया, तथा– चौथा है फिर लोभ।
'चन्दन' चार कषाय[1] ये, भरें हृदय में क्षोभ॥

चार किस्म का 'क्रोध' है, चार किस्म का 'मान'।
चार किस्म का 'लोभ' 'छल', 'चन्दन' दुख की खान॥

क्रोध-क्षमा से जोतिये, और विनय से मान।
माया-सरल स्वभाव से, लोभ-सबर से जान॥

क्रोध अधिक है नरक में, अधिक मनुज में मान।
माया पशुओं में अधिक, लोभ देव-दरम्यान॥

---

१. कषःसंसारस्तस्य आयो लाभो येभ्यस्ते कषायाः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'अनाभोग[1] निर्वतित' इक, 'अनुपशान्त[2]', 'उपशान्त[3]'।
'आभोगनिर्वतित[4]' है तथा, 'क्रोध' चार यों भान्त ।।

राज, भात, वनिता तथा- देशकथा फिर और।
विकथाएं[5] 'चन्दन' कही, दुख-दाता हर ठौर ।।

आक्षेपणी[6], विक्षेपणी[7], संवेगनी[8], निर्वेद[9]।
'धर्म-कथा[10]' चारों हरें, अय 'चन्दन' दुख-खेद ।।

---

१. क्रोध के विपाक को न जानते हुए जो क्रोध किया जाता है।
२. उदयावस्था में रहा हुआ क्रोध।
३. जो क्रोध सत्ता में हो, किन्तु उदयावस्था में न हो।
४. पुष्ट कारण होने पर यह सोच करके कि ऐसा किये बिना इसे शिक्षा नहीं मिलेगी, जो क्रोध किया जाता है।
५. आध्यात्मिक अर्थात् संयम-जीवन को दूषित करनेवाली विरुद्ध एवं भ्रष्ट कथा। 'विरुद्धा विनष्टा वा कथा-विकथा'-आचार्य हरिभद्रः।
६. श्रोता को मोह से हटाकर तत्त्व की ओर आकृष्ट करनेवाली कथा।
७. श्रोता को कुमार्ग से सन्मार्ग में लाने वाली कथा।
८. विपाक की विरसता बताकर श्रोता में वैराग्य उत्पन्न करने वाली कथा।
९. इह लोक एवं परलोक में पाप-पुण्य के शुभाशुभ फल को बताकर संसार से उदासीनता उत्पन्न करानेवाली कथा।
१०. दया, दान, क्षमा आदि धर्म के अंगों का वर्णन करनेवाली कथा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणिम[1], धरिम[2] औ मेय[3] औ– परिच्छेद्य[4] है अन्य।
'ज्ञाता' में कही चार यों, 'चन्दन' चीजें पण्य[5]॥

'चन्दन' क्रिया, अक्रिया फिर, विनय और अज्ञान।
ऐसे चार प्रकार के, 'वादी' जग दरम्यान॥

औत्पातिकी, वैनयिकी, कार्मिकी सुखकार।
'चन्दन' पारिणामिकी, कही बुद्धियां चार॥

भोभर सम, अंगार सम, शीत, शीत-भण्डार।
अय 'चन्दन' हैं नरक में, चार किस्म आहार॥

कंकोपम, विलोपम पुनः, यथा मांस चण्डाल।
सुतमांसोपम–ढोर का, भोजन 'चन्दनलाल'॥

अशन, पान, खादिम पुनः, स्वादिम जानो और।
चार मनुज-आहार ये, कीजे 'चन्दन' गौर॥

---

१. *जिस चीज़ का गिनती से व्यापार हो। जैसे नारियल आदि।*
२. *जिस चीज़ का तराजू से तोल कर लेन-देन हो। जैसे गेहूं आदि।*
३. *जिस चीज़ का व्यवहार पायली, हाथ, गज़ आदि से नाप कर होता है।*
४. *गुण की परीक्षा कर जिस चीज़ का मूल्य स्थिर किया जाता है और बाद में लेन-देन होता है। जैसे जवाहरात।*
५. *भाण्ड (पण्य-वस्तु)*

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श ये, शुभ हों जिस में चार।
'चन्दन' ऐसे सुर सभी, हैं करते आहार ॥

अम्बर पर घनवात है, घनोदधि फिर जान।
और घनोदधि पर धरा, उस पर सकल जहान ॥

भले निकट न दूर ये— गुरु, नृप, नार, अनल।
अधिक निकट से नाश हो, अधिक दूर न फल ॥

शृंगी, नखी, शस्त्री तथा, पत्नी पर की जान!
चारों का विश्वास नहिं, कीजे चतुर-सुजान!

स्वर्ण सुगन्ध न ईख फल, चन्दन में नहिं फूल।
सिन्धु सलिल मीठा नहीं, किसकी कहिये भूल?

अतिक्रम, व्यतिक्रम और फिर, तीजा है अतिचार।
अणाचार, यों दोष हैं, 'चन्दन' चार प्रकार ॥

गुप्त अंग, ग्रीवा तथा, जांघ, पीठ ये चार।
'चन्दन' जिसके ह्रस्व हों, बिलसे द्रव्य अपार ॥

विस्मय, उद्भुत, आश्चर्य, चित्रम् चौथा जान।
जाने 'अद्भुत' नाम ये, 'चन्दन' चतुर-सुजान ॥

। २०९ दोहे सम्पूर्ण।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो देंगे सब जगत को,
नव जीवन—सन्देश ।
पांच बात के दोहरे,
'चन्दन' करता पेश ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पांच बात

प्रेम, अहिंसा; शान्ति औ- शील, सत्य-सन्देश।
'चन्दन' जो हैं दे गये, जय-जय 'वीर' जिनेश॥

सदाचार हो, सत्य हो, दमन दया हो, दान।
कुछ भी तब 'चन्दन' कहो, कठिन कहां कल्याण?

सच्चे, सरल, सुशील औ- करुणावन्त, विनीत।
बन कर 'चन्दन' लीजिये, जीवन-बाज़ी जीत॥

'चन्दन' दया, उदारता, शान्ति, शील, उपकार।
पांच गुणों के बिन सभी, नर-जीवन बेकार॥

गाँव, नगर 'चन्दन' तथा, वन, पर्वत, उद्यान।
सन्त जहां हों विचरते, वे सब स्वर्ग समान॥

क्रोध, काम, छल, लोभ को, करदे 'चन्दन' नष्ट।
सन्त वही जो दे नहीं, कभी किसी को कष्ट॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सेवा, पर उपकार, तप; त्याग और वैराग।
'चन्दन' जिसमें पांच ये; उस-सा नहिं बड़ भाग॥

अय 'चन्दन' किस बात का, करे मान नादान !
तन,धन, बल, विद्या, हुसन, चपला-चमक-समान॥

अशुभ, अनल,आपत,तपन, और वस्तु बारीक।
अधिक पांच ये देखना अय 'चन्दन' नहिं ठीक॥

पाना चाहे शान्ति, सुख, जो 'चन्दन' इनसान।
तजे स्पृहा वा कामना, माया, ममता, मान॥

ब्रह्मचर्य, संयम, तथा, सत्य तपस्या त्याग।
पांचों से 'चन्दन' करें, अधिक-अधिक अनुराग॥

गर्भ, जन्म, दीक्षा तथा– केवल औ निर्वाण।
अय 'चन्दन' 'अरिहन्त' के, ये 'कल्याणक' जान॥

शम, सम्वेग, निर्वेद औ, अनुकम्पा आस्तिक्य।
समकित-लक्षण पांच ये, ज्यों 'चन्दन' माणिक्य॥

हिंसा, मिथ्या, स्तेय औ– मैथुन, परिग्रह जान।
आंशिक इनका त्याग ही, 'चन्दन' 'अणुव्रत'[1] मान॥

---

१. महाव्रत की अपेक्षा छोटा व्रत अर्थात् एक देश त्याग का नियम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिंसा, मिथ्या, स्तेय औ, मैथुन, परिग्रह जान।
इनका पूरा त्याग ही, पांच 'महाव्रत'[1] मान॥

'चन्दन' कुल, गण, संघ औ– नवदीक्षित जो सन्त।
साधर्मिक–सेवा किये, कर्म-नाश अत्यन्त॥

पृथ्वी, अप, तेजस, पवन, वनस्पती है और।
पांच 'स्थावर' जीव ये, कीजे 'चन्दन' ग़ौर॥

एकेन्द्रिय औ द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय को फिर जान।
चतुरन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, 'जाति'[2] पांच पहचान॥

श्रोत्र, चक्षु, घोणा, रसन, स्पर्शन 'चन्दन' और।
पांच 'इन्द्रियां' जीत ये, सुखी बनो हर ठौर॥

पृथ्वी, पानी, अगन औ, मन्त्र, ब्रह्म[3] से जान।
'चन्दन' पांचों 'शुद्धियां' कही 'वीर' भगवान॥

---

१. देशव्रती श्रावक की अपेक्षा साधु के व्रत बड़े हैं इसलिये ये 'महाव्रत' कहलाते हैं।

२. अनेक व्यक्तियों में एकता की प्रतीति करानेवाले समान-धर्म को 'जाति' कहते हैं। जाति 'शब्द' का अर्थ समूह भी होता है।

३. ब्रह्मचर्य।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' मति[1], श्रुति[2], अवधि[3] औ–मनः[4] पर्यव ज्ञान।
केवलज्ञान[5] महान यों– कहे पांच हैं 'ज्ञान'॥

नरक तथा तिर्यञ्चगति, नर, सुर औ निर्वाण।
'चन्दन' गतियां पाँच ये, कही 'वीर' भगवान॥

कृष्ण, नील औ पीत औ– 'चन्दन' लाल सफ़ेद।
पांच कहे भगवान ने, वर्णों के ये भेद॥

खट्टा, मीठा, तिक्त औ– 'चन्दन' कटुक, कषाय।
'रस' के रसना के लिये, पांच भेद बतलाय॥

---

१. इन्द्रिय और मन की सहायता से योग्य देश में रही हुई वस्तु को जाननेवाला ज्ञान।

२. मति-ज्ञान के अनन्तर होनेवाला, और शब्द तथा अर्थ की पर्यालोचना जिस में हो ऐसा ज्ञान।

३. इन्द्रिय तथा मन की सहायता विना, मर्यादा को लिये हुए रूपी द्रव्य का ज्ञान करना।

४. इन्द्रिय और मन की सहायता के बिना मर्यादा को लिए हुए संज्ञी जीवों के मनोगत भावों को जानना 'मनः-पर्यव-ज्ञान' है।

५. मति आदि ज्ञान की अपेक्षा विना, त्रिकाल एवं त्रिलोकवर्ती समस्त पदार्थों को एक साथ एक ही समय में प्रत्यक्षवत् जानना 'केवल-ज्ञान' है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शब्द, रूप, रस, गन्ध औ– पंचम कहा स्पर्श।
अय 'चन्दन' ये 'कामगुण', करते हैं अपकर्ष॥

अहं, अमर्ष, प्रमाद औ– 'चन्दन' आलस, रोग।
जिसमें इनकी अधिकता, शिक्षा के नहिं योग॥

मात, पिता, गुरुदेव, नृप, और चिकित्सक जान।
'चन्दन' इनसे झूठ से, नष्ट होय इनसान॥

'चन्दन' बन्धन, दुर्व्यसन, दुख, दरिद्रता, रोग।
पाप-पेड़ के कटुक फल, कहते विद्वत् लोग॥

ज्ञान, दान, तप, वीरता, विनय विशेष लखाय।
'चन्दन' चकित न हों यहां, रतन बहुत मिल जायं॥

मद्यप, चोर, जुआरिया, वेश्या और कुलाल।
पांचों के घर भूल भी, जायं न 'चन्दनलाल'॥

दुराचार, जूआ, अलस, दुष्ट-संग, मधुपान।
अय 'चन्दन' धन-नाश के, कारण पांच प्रधान॥

चोरी, चौधर, चिलम औ– चालाकी, चाण्डाल।
पांच चकारों से बचे, चातुर 'चन्दनलाल'॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नासापुट, लोचन, भुजा, 'चन्दन' वक्षस्थल।
पेट, पांच ही ये भले, 'दीर्घ' और 'सरल'॥

कुन्तल, अंगुल्यग्र, रद, औ 'चन्दन' नख, चर्म।
अंग देह के पाँच ये, 'सूक्ष्म' उत्तम परम॥

धर्म, पुण्य, श्रेयस्, सुकृत, पंचम है वृष और।
नाम 'सुकृत' के सुखद ये, 'चन्दन' कीजे ग़ौर॥

लोक, जगत, जगती, भुवन, विष्टप पंचम जान।
'भूतल' के ये नाम हैं, 'चन्दन' पांच प्रधान॥

'चन्दन' वासर, दिन, दिवस, घस्र, अहः फिर जान।
जिसको दुनिया 'दिन' कहे, पांचों नाम प्रधान॥

शाखामृग, कपि, कीश औ- मर्कट, वानर पांच।
मुख्य 'कीश' के नाम ये, कहता 'चन्दन' साँच॥

घोणा, नासा, नासिका, गन्धवहा औ घ्राण।
मुख्य 'नासिका'-नाम ये, अमर कोष दरम्यान॥

दो घुटने, दो हाथ औ- 'चन्दन' शिर सुखदाय।
गुरु को वन्दन कीजिये, पांचों अंग झुकाय॥

। १४० दोहे सम्पूर्ण ।

पांच

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छः बात

६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बनें विश्व में आप जो,
सब के ही सिरमौर ।
दोहे अब 'छः बात' के,
पढ़िये पाठक ! और ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छः बात

'चन्दन' आत्मसंयमी, स्नेही, प्रतिभावान।
उद्यम, विद्या, बुद्धि से, यश पाता इनसान॥

शील, सरलता, नम्रता, विनय, विचार, विवेक।
महापुण्य से छः मिलें, नहिं पाए हर एक॥

पागल, बनिता, बालिका, बाल, वृद्ध, बीमार।
अधिक दया के छः सदा, हैं 'चन्दन' हकदार॥

विधवा, दीन, अनाथ औ- दुखिया, अन्ध, अपंग।
'चन्दन' भारी पाप है, छः को करना तंग॥

गुरु, गुरुणी, माता, पिता, सासु, श्वसुर ये लोग।
वृद्धावस्था में अधिक, 'चन्दन' सेवा-योग॥

साधु, ऋषि, योगी, तपी, ज्ञानी, ध्यानी जान।
कौड़ी के नहिं जो किया- नहिं चरित्र-निर्माण॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्यभिचारी औ चोर औ- मद्यप, जूएबाज़ ।
बचें नास्तिक, नीच से, 'चन्दन' दे आवाज़ ॥

निन्दा, लालच, ईर्ष्या, मोह, द्रोह, विद्वेष ।
लेता 'चन्दन' जीत जो; रहता सुखी हमेश ॥

मूर्ख, मछली, केकड़ा, मद्यप, नील, कु-नार ।
'चन्दन' छः की पकड़ से, है बचना दुश्वार ॥

पत्नी, बच्चे, स्वाश्रित, दीन, पुरुष, मां-बाप ।
करें स्नेह बर्ताव ही, छः से 'चन्दन' आप ॥

साधू, श्रावक, सत्पुरुष, रंक, वृद्ध, विद्वान ।
"'चन्दन' छः का भूल भी; मत करना अपमान ॥

जैन, बौद्ध, फिर न्याय है, सांख्य, वैशेषिक जान ।
'चन्दन' मीमांसा तथा, 'षट्दर्शन' पहचान ॥

पृथ्वी, अप, तेजस्, पवन, बनस्पती, त्रसकाय ।
'काय' कही छः 'वीर' ने, अय 'चन्दन' समझाय ॥

कृष्ण, नील, कापोत औ- तेजो, पद्म प्रधान ।
छठी शुक्ललेश्या समझ, कर लीजे कल्याण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्व, पश्चिम और फिर, उत्तर, दक्षिण जान।
ऊर्ध्व अधो, 'चन्दन' 'दिशा', छः भाखी भगवान ॥

चिन्ता, भय, उद्विग्नता, द्वेष, ईर्ष्या, क्रोध।
पाचन क्रिया का करें, षट 'चन्दन' अवरोध॥

सज्जन, स्नेही, मित्रजन, मात, पिता, परिवार।
'चन्दन' क्रोधी पुरुष को, छः देतें दुत्कार॥

जिसमें--विद्या, धर्म नहिं, शील न गुण, तप, दान।
'चन्दन' भू पर वे रहें, जंगल-जीव--समान॥

लोचन, नाक, ललाट औ, मस्तक, दन्त, हृदय।
अंग महा उत्तम कहे, 'चन्दन' उन्नत छः॥

शीर्ष, मस्तक, मूर्धा, उत्तमाँग, शिर, मुण्ड।
नाम 'शीश' के छः जहां-- सजे कृष्ण कच-झुण्ड॥

कच, कुन्तल व चिकुर औ- केश, शिरोरुह, बाल।
केशों के ये नाम छः, कहता 'चन्दन लाल'॥

श्रवण, शब्दग्रह, श्रुति तथा, कर्ण कहो या कान।
अय 'चन्दन' श्रव, श्रोत्र ये, कान-नाम छः जान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाट्य, नटन, नर्तन, नृत्य, लास्य व ताण्डव और।
मुख्य 'नृत्य' के नाम छः, रसिकराज-सिरमौर ॥

उद्भव,उत्पत्ति, जनम,जनु, और जनन,जनि जान।
मुख्य नाम छः 'जनम' के, अमरकोष–दरम्यान ॥

गन्धसार औ भद्रश्री, मलयज चन्दन जान।
गोशीर्ष, हरिचन्दनम्, 'चन्दन'–नाम बखान ॥

चिलम, चुरट, चण्डू, चरस, सुलफा औ सिगरेट।
'चन्दन' चातुर बन बचें, छः की बुरी लपेट ॥

सेवा, समता, सरलता, स्नेह, सादगी, सत्य।
सुख चाहो 'चन्दन' करो, छः ही पर अधिपत्य ॥

रुग्ण, तपस्वी, मूर्छित, साधू, बाला, बाल।
माने गए 'अवध्य' ये, छः ही 'चन्दन लाल' ॥

पाप, पुण्य, परलोक औ- शर्म, धर्म, भगवान।
'चन्दन' छः को भूलता, जाता अब इनसान ॥

कान, नयन, मुख, नासिका, त्वचा तथा मन और।
'चन्दन' चाहे स्वर्ग जो, छः जीते हर तौर ॥

॥ ३० दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सात बात

७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' जिनसे आपका,
स्वर्ग बने संसार।
'सात बात' के देखिये,
दोहे अब रसदार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सात बात

●

लज्जा, श्रद्धा, शील, श्रुत, प्रज्ञा, त्याग, संकोच।
असली 'धन' ये सात हैं, कहता 'चन्दन' सोच॥

चुग़ली, निन्दा, ईर्ष्या, क्रोध, काम, छल, मान।
'चन्दन' सातों में फंसा, मन भूले भगवान॥

पुत्र, मित्र, माता, पिता, पत्नी, भगिनी, भ्रात।
सातों साथी लोक के, चलें न 'चन्दन' साथ॥

स्नेह, श्रुति, संयम, वचन, सेवा, दृष्टि, विचार।
'सु' सातों के आदि जो, 'चन्दन' बेड़ा पार॥

सरस, सरल, फिर, सार्थक, हित, मित, संयत, शुद्ध।
वाणी से ही ज्ञात हो, 'चन्दन' मानव–बुद्ध॥

'चन्दन' दर्शन, ज्ञान, फिर– चरित्र, मन, वच, काय।
सप्तम है उपचार यों, 'विनय'–भेद बतलाय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समय, अवलिका, श्वास औ- प्राण, स्तोक व लव।
तथा महूर्त 'काल' के, भेद सात यों सब ॥

काश्यप, गौतम, वत्स औ, कुत्सा, कौशिक जान।
मंडव, वाशिष्ठ गोत्र' ये, 'चन्दन' सात प्रधान ॥

वीणा, वाणी, शास्त्र औ, शस्त्र, अश्व, नर, नार,।
बनते योग्य-अयोग्य ये, पा विशेष-आधार ॥

घम्मा, वंसा और फिर; सीला, अंजन जान।
रिट्ठा, मघा, माघवई, नरक-नाम पहचान ॥

सेहत, सुख, यश, धर्म, धन, बुद्धि और विश्वास।
'चन्द' 'मद्यप' सात खो, करता, नर्क निवास ॥

मद्य, मांस, आखेट, औ- द्यूत, स्तेय, परनार।
वेश्या, 'सातकुव्यसन' ये, दिखलाते यम-द्वार ॥

षडज, ऋषभ, गान्धार फिर, मध्यम और निषाध।
धैवत, पंचम, 'सात स्वर', 'चन्दन' रखिये याद ॥

मोर, कुकुट, अज, हंस; औ, हाथी, सारस और।
कोयल, क्रमशः सात स्वर, बोलें कीजे ग़ौर ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिह्वाग्र, हृदय, कण्ठ औ– जिह्वा-मध्य, कपाल।
दन्त-होंठ, फिर नाक, 'स्वर–स्थान' ये 'चन्दनलाल'॥

मादल, गोमुखी, शंख, औ– झालर, भेरी, ढोल।
दुर्दरी, क्रमशः सात स्वर, 'चन्दन' जड़ के बोल॥

पहला, दूजा, तीसरा, चौथा, सप्तम जान।
स्वर ये दें यश-लक्ष्मी, दो अघ-कलह-निधान॥

हाथ, पांव, काकुद, अधर, नाखुन, नयन, ज़बान।
सात जिन्हों के अरुण ये, 'चन्दन' सुखी महान॥

कृष्ण, नील, मेचक, असित, काला श्यामल, श्याम।
'चन्दन' हैं विख्यात ये, 'नील' रंग के नाम॥

पुहुप, पुष्प सुम, सुमन औ– फुल्ल, प्रसून सुजान!
कुसुम, 'पुष्प' के नाम ये, हैं कहते विद्वान॥

पुत्र, सूनु, अंगज, तनय, सुत, नन्दन, तनुजात।
नाम मुख्य ये 'पुत्र' के, 'चन्दन' जग-विख्यात॥

मन, मानस, हृत्, हृदय औ, स्वात्म चित्त व चेत।
'चन्दन' 'मन' के नाम ये, कहे सात हित हेत॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कमला, लछमी, लक्ष्मी, पद्मा, इन्दिरा जान।
और—श्री, पद्मालया, 'लछमी'—नाम वखान॥

कल्य, उष: औ अहर्मुख, प्रात:काल, प्रभात।
प्रत्यूष, प्रत्युष 'प्रभात' के, मुख्य नाम विख्यात॥

अनुकम्पा, करुणा, कृपा, दया 'घृणा, आक्रोश।
और–कारुण्य—नाम ये, 'करुणा' के निर्दोष॥

निर्धन हो; धनवान हो, वैरी अथवा मीत।
'चन्दन' छोटा, सम, बड़ा, सातों से कर प्रीत॥

शान्ति, शील, शम, शुद्धि औ— दया, सत्य, सन्तोष।
आदि 'अकार लगाइये', सातों ही गुण दोष॥

करतल, पदतल, तालु नख, जिह्वा, लोचन, अधर।
अंग सात शुभ लाल ये, कहते पण्डित प्रवर॥

सद्गुण, संयम, सुकृत, सच, समय, सन्त, सत्कार।
सज्जन क्षण भूलें नहिं, 'चन्दन' सात 'सकार'॥

दुराचार, दुर्भावना, द्रोह, मोह, छल, घात।
'चन्दन' और—असत्य ये, वैरी समझो सात॥

॥ ३० दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आठ बात

८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पढ़ने को 'चन्दन' मधुर,
मानवता का पाठ ।
दोहे पढ़िये आप अब,
जिनमें बातें आठ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आठ बात

तीर्थङ्कर, अरिहन्त, जिन, बीतराग, भगवान।
सुगत, सर्वज्ञ, मारजित, 'जिनवर'–नाम बखान ।।

सुख, दुख, वैरी, मीत में, मान और अपमान।
शीत, उष्ण में भाव सम, रखते सन्त महान ।।

सत्य, दया, दम, ब्रह्मचर्य, सम्यग्दर्शन, ज्ञान।
अय 'चन्दन' अस्तेय, तप, अंग 'शील' के जान ।।

हिंसा, चोरी, झूठ, छल, दुराचार, दुष्कर्म।
चुग़ली, निन्दा त्याग दे, जो चाहे सुख परम ।।

शील, छिमा, सम, दम, दया, विद्या, विनय, विवेक।
अय 'चन्दन' गुण अष्ट युत, वनिता विरली देख ।।

दम्भ, द्वेष, छल, क्लेश औ– लोभ, मोह, मद, मान।
'चन्दन' बचना आठ से, जो चाहो कल्याण ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बालक, भिक्षुक, नृप, अनल, दुर्जन, वेश्या, यम ।
'चन्दन' तस्कर जानते, औरों का दुख कम ॥

अतिसेवा, सोना अधिक, क्रोध, लोभ, व्यभिचार ।
आठ तजे विद्यार्थी; खेल, स्वाद, शृंगार ॥

सौजन्य, सच्चरित्रता, सत्य, अहिंसा, न्याय ।
शील, विनय, विश्वास ही, 'मानवधर्म' कहाय ॥

कुल, बल, श्रुत औ रूप, तप, जाति; लाभ फिर ज्ञान ।
ऐश्वर्य 'चन्दन' तथा, आठ बुरे ये 'मान' ॥

अहंकार 'चन्दन' तथा, क्रोध, लोभ, मोह, काम ।
राग, द्वेष, छल—आठ ये, रोकें अमृत—धाम ॥

शल्य, शस्त्र, शर, शूल, शठ, शाखी; शृंगी श्वान ।
'चन्दन' आठ 'शकार' से, दूर रहें मतिमान ॥

मुक्ति, मोक्ष कैवल्य औ— निःश्रेयस्, निर्वाण ।
अमृत, श्रेय, अपवर्ग—ये, 'मुक्ति'—नाम पहचान ॥

मगण, नगण, 'चन्दन' भगण, जगण, सगण फिर जान ।
यगण, रगण, औ तगण यों— आठों 'गण' पहचान ॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नौ बात

९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवन जिनसे यह बने,
निर्मल औ निष्पाप ।
करामात 'नव बात' की,
ज़रा देखिये आप ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नौ बात

अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उवज्झाय, अणगार।
दर्शन, ज्ञान, चरित्र, तप, 'चन्दन' 'नवपद' सार॥

'चन्दन' जीव, अजीव फिर, पुण्य, पाप, आस्रव।
सम्वर, निर्जरा, बन्ध औ- मोक्ष, 'तत्त्व'[1] यों नव॥

अन्न, पान, 'चन्दन' वसन, लयण, शयन, मन, वचन।
काय, प्रणाम, नव 'पुण्य' के, भेद कहे मन-हरण॥

अन्धा, निन्दक, नास्तिक; कृपण, पाप की खान।
कामी, क्रोधी, मूढ़, खल, 'चन्दन' मरे-समान॥

ब्राह्मी, भाषा, भारती, सरस्वती, व्याहार।
वाक, वचन वाणी, वचः, 'वचन'–नाम सुखकार॥

1. वस्तु के यथार्थ स्वरूप को 'तत्त्व' कहते हैं। इन्हें सद्भाव पदार्थ भी कहा जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुक्ता, मरकत, माणिक्य, पद्मराग, गोमेद।
वैडूर्य, हीरा, स्फटिक वा, लाल, 'रत्न'—नव भेद॥

त्रिविष्टप, त्रिदशालय, त्रिदिव, दिवौ, द्यौ जान।
नाक, स्वर्ग, सुरलोक, स्वः, 'स्वर्ग'—नाम पहचान॥

रजनी, निशा, निशीथिनी, तमित, तमस्विनी, रात।
क्षपा, शर्वरी, यामिनी, 'रात'—नाम विख्यात॥

अग्र:, अग्रिय, अग्रीय, उत्तम, प्रमुख, प्रधान।
मुख्य, वर्य, वरेण्य नव, नाम 'प्रधान'—बखान॥

कदाग्रही, कपटी, कुटिल, क्रोधी, कामी, क्रूर।
कायर, कृपण, कठोर से, रहना 'चन्दन' दूर॥

मोह, मान, माया, मृत्यु, मुख, मश, मद, मन, मार।
अय 'चन्दन' कल्याण हित, नव ये जीत 'मकार'॥

रवि, शशि, मंगल, सौम्य, गुरु; शुक्र, शनैश्चर जान।
राहु, केतु ये नव ग्रह, 'चन्दन' करे बयान॥

संतत, सतत, अश्रान्त; नित्य अनारत, अविरत और।
अजस्र, अनिश, अनवरत यों, 'नित्य'—नामकर गौर॥

॥ १३ दोहे सम्पूर्ण॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दश बात

१०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनसे जीवन का खिले,
मधुर सु-रम्य प्रभात।
दोहे देखें आप अब,
हर इक में 'दश बात'॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दश बात

खंत्ती, मुत्ती, आर्जव, मार्दव, संयम, ज्ञान।
सत्य, शौच, तप, ब्रह्मचर्य, 'श्रमण-धर्म' दश जान ॥

आलस, निन्दा, ईर्ष्या, काम, क्रोध, मद, मोह।
करें दोष दश मन मलिन, कपट, कुटिलता, द्रोह ॥

वत्सल, वीर, बीभत्स व, करुणा, हास्य, शृंगार।
शान्त, भयानक, रौद्र औ- अद्भुत 'रस' उर धार ॥

तीन पूर्वा, आर्द्रा, पुष्य, अश्लेषा, हस्त।
चित्रा, मूला, मृगशिरा, 'चन्दन' पठन प्रशस्त ॥

मनुष्य, मानुष, मनुज, नर, मानव, मर्त्य, पुमान।
पूरुष, पुरुष व पंचजन, 'पुरुष'—नाम दश जान ॥

महिला, अबला, अंगना, प्रमदा, वनिता, वाम।
ललना, कान्ता, कामिनी, रमणी, 'नारी'-नाम ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पण्डित, कोविद, सन्, सुधी, प्रज्ञा, धीर, धीमान।
'चन्दन' कवि, मनीषी, ज्ञः, 'पण्डित'–नाम बखान॥

दक्ष, चतुर, पेशल, कुशल, विज्ञ निपुण निष्णात।
पटु, प्रवीण, अभिज्ञ दश, 'चतुर–नाम विख्यात॥

मंजुल, मंजु, मनोज्ञ, कल, शोभन, रुचिर, ललाम।
चारु, मनोरम, सुषम-दश, 'सुन्दरता' के नाम॥

गृह, गेह, मन्दिर, सदन, सद्म, भवन, आगार।
निलय, निकेतन, आलय, 'गेह'–नाम उर धार॥

अमृत, जीवन, सलिल औ– उदक, आप, पय, क्षीर।
ये 'चन्दन' 'जल'–नाम कुछ, पुष्कर, पानी, नीर॥

वानर, वाघ, वराह, वर, वेश्या, वंचक, व्याल।
वक्र, व्याध, वाचाल से, बचना 'चन्दन लाल'॥

विक्रम, विद्या, बुद्धि, व्रत, विनय, विवेक, विचार।
वित्त, विजय, विज्ञान न, पाएं सब नर-नार॥

विग्रह, वैर, विरोध, वध, विपदा, व्याधि, विनाश।
'चन्दन' विषय, विषाक्त विष– के नहिं फटको पास॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विविध दोहे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवन जिनसे यह बने,
सफल आपका सब।
दोहे विविध प्रकार के,
देखें पाठक ! अब ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौबीसी

जो चाहो सुख-सम्पदा, जो चाहो कल्याण ।
निशदिन अ्रय 'चन्दन' जपो, चौबीसों भगवान ।।

प्रथम तीर्थंकर हुए, 'ऋषभदेव' भगवान ।
चरण-शरण ले तर गए, लाखों ही इनसान ।।

करने को संसार से, भव्य जनों को पार ।
'श्री अजित' जिनवर किया, 'चन्दन' धर्म-प्रचार ।।

किया अहिंसाधर्म को, जिनने जग विख्यात ।
जय-जय जिनवर तीसरे, 'चन्दन' 'सम्भवनाथ' ।।

राजा 'संवर' तात तो- 'श्री सिद्धार्थ' मात ।
नगर 'अयोध्या' के रतन, जय 'अभिनन्दन नाथ' ।।

'चन्दन' सम्यग् ज्ञान दे, गए तार संसार ।
'सुमतिनाथ' भगवान की, महिमा अपरम्पार ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनके तप पर,त्याग पर, 'चन्दन' जग कुर्बान ।
पण्डित-पूजित 'पद्मप्रभ', महकें पद्म समान ।।

वाणी के पैंतीस गुण, चौंतीस अतिशय साथ ।
विश्व-वन्द्य 'चन्दन' हुए, 'पार्श्वनाथ' जगनाथ ।।

'चन्दन' चमके चन्द्र-से, चन्द्रपुरी दरम्यान ।
जय-जय-जय जिन 'चन्द्रप्रभ,' सर्व ज्ञान-गुण-खान ।।

अद्भुत 'काकन्दी' नगर, थे 'सुग्रीव' भूपाल ।
'रामा' मां के 'पुष्पदन्त', जन्मे 'चन्दन लाल' ।।

शीतलता जिनसे मिले, अय 'चन्दन' दिन-रात ।
मन में मेरे वे बसें, जिनवर 'शीतलनाथ' ।।

नष्ट भ्रष्ट कर कर्म जो, पहुंचे भवजल पार ।
अय 'चन्दन' 'श्रेयांस' जिन, वन्दौं बारम्बार ।।

'वासुपूज्य' भगवान का, जो जन धरता ध्यान ।
पाप-ताप-सन्ताप से, सहज छुटे गुणवान ।।

'विमलनाथ' भगवान का, 'चन्दन' जप शुभ नाम ।
कहो कौनसा भक्त नहिं, पहुंचा अविचल धाम ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक सहस औ आठ थे, लक्षण शुभ अत्यन्त ।
सदा रहें जयवन्त वे, जिनवर 'श्री अनन्त' ॥

दया, सत्य जिसमें नहीं, धर्म न 'चन्दन लाल' ।
'धर्मनाथ जी' धर्म की, व्याख्या करी कमाल ॥

रोग महामारी मिटा, शान्ति हुई हर ओर ।
'शान्तिनाथ' भगवान को, है वन्दन कर जोड़ ॥

सहज बताया काटना, जिनने माया-जाल ।
'कुन्थुनाथ' भगवान को, नमो-नमो त्रैकाल ॥

नगर 'हस्तिनापुर' जहां, भूप 'सुदर्शन' जान ।
तारा जग शुभ जन्म ले, 'अरहनाथ' भगवान ॥

जो चाहे कल्याण तू, जो चाहे निर्वाण ।
रे मन! कर तू स्मरण नित, 'मल्लिनाथ' भगवान ॥

वन्दनीय संसार के, सर्वगुणों के धाम ।
'चन्दन' 'श्री मुनिसुव्रत', जपिये आठों याम ॥

जिनके सुमरन से खुले, स्वर्ग-मुक्ति का द्वार ।
'नमीनाथ' भगवान को, वन्दन लाखों बार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तोड़ा बन्धन ब्याह का, सुन पशुअन की टेर।
'नेमिनाथ' की दया पर, वारौं कोटि सुमेर॥

पीड़ा प्रेत-पिशाच की, कभी न फटके पास।
'चन्दन' जिनके घट रहे, 'पार्श्वनाथ' का वास॥

जिन से यज्ञों में रुका, जीवों का बलिदान।
'महावीर' भगवान पर, 'चन्दन' जग कुर्बान॥

पूज्य तीर्थंकर हुए, ये 'चन्दन' चौबीस।
चरणकमल का ध्यान धर, सदा झुकायें शीश॥

क्रोध, काम का था नहीं, जिन में नाम-निशान।
राग-द्वेष से रहित वे 'वीतराग' भगवान॥

पुण्य-प्रकृति 'चन्दन' बढ़े, घटे पाप की रेख।
दिन दुगुनी धन-सम्पदा, जपकर 'जिनवर' देख॥

बिना जपे नहिं कीजिये, कोई भी शुभ काम।
ऋद्धि-वृद्धि होती चले, जपने से शुभ नाम॥

सायं सोने से प्रथम, जग कर प्रातःकाल।
'चौबीसी' के नाम से, मंगल 'चन्दन लाल'॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महान-माला

'चन्दन' संगम देव ने, दीने कष्ट अनेक।
चकित हो गया 'वीर' की, अद्‌भुत समता देख ॥

सोए केवल दो घड़ी, श्रमण[1] 'वीर'[2] भगवान।
'चन्दन' देखे स्वप्न दश, उसी नींद दरम्यान ॥

गोशालक कु-शिष्य के, 'वीर' बचाए प्राण।
अय 'चन्दन' करुणार्णव[3], धन्य! धन्य! भगवान ॥

बेले-बेले तप सदा, ज्ञान-ध्यान-भण्डार।
बड़े शिष्य थे 'वीर' के, 'इन्द्रभूति'[4] अणगार[5] ॥

'अग्निभूति' ने 'वीर' से, समझ कर्म का मर्म।
दीक्षित हो संसार को, समझाया सद्धर्म ॥

---

१. महात्मा २. महावीर ३. अनुकम्पा के सागर
४. श्री गौतम स्वामी जी महाराज ५. गृह-त्यागी साधु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेतन, तन हैं भिन्न या; दोनों हैं फिर एक।
'वायुभूति' दीक्षित हुए, इसका समझ विवेक॥

अय 'चन्दन' जब हो गया, जड़ से संशय नाश।
श्रमण 'व्यक्तस्वामी' बने, महावीर के पास॥

मानव मर मानव बने, या 'चन्दन' कुछ और।
श्रमण 'सुधर्मा जी' बने, इसे समझ हर तौर॥

बन्ध, मोक्ष है या नहीं, इस पर करके वाद।
'मण्डित स्वामी जी' बने, वीर-शिष्य साल्हाद॥

देवों के अस्तित्व के, संशय का कर अन्त।
'मौर्यस्वामी जी' बने, महावीर के सन्त॥

नरक नहीं या है कहीं, उत्तर इसका पाय।
श्रमण 'अकम्पित जी' बने, मद-ममता छिटकाय॥

पाप-पुण्य है या नहीं, गुत्थी यह सुलझाय।
शिष्य 'अचलभ्राता' बने, महावीर पै आय॥

संशय जब परलोक का, मिटा मूल से सब।
'मेतार्यस्वामी' बने, शिष्य 'वीर' के तब॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संशय जब निर्वाण का, किया 'वीर' ने दूर।
मुनिवर बने 'प्रभास जी' हो हर्षित भरपूर।।

तीन वधाइयां 'भारत' को, मिलीं एक ही साथ।
'चन्दन' पर प्रभु-चरण में, प्रथम झुकाया माथ।।

चक्रवर्ति पहले हुए, जो भारत दरम्यान।
शीशभवन में ज्ञान पा, बने 'भरत' भगवान।।

चक्रवर्ति 'सागर' हुए, सुमतिविजय के नन्द।
पहुंचे 'चन्दन' मुक्ति में, काट कर्म के फन्द।।

धन्य! धन्य! फिर धन्य! वे, चक्रवर्ति 'मघवान'।
जो ले संयम कर गए, श्रय 'चन्दन' कल्याण।।

चक्रवर्ति 'चन्दन' अहो! सुन्दर 'सनत्कुमार'।
रूप-गर्व से पर पड़े, कीड़े मुख मंझार।।

'शान्ति' कुन्थु' 'श्रर' जिन हुए, चक्रवर्ति भूपाल।
तरे स्वयं भी, जगत भी– तारा 'चन्दनलाल'।।

जिनने मारी एक दिन, ताज-तख्त पर लात।
चक्रवर्ति 'चन्दन' हुए, 'महापद्म' विख्यात।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नैतिकता औ न्याय थे, 'चन्दन' जिनकी देन।
मुक्त सिधाए ताज तज, चक्रवर्ति 'हरिषेन'॥

राज-ताज तज कर किया, जिनने बेड़ा पार।
चक्रवर्ति 'जयसेन' को, वन्दन बारम्बार॥

महावीर भगवान का, सुन सच्चा उपदेश।
बन कर त्यागी तर गया, 'चन्दन' 'अलख' नरेश॥

जिनके 'चन्दन' चरण में, पड़ा इन्द्र भी आन।
भूप 'दशार्णभद्र'–सा, कौन करेगा मान!!

'चन्दन' 'संजय' भूप जब, खेलन गए शिकार।
दर्शन पा ऋषिराज का, लिए महाव्रत धार॥

संयम ले जिस दम डिगा, अथ 'चन्दन' 'कुण्डरीक'।
धार महाव्रत तर गया, धराधीश 'पुण्डरीक'॥

शोर न चूड़ी एक से, करतीं शोर अनेक।
'नमीराज' ऋषि बन गए, पाकर बोध-विवेक॥

देख बुढ़ापा बैल का, जगा हृदय वैराग।
अथ 'चन्दन' 'करकण्डु' नृप, अपनाया तप, त्याग॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्द्रध्वज के स्तम्भ, देख हाल-बेहाल ।
श्रमण बने पांचाल-पति, दक्ष 'द्विमुख' भूपाल ॥

आम्र-पेड़ की दो दशा, 'निग्गति' नयन निहार।
महाव्रती बन एकदम, तजा ताज गांधार ॥

'ऐवन्ता' के वाहवा ! कैसे निर्मल भाव ।
मुक्ति सिधाया तार कर, 'चन्दन' जल में नाव ॥

प्रथम स्वर्ग में जा लिया, जिसने शुभ अवतार ।
धन्य!'वीर' का शिष्य वह, 'तिष्यगुप्त' अणगार ॥

पहले भव का प्रेम जब, बतलाया भगवन्त ।
सुन करके हर्षित हुए, गौतम जी अत्यन्त ॥

गौतम जी से था जिन्हें, सरल स्नेह अत्यन्त ।
'खन्दक परिव्राजक' बना, महावीर का सन्त ॥

संन्यासी 'शुकदेव' कर, थावर्चा से वाद ।
शिष्य उन्हीं का बन गया, अय 'चन्दन' साल्हाद ॥

'कुँवर इलाची नट बना, मात-पिता घर छोड़ ।
'चन्दन' मुनिवर देख पर, फैंके बन्धन तोड़ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महावीर-वाणी सुनी, जगा हृदय वैराग।
'शालिभद्र' 'धन्ना' दिया, अरबों ही धन त्याग!!

ज्ञान जिन्हों से पा बना, श्रेणिक समकितवन्त।
आज 'अनाथो'-सा कहीं, मिलना मुश्किल सन्त ॥

जिसके चिन्तन-मनन से, बढ़ता प्रेम-प्रताप।
'गौतम' 'केशीश्रमण' का, धन्य! सुवार्तालाप ॥

न्याय को ही धर्म-पथ, महावीर बतलांय।
सु-श्रावक आनन्द से, 'गौतम' स्वयं खिमाँय ॥

धन्य ! धन्य मुनिराज हैं, 'जयघोष'-'विजयघोष'।
यज्ञ जिन्होंने जगत को, बतलाया निर्दोष ॥

'अर्जुनमाली' ने किया, कितना नर-संहार।
महाव्रत ले 'वीर' से, 'चन्दन' पहुंचा पार ॥

सन्त गुणी 'हरकेशवल', जन्मजात चाण्डाल।
तप-बल से सुर-नर झुके, चरणन 'चन्दनलाल'॥

क्षमावीर गम्भीर था, जैसा 'गजसुकुमाल'।
ऐसा कोई एक भी, सुना न 'चन्दन लाल' ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' 'चित' 'सम्भूत' थे, पांच भवों से साथ।
छठे जन्म में पर हुए, अलग-अलग द्वय भ्रात ।।

'बाहुबली' ने जिस समय, दूर किया अभिमान।
उसी समय ही हो गया, 'चन्दन' केवलज्ञान ।।

मृगावती का लाडला, 'मृगापुत्र' गुणवान।
संयम लेकर कर गया, अय 'चन्दन' कल्याण ।।

दो बेटे औ 'भृगु' 'यशा', 'कमला' नृप 'इषुकार'।
छः के छः ही कर गए, 'चन्दन' खेवा पार ।।

जिसने समताभाव से, थी खिचवाई खाल।
क्षमावान 'खन्दक' सदृश, मुनि नहिं 'चन्दनलाल' ।।

'विक्रम' गाथापति हुआ, राजगृही दरम्यान।
संयम लेकर कर गया, अय 'चन्दन' कल्याण ।।

सुनकर वाणी 'वीर' की, गया 'मकाई' जाग।
मुक्त सिधाया शेर वह, अय 'चन्दन' जग त्याग ।।

महावीर भगवान से, पांच महाव्रत धार।
'कासव' गाथापति हुआ, अय 'चन्दन' भव पार ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' सच्चा जब जगा, महावीर से प्रेम।
संयम लेकर तर गया, गाथापति वह 'क्षेम'॥

महावीर के चरण में, बनकर सच्चा सन्त।
मुक्ति सिधाया अन्त में, 'धृतिधर' धीरज वन्त॥

पंच महाव्रत ले किया, जिसने मुक्ति निवास।
धन्य! धन्य! साकेत के, गाथापति 'कैलाश'॥

जिन-सा त्यागी आज कल, मिलना मुश्किल अन्य।
गाथापति साकेत के, 'हरिचन्दन जी' धन्य!!

सरल 'महाबल कुँवर जी', निर्मल संयम पाल।
गए पांचवें स्वर्ग में, प्यारे 'चन्दनलाल'॥

महावीर भगवान के, पकड़ प्रेम से पांव।
तरे 'सुदर्शन सेठ' जी, जिनका वाणिया गांव॥

राजगृही का मान्य था, गाथापति जो 'मेघ'।
कर्म खपाए आठ ही, कर में ले तप-तेग॥

जिनके भाङ्गों का बड़ा, अद्भुत है अधिकार।
अय 'चन्दन' वे धन्य! थे, 'गंगिया जी' अणगार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' 'मण्डीपुत्र' थे, ज्ञान-रसिक अणगार।
समझा जिनवर 'वीर' से, कठिन क्रिया-अधिकार॥

मनका कांटा बदलते, पतन बना–उत्थान।
'कपिल केवली' की कथा, 'चन्दन' आलीशान!!

'विजय कुंवर' ने शील के, विजया के सुन भाव।
'चन्दन' संयम ले लिया, मन में भर कर चाव॥

'थावर्चा' था द्वारका– वासी सेठ कुमार।
संयम लेकर कर गया, 'चन्दन' बेड़ा पार॥

'बिम्बसार' कहिये उन्हें, या 'श्रेणिक' भूपाल।
निकल नर्क से 'जिन' प्रथम, होंगे 'चन्दनलाल'॥

श्रेणिक-सुत 'जालीकुंवर', 'कुंवर बयाली' और।
गए अनुत्तर स्वर्ग में, 'चन्दन' मुनि-सिरमौर॥

'चन्दन' 'उवाली कुंवर', 'पुरिससेन' गुणवन्त।
गए अनुत्तर स्वर्ग में, दोनों ही बन सन्त॥

'दीर्घदन्त' 'विहल्ल जी', औ 'वेहांसकुमार'।
'वारिसेन' आदिक तरे, 'चन्दन' संयम धार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' 'अभयकुमार जी, विनय - बुद्धि-भण्डार।
पहुंचे विजय विमान में, पंच महाव्रत धार॥

'राजगृही' शुभ नगर में, भद्रा करे निवास।
गया अनुत्तर स्वर्ग में, उसका सुत 'ऋषिदास'॥

पाया आ 'श्वेताम्बिका', भद्रा मां का प्यार।
गए स्वर्ग छब्बीसवें, 'चन्दन' 'चन्द्र कुमार'॥

श्रेणिक पितु मां चेलना, 'लष्ठदन्त' शुभ नाम।
संयम लेकर 'वीर' से, गया अनुत्तर धाम॥

'दीर्घसेन कुमार' के, हुआ हृदय वैराग।
गया अनुत्तर स्वर्ग में, अय 'चन्दन' जग त्याग॥

'महासेन' 'गुढ़दन्त जी', 'द्रुम','द्रुमसेन कुमार'।
गए अनुत्तर स्वर्ग में, पंच महाव्रत धार॥

काकन्दी जिसका नगर, भद्रा जिसकी मात।
गया अनुत्तर स्वर्ग में, 'सुनक्षत्र' विख्यात॥

'पुण्यसेन' 'सिंहसेन' औ- 'चन्दन' 'सिंहकुमार'।
गए अनुत्तर स्वर्ग में, तज दुनिया दुखकार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणी 'महासिंहसेन जी', 'शुद्धदन्त जी' और।
गए अनुत्तर स्वर्ग में, त्याग निभा हर तौर॥

'चन्दन' जिनके स्मरण से, होता बेड़ा पार।
महा तपस्वी धन्य! वे, 'धन्ना जी' अणगार॥

चोर सुधारे पांच सौ, तारे रिश्तेदार।
'जम्बू स्वामी' पर सदा, 'चन्दन' है बलिहार॥

'चन्दन' आचार्य 'प्रभव', हुए विश्व-विख्यात।
जैन-धर्म चमका गए, जम्बू के पश्चात्॥

'शय्यंभवाचार्य' धन्य! अल्प 'मनक'[1]—वयजान।
'दशवैकालिक' का किया, जिनने शुभ निर्माण॥

'चन्दन' मगध, विदेह औ— अंग देश मंझार।
'यशोशद्र' आचार्य वर, कीना अथक प्रचार॥

---

१. मनक मुनि शय्यंभवाचार्य के पुत्र भी थे और फिर शिष्य बन गए। विशिष्ट ज्ञान से उनकी षट मास आयु शेष जानकर उनके कल्याण के लिये पूर्व साहित्य में से दशवैकालिक सूत्र का संकलन किया। जिसका रचना-काल वीर-निर्वाण सं० ८२ के आस-पास माना जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थूलिभद्र जिनके हुए, शिष्य महा गुणवान।
आचार्य 'सम्भूतिविजय', जैन-धर्म की शान ॥

'भद्रवाहु' श्रुतकेवली, आगम — टीकाकार।
'भद्रबाहु-संहिता' लिखी, ज्योतिष का भण्डार ॥

जिस गणिका के था किया, बारह वर्ष निवास।
'स्थूलिभद्र' ने श्रमण बन, बोध दिया जा ख़ास ॥

हुए 'महागिरी जी' बड़े, महाचार्य गुणवान।
किया पुन: जिनकल्प का, अथ 'चन्दन' उत्थान ॥

आचार्य 'सुहस्ति' हुए, बहुत बड़े विद्वान।
'सम्प्रति' नृप आ कर झुका, चरण कमल दरम्यान ॥

आचार्य 'सुस्थित' गुणी, ज्ञानी हुए महान।
तप कर भुवनेश्वर निकट, पाया स्वर्ग-विमान ॥

आचार्य 'सिंहगिरी' जिन्हें, जाति स्मरण था ज्ञान।
कहना 'चन्दन' चाहिये, जैनधर्म की शान ॥

दीक्षा से पहले जिन्हें, जाति-स्मरण था ज्ञान।
विज्ञ 'वज्रस्वामी' हुए, आचार्य गुणखान ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'वज्रसेन' आचार्यवर, पुण्यवन्त – गुणवन्त ।
शासन जिनसे जैन का, था चमका अत्यन्त ।।

श्री 'देवर्द्धिगणी' गुणी, 'क्षमाश्रमण' पदधार।
नगर 'वल्लभी' में किया, सम्मेलन सुखकार ।।

मूर्ति-पूजा का नहीं, आगम बीच विधान ।
'चन्दन' 'लौंकाशाह' ने, साफ़ किया ऐलान ।।

'चन्दन' मिले उदाहरण, और न ऐसा अन्य ।
किया सिंहासन शूलि का, 'सेठ सुदर्शन' धन्य !!

'चन्द्रगुप्त' थे सुप्त जब, अर्द्ध निशा दरम्यान ।
देख स्वप्न सोलह हुए, अय 'चन्दन हैरान ।।

'चन्दन' 'केशी श्रमण' से, पाकर बोध-विवेक ।
भूप 'प्रदेशी' नास्तिक, बना आस्तिक-नेक ।।

यात्रा, यज्ञादिक-विविध, 'चन्दन' प्रश्न चलाय ।
'सोमल' श्रावक 'वीर' का, बना बहुत हर्षाय ।।

'चन्दन अस्सी सहस सब, जिसके था गोवंश ।
सु-श्रावक 'आनन्द' ज्यों, पक्षीगण में हंस ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरक्त सब संकट सहे, रहा दृढ़ी हर तौर।
'कामदेव-सा' कठिन है, श्रावक मिलना और।।

चढ़ा धर्म का रंग शुभ, जिस पर जी ! भरपूर।
अय 'चन्दन' 'चुलनीपिता', श्रावक था मशहूर।।

जिनका वर्णन खुद किया, महावीर भगवन्त।
'सुरादेव' श्रावक हुए, अय 'चन्दन' गुणवन्त।।

'चुल्ल शतक' श्रावक गुणी, फंसा देव के जाल!
आखिर पहुंचा स्वर्ग में, समकित व्रत संभाल।।

हुआ 'कुण्डकोलिक' बड़ा, श्रावक भी गुणवान।
किया निरुत्तर देवता, पाया स्वर्ग विमान।।

गोशाला के जाल में, फंसा न चन्दन लाल।
महावीर भगवान का, दृढ़ श्रावक 'शकडाल'।।

सूत्र 'उपासकदशा' में, जिसका विशद बयान।
'महाशतक' श्रावक हुआ, 'राजगृही' दरम्यान।।

जिस-सा मिलना है कठिन, समकित-व्रत अनुरक्त।
थे 'नन्दिनीपिता' बड़े, महावीर के भक्त।।

धर्म-कर्म हित बोलना, अधिक पाप में मौन।
श्रावक 'श्री सालिहिपिया', जैसा 'चन्दन' कौन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुण्यपर्व-पच्चीसी

चैत्र कृष्णा अष्टमी, जब-जब भी बस आय ।
'ऋषभ-जयन्ती'[1] जगत यह, 'चन्दन' मुदित मनाय ।।

जिसे भूलते जा रहे, भारतवासी लोग ।
'चन्दन' 'सम्वत् विक्रमी', नहीं भूलने योग ।।

'राम-जयन्ती' आपको, कहती बनना राम ।
जुल्म और अन्याय का, कभी न लेना नाम ।।

'वीर-जयन्ती' 'वीर' का, लाई शुभ सन्देश ।
बनो वीर 'चन्दन' सभी, सुनो वीर - उपदेश ।।

'चन्दन' 'अक्षय तीज' है, तीजों की सरताज ।
वर्षी तप पूर्ण किया, 'ऋषभदेव' जिनराज ।।

१-भगवान आदिनाथ (ऋषभ देव) आर्य संस्कृति के स्रष्टा, वर्तमान अवसर्पिणी-काल में जैन धर्म के प्रथम संस्थापक, परम दार्शनिक और मानव-सभ्यता के जन्मदाता के रूप में प्रसिद्ध हैं ।

—स्वर्णजयन्ती ग्रन्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जन्म-मरण का नष्ट हो, जिससे 'चन्दन' बीज।
वर्षीतप[1]-आरम्भ हित, उत्तम अक्षय तीज ॥

कृष्णा जेठ त्रयोदशी, मंगलमयी कहाय।
'शान्ति[2] जयन्ती' जगत जब, 'चन्दन' मुदित मनाय ॥

दान-शील-तप-भाव का, करवाता अभ्यास।
शान्ति साथ ले आ गया, 'चन्दन' चातुर्मास ॥

सावन शुक्ला पंचमी, विश्व बीच विख्यात।
जन्मे जब बावीसवें, जिनवर 'नेमीनाथ' ॥

१–वर्षीतप का प्रारम्भ वैशाख सुदी तीज से करे। साठ उपवास करने के बाद यानी अन्तिम उपवास भी वैसाख सुदी ३ को करे। उपवास के दिन "श्री ऋषभदेव तीर्थंकराय नमः" मन्त्र की २० माला फेरे। जिस दिन उपवास हो उस दिन प्रतिक्रमण, स्वाध्याय दान अवश्य करे।

—'मंगलवाणी'

२–ये सोलहवें तीर्थंकर थे। इनके पिता हस्तिनापुर के महाराजा विश्वसेन और माता श्री अचिरादेवी जी थीं। इनका जन्म और निर्वाण ज्येष्ठ कृष्णा १३ को हुआ था। ये भरत क्षेत्र के चक्रवर्ती भी रहे हैं। इनके जन्म से पहले समस्त देश में महामारी, मृगी की बीमारी फैली हुई थी। इनके गर्भ में आते ही समस्त देश में शान्ति छा गई। इसी कारण इन का नाम 'शान्तिनाथ' रखा गया था।

—हमारा इतिहास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाई - भगिनी-प्रेम का, जो 'चन्दन' त्योहार।
'रक्षाबन्धन'—नाम से, जाने सब संसार।।

परम प्रिय तो न्याय था, परम प्रिय थी गाय।
'जन्म-अष्टमी' कृष्ण की, 'चन्दन' याद दिलाय।।

लोभ, क्रोध न काम हो, 'चन्दन' छल नहिं गर्व।
समता की है साधना, शुभ 'पर्युषण-पर्व'।।

शुभ 'सम्वत्सरी पर्व' का, है 'चन्दन' सन्देश।
'क्षमा दीजिये - लीजिये, तजकर वैर - विद्वेष'।।

'चन्दन' आकर 'दशहरा', कहता है प्रतिवर्ष।
रावण के घर शोक तो, रामचन्द्र - घर हर्ष।।

आई कार्तिक की अमा, हुआ 'वीर'– निर्वाण।
'महावीर-सम्वत' तभी, 'चन्दन' चला महान।।

अमावस कार्तिक गए, 'वीर' मुक्त मंझार।
तब से 'दीवाली' हुई', जैन - धर्म - अनुसार।।

अय 'चन्दन' दीपावली, आ कहती हर साल।
'ज्ञान-दीप प्रज्ज्वलित कर, अन्तर तमस निकाल।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कार्तिक शुक्ला पंचमी, 'ज्ञान-पंचमी' जान ।
'चन्दन' कर आराधना, जो तू चाहे ज्ञान ॥

जैन-संघ में जिन्होंने, नया भरा उत्साह ।
कार्तिक पूनम जानिये, जन्मे 'लौंकाशाह' ॥

कातिक पूनम को उठा, 'चन्दन' चातुर्मास ।
नहीं भूलना भाइयो ! जप-तप-व्रत-उपवास ॥

'चन्दन' मगसिर मास की, 'मौन-इग्यारस' जान ।
जन्मे जग मंगल करन, 'मल्लिनाथ' भगवान ॥

पार्श्व-जन्म की साथ ले, मधुर याद हर साल ।
आती दशवीं पौष वदि, सुखकर 'चन्दनलाल' ॥

'चन्दन' 'तेरस माघ वदि', अमर जगत दरम्यान ।
ऋषभदेव भगवान जी, पाया पद निर्वाण ॥

माघ शुक्ल की पंचमी, शुरु शीत का अन्त ।
ठण्ड गुलाबी रह गई, 'चन्दन' कहें 'बसन्त' ॥

फागुन-पूनम आ गया, 'होली चातुर्मास' ।
करें आत्मा का सभी, 'चन्दन' सतत विकास ॥

॥ २५ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर्युषण-पच्चीसी

महावीर-सन्देश ले, आया पर्व[1] महान।
ग़फ़लत तज कर कीजिए, अय 'चन्दन' कल्याण॥

1. पर्व शब्द का अर्थ है—परम पवित्र दिवस। वैसे तो जीवन का प्रत्येक दिवस पवित्र होता है, परन्तु आज का दिवस तो विशेष रूप से पवित्र है। पर्व दो प्रकार के होते हैं—"लौकिक और लोकोत्तर।" लौकिक पर्व का अर्थ होता है—हर्ष, उल्लास और आमोद-प्रमोद। वह शरीर की सीमाओं में ही बन्द रहता है। शरीर में स्थित चेतनामय ज्योति तक वह नहीं पहुंच पाता। लौकिक पर्व मनुष्य के शरीर का ही पोषण करता है उसके मन और आत्मा का नहीं। इसके विपरीत लोकोत्तर पर्व शरीर की सीमाओं से ऊपर ज्योतिर्मय चेतना के दिव्य-लोक में पहुंच कर मनुष्य को आत्म-रत, आत्म-संलग्न और आत्म-प्रिय बनाता है। इस शरीर का शोषण भले ही हो, परन्तु आत्मा का तो पोषण ही होता है। शरीर को भोजन भले ही न मिले, किन्तु आत्मा को तो तप, त्याग, संयम, वैराग्य और विवेक का भोजन मिलता ही है। शरीर का आधार भौतिक है। अतः उसका भोजन भी भौतिक पदार्थों का ही होता पर, आत्मा तो एक दिव्य शक्ति है। अतः उसका भोजन भी दिव्य एवं अमृतमय होता है। इन पर्व दिवसों में आप लोग भौतिक भोजन छोड़-कर आध्यात्मिक भोजन करते हैं, जिससे आपके चित्त को आत्मा को पुष्टि एवं तुष्टि मिलती है। यही लोकोत्तर पर्व की मूल-भावना है।

राष्ट्रसन्त उपाध्याय श्री अमर मुनि जी के—
'पर्युषण-प्रवचन' से।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानव भव अनमोल है, मिले न बारम्बार।
जीत यहां की है बड़ी, बड़ी यहां की हार ॥

जीते सुख हैं स्वर्ग के, जीते पद निर्वाण।
हारे से लेकिन रुले, चौरासी दरम्यान।

प्रेम, अहिंसा, त्याग, तप, संयम जो अपनाय।
महापर्व 'चन्दन' सही, सचमुच वही मनाय ॥

प्रतिक्रमण, आलोयणा, सब से खिमतखिमाव।
तप-जप 'चन्दन' कीजिए, भर भारी मन चाव ॥

पक्षपात के साथ पर, नहीं बनेगी बात।
चाहे 'चन्दन' रगड़िये, कितना क्यों नहिं माथ ॥

औरों के तो देखते, खुद में क्या नहिं दोष?
'चन्दन' खोटी अक़ल पर, लाख-लाख अफसोस ॥

गुणी बनोगे गुण लखे, अवगुण लख गुणहीन।
'चन्दन' हठी-दुराग्रही, जीवन तेरह-तीन ॥

महापर्व बतला रहा, तजो द्वेष विकराल।
क्षमावीर 'चन्दन बनो, जैसा गजसुकुमाल ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'अर्जुनमाली' का न क्या, सुना चरित्र विचित्र ?
परम क्षमा से हो गये, 'चन्दन' परम पवित्र ।।

'ऐवन्ता' की सरलता, सीना दे जो वेध ।
जड़ से ही 'चन्दन' मिटें, जनम-मरण-दुख-खेद ।।

ज्ञान-ध्यान के कीजिये, चाहे लाख उपाव ।
कपट-कुटिलता की तरे, कभी न लेकिन नाव ।।

महावीर के आप सब, भक्त बने मज़बूत ।
'सेठ सुदर्शन' सामने, रहा खड़ा क्या भूत ?

अर्जुन का तन त्याग कर, गया देवता भाग ।
इकदम ठण्डी हो गई, जलती हिंसा-आग ।।

धन्य! आजके श्रावको ! बने महा डरपोक ।
मड़ी–मशानी-क़बर को, देते फिरते धोक !!

दशा देख कर आपकी, आती बहुत दया ।
आत्मिक बल वह'वीर'का, कहिये किधर गया ?

आत्म बल प्रगटाइये, ऐसा तेज प्रचण्ड ।
निकट न आए आपके, ढोंग-पाप-पाखण्ड ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुना सूत्र है आपने, 'श्री अन्तकृतंदशा ?
नब्बे मुक्त सिधाए जो, मन में कौन बसा ?

नगर द्वारका के अहो, 'गौतम' राजकुमार।
संयम लेकर कर गए, 'चन्दन' बेड़ा पार ॥

'नेमनाथ' से प्रेम से, संयम का पढ़ पाठ।
गए मुक्ति में बहुत से, कर्म खपाकर आठ ॥

नन्दलाल की राणियां, 'पद्मा' आदिक जान।
साध्वियां बन कर गईं, अय 'चन्दन' कल्याण ॥

श्रेणिक नृप की राणियां, नन्दा आदिक और।
'चन्दन' पहुंची मुक्ति में, सब सतियां सिरमौर ॥

जीवन के उद्धार हित, बनो उन्हीं के भक्त।
आयेगा नहिं अन्यथा, हाथ कभी यह वक्त ॥

द्रव्य मनाए आपने, पर्व अनेकों बार।
भाव पर्व बिन आज तक, पहुंचे क्या भव पार ?

द्रव्य पर्व के साथ में, भाव मनाइये पर्व।
'चन्दन' बिगड़े आपके, काम बनेंगे सर्व ॥

॥ २५ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विवाह-बावनी

चलते रहने को सदा, सदाचार की राह।
'चन्दन' नर औ नारियां, दोनों करें विवाह[1]॥

1. जो साधक अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सकता, किन्तु दुराचार से बचकर सन्तोष धारण करना चाहता है, उस गृहस्थ को विवाह की रस्म अदा करनी पड़ती है। जो विवाह किया जाता है, वह सदाचार की रक्षा के लिये किया जाता है—न कि भोग-पूर्ति के लिये। पुरुष और स्त्री के लिए आजीवन साहचर्य को ही 'विवाह' कहते हैं। यह साहचर्य कामवासना के तीव्रोदय को शान्त करनें की दवा है। यह साहचर्य तभी निभता है जबकि एक दूसरे के स्वभाव, गुण, आयु, बल, वैभव तथा सौन्दर्य आदि को दृष्टि में रखा जाय। उपर्युक्त गुणों से युक्त हो उनका पंचों की साक्षी से पाणिग्रहण करना ही 'विवाह' है।

श्रावक का चौथा अनुव्रत है—स्वदार-सन्तोषित। जिसने स्वपत्नी पर सन्तोष धारण कर लिया वह भी ब्रह्मचारी है। इस व्रत का नाम 'स्वदार-सन्तोष' है—'स्वदार-रमण' नहीं, क्योंकि स्वदार-रमण में स्वच्छन्दता को स्थान है, परन्तु स्वदार-संतोष में स्वच्छन्दता को स्थान नहीं।

जो अपनी स्त्री पर सन्तोष रखता है—वह अन्य स्त्रियों पर कैसे आसक्त हो सकता हे? जो कर्मचारी अपने वेतन पर ही सन्तुष्ट है, वह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्थ, सुशीला, सुन्दरी– से ही सफल विवाह।
कुटिला, कुलटा से सदा, 'चन्दन' कष्ट अथाह ॥

एक दूसरे से दग़ा, नहीं करेंगे भूल।
मंगलमय सु-विवाह का, पहला यही उसूल ॥

'चन्दन' चिट्टी चमड़ियां, लख कर करें विवाह।
बिन गुण देखे यों हुए, जीवन बहुत तबाह ॥

कन्या के गुण-दोष पर, करता कौन निगाह।
पैसे से ही हो रहे, अब तो बहुत विवाह ॥

अब तो अहो! विवाह पर, बनने बहुत कंगाल।
सब से पहले पूछते, क्या कुछ दोगे माल ?

रिश्वत कैसे खा सकता है ? श्रावक को स्वस्त्री पर भी अत्यासक्ति नहीं होनी चाहिये, क्योंकि जानबूझ कर रोग को पैदा किया नहीं जाता। कदि कभी काम-रोग पैदा हो जाय और उसे अन्य किसी प्रकार से शान्त न कर सके तो उसका इलाज वही है—जिसके लिये विवाह हुआ है। इस प्रकार की प्रक्रिया को भी सदाचार ही कहते हैं।

पुरुष के लिये स्वस्त्री के अतिरिक्त, शेष सभी स्त्रियां परस्त्री हैं और स्त्री के लिये स्वपति के अतिरिक्त सभी पुरुष पर-पुरुष हैं।

योगनिष्ठ पं० मुनि श्री फूलचन्द्र जी 'श्रमण'
लिखित——'गृहस्थ-धर्म' से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सभी समझते धन नहीं, अन्त चलेगा साथ ।
फिर भी मरते माल पर, देखो तो दिन-रात !!

प्रेम नहीं, पैसा हुआ, कितना आज प्रधान !
सुख के बदले बन रहे, दुख के यों सामान ॥

देते बिल्कुल कम नहीं, बेटी को मां-बाप ।
बिन मांगे ही बहुत कुछ, देते अपने आप ॥

महा लालची मन मगर, करते नहीं यक़ीन ।
'चन्दन' मुख से मांगकर, हैं बन जाते हीन ॥

'चन्दन' दौलत लूट की, कब तक देगी साथ ॥
स्वयं पड़ेंगे आप को, अन्त हिलाने हाथ ॥

दो घर वालों का जहां, बढ़ता प्यार अथाह ।
कहना 'चन्दन' चाहिये, उसको असल विवाह ॥

सुने साफ़ यह आप जी ! 'लोभ पाप का बाप' ।
'चन्दन' आख़िर लालची, करते पश्चाताप ॥

"उत्तम जन' बन मंगते, मांगें नहीं 'दहेज़ ।
'चन्दन' उन्हें दहेज़ से, सख्त सदा परहेज़ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'मध्यम' मानव मांगते, मुख से सदा दहेज़ ।
'चन्दन' उन्हें दहेज़ बिन, शादी से परहेज़ ॥

'चन्दन' जन जो तीसरे, निपट निकम्मे नीच ।
कमती देख दहेज़ कुछ, शादी छोड़ें बीच ॥

जो नहिं लोभी-लालची, असल वही इनसान ।
दुनिया में तो वाहवा ! आगे स्वर्ग-विमान ॥

जोश छोड़ कर होश से, अय युवको ! लो काम ।
रख कर नाम विवाह का, खड़े करो नहिं दाम ॥

कहता 'चन्दन' साफ़ है, अगर बिकेंगे आप ।
पछतायेंगे आप भी, बन बेटी के बाप ॥

गया प्रदर्शन का समय, तजें प्रदर्शन आप ।
बने प्रदर्शन नहिं कहीं, अय 'चन्दन' अभिशाप ॥

जितनी भी शुभ सादगी; जिस विवाह में होय ।
अय 'चन्दन' बस वाहवा ! है करता हर कोय ॥

'चन्दन' जैसे देवियां, चढ़ती अब बारात ।
कहिये क्या इतिहास में, है देखी यह बात ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शोर, शराबें, झंगड़े, नये-नये उत्पात ।
'चन्दन' वनिता वर्ग का, क्या बढ़िया है साथ ?

बचे हुए कुछ थे बड़े, चढ़ा उन्हें भी जोश ।
वे भी अपने अब अहो ! खो बैठे हैं होश ।।

न थे सरल सम्भालने, अरे ! अकेले मर्द ।
'चन्दन' मगर खरीद यह, नया लिया सिर दर्द ।।

संख्या सब ही कह रहे, और घटाओ और ।
छोटी हो बारात पर, कहिये तो किस तौर ।।

मानें चाहे आप न, माने मेरी बात ।
ठीक न लेकिन देवियां, वर-यात्रा के साथ ।।

होश मन्द यदि आप हों, करें अभी से होश ।
ऐसा न हो आप को, हो पीछे अफ़सोस ।।

पांच-सात से अधिक नहिं, बन्दे जिस में जायं ।
समझदार नर-नार सब, अच्छा उसे बतायं ।।

छोटी की जो जगह पर, जुड़े बड़ी बारात ।
दुखिया दोनों पक्ष हों, देख-देख उत्पात ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' की सुनते नहीं, अब जो नेक सलाह।
इक दिन वे पछतायेंगे, हो करके गुमराह ॥

पहुंचें चल कर शाम को, वापिस चलें प्रभात।
'चन्दन' इतने के लिये, क्यों इतने उत्पात ?

आतिशबाज़ी देख कर, मूढ़ बजावें काख।
'चन्दन' चुटकी में बनें, नोट हजारों राख ॥

मरें कबूतर बहुत से, है यह कोरा गन्द।
आतिशबाजी व्याह में, कीजे भाइयो ! बन्द ॥

कई जगह पर जल गए, कई एक इनसान।
आतिशबाज़ी के कभी, भूलो नहिं नुक़सान ॥

अगर आप के पास है, दौलत बहुत बड़ी।
काम करो कुछ नेक तब, मत फूँको फुलझड़ी ॥

कपड़े, पुस्तक बांटिये, जो हैं दीन-अनाथ।
मधुर असीसें पायेंगे, यों उन से दिन-रात ॥

शुभ कामों में कीजिये, धन का सद् उपयोग।
करें देर तक वाहवा ! दुनिया के जो लोग ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हंसी जगत से यदि नहीं, करवानी है व्यर्थ।
छोड़ दीजिये भंगड़ा, जिसका कुछ नहिं अर्थ॥

'चन्दन' जिसका नाचता, बाप बीच बाज़ार।
डालें क्यों नहिं भंगड़ा, उसके बरखुरदार॥

पड़ती ज्यों-ज्यों ढोल पर, उलटी 'चन्दन' चोट।
मूर्ख खूब उछालते, उछल-उछल तब नोट॥

कोई किसी स्कूल को, अगर माँग ले दान।
सारी ही बारात की, निकल जायगी जान॥

मंगलमय सु-विवाह को, कहते हैं जब आप।
भ्रष्ट रिकार्ड फिर बजा, क्यों करते हैं पाप?

कामुकता है फैलती, सुन-सुन गन्दे गीत।
गन्दे गीतों की अतः, बहुत बुरी है रीत॥

जो चाहो 'चन्दन' बने, जीवन यह खुशहाल।
पत्नी को पीटो नहीं, नहिं निन्दो ससुराल॥

पत्नी को गृह-लक्ष्मी, समझ सदा दें मान।
'चन्दन' घर को वे पुरुष, पाते स्वर्ग समान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अच्छी पत्नी का पुरुष, जो करता अपमान।
घर, जीवन उसका बने, 'चन्दन' नरक समान ॥

जहां भूप पति देव है, मन्त्री महिला होय।
उस घर की संसार में, समता करे न कोय ॥

कदर गुणों की कीजिये, रूप-रंग की नाहिं ॥
बिन गुण 'चन्दन' कुछ नहीं, रूप-रंग के माहिं ॥

काली कोयल कोयला, मिश्री मगर ज़बान।
गुण पै ही गुणवान सब, श्रय 'चन्दन' कुर्बान ॥

सवा रुपये में पुत्र का, है न विवाह कमाल ?
गाँधी क़ायम कर गए, 'चन्दन' मगर मिसाल ॥

बढ़ता है 'चन्दन' सदा, रग-रग में उत्साह।
ब्रह्मचर्य जिससे पले, वह क्यों करे विवाह ॥

॥ ५२ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वचन-बहत्तरी

'चन्दन' धर्म, अधर्म का, हो वाणी[1] से ज्ञान।
वाणी नहिं होती अगर, होता सब सुनसान॥

1. मानव-जीवन में भाषा (वाणी-बोली) का बड़ा महत्त्व है। इसके द्वारा ही व्यक्ति के कुलीन, बड़प्पन तथा स्वभाव एवं विचारों का ज्ञान हो जाता है। भाषा, वाणी, मीठी, वचन आदरसूचक तथा संयमित होने से जीवन व्यवहार तथा आचार भी सुन्दर रहता है। अन्यथा भाषा-संयम के अभाव से घर, समाज, देश में सर्वत्र कलह अप्रतीति और असमाधि दोष उत्पन्न हो जाते हैं, इसलिये नैतिक विज्ञान का आग्रह भाषा-संयम के लिये पहिले है। इस में शिष्टाचार तथा आध्यात्मिकता दोनों का समावेश है।

यह भाषा चार प्रकार की है—सत्य, असत्य व्यवहार और मिश्र। इन में से सत्य और व्यवहार भाषण योग्य है, असत्य तथा मिश्र कलह सन्देह, अविश्वास आदि के हेतु होने से त्याज्य है। व्यवहार और सत्य भी जो सावद्य है उस के सम्भाषण का निषेध है। इन का भी हित मित तथा मधुर होना आवश्यक है।

उपर्युक्त भाषा-संयम मनुष्य मात्र के लिए है, किन्तु श्रावकत्व के कारण मनुष्य के दायित्व का रूप कुछ अधिक बड़ा हो जाता है अतः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वचन सुधा-से सरस जो, सुनना चाहें आप।
वचन कठोर उचारना, समझें 'चन्दन' पाप॥

शान्ति मिटे जड़-मूल से, ऐसी सख्त ज़बान।
'चन्दन' कहता है सदा, जड़- मूर्ख - नादान॥

अनुभव की ही हीनता, झगड़े को प्रगटाय।
समझदार 'चन्दन' सदा, व्यर्थ विवाद हटाय॥

हरगिज हानि नहीं करे, कालकूट विष-पान।
जितना खोटे वचन से, हो 'चन्दन' नुक़सान॥

वचन-वचन नहिं एक-से, वचन-वचन में फ़र्क।
एक वचन सुख-स्वर्ग दे, एक वचन दे नर्क॥

श्रावक को उक्त भाषा संयम का विवेक रखना ही चाहिये। मोटे तौर से श्रावक भाषा-विवेक की आठ बातें कही गई हैं—१–श्रावक थोड़ा बोलता है। २–कार्यवश बोलता है। ३—मधुर बोलता है। ४–चतुराई से (अवसर देख कर) बोलता हैं। ५—मर्मकारी भाषा नहीं बोलता है। ६—नम्रता पूर्वक बोलता है। ७–सिद्धान्तपूर्वक बोलता है और ८–प्राणीमात्र के लिये हित, मित एवं प्रिय बोलता है।

पं० मुनि सुमनकुमार जी लिखित
'श्रावक-कर्त्तव्य से'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निन्दा, चुग़ली, गालियां, झूठ, मर्म की बात।
'चन्दन' खोटे वचन सब, करें महा उत्पात ॥

'चन्दन' जिसकी जीभ है, कैंची–कुलिश—कटार।
ख़तरनाक नहिं दूसरा; कोई भी नर-नार ॥

वाणी—सरल-स्पष्ट हो, संयत और सुबोध।
'चन्दन' वाणी ख़ाक जो, करे अर्थ अवरोध ॥

तिरस्कार के, क्रोध के, देते वचन उबाल।
वचन—मान-सम्मान के, दें मन मगर पिघाल ॥

देखा 'चन्दन' ढूण्ढ कर, अचला औ आकाश।
नहीं किसी में और जो, मीठे वचन मिठास ॥

भ्रमर-वृत्ति से देखिये, मीठा मधु का स्वाद।
मगर मक्षिका–वृत्ति से, 'चन्दन' मिले मवाद ॥

वाणी की यह बात भी, रहे सर्वदा याद।
नहीं काटने दौड़िये, तज करके मर्याद ॥

नहि 'चन्दन' घबराइये, छटपटाइये नहीं।
गौरवपूर्ण ढंग की, हो वाणी हर कहीं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पहेली नहीं बुझाइये, कहिये सभी स्पष्ट।
'चन्दन' होगा अन्यथा, किया कराया नष्ट॥

तीव्र, मन्द, गम्भीर या, चौथी फिर सुकुमार।
वाणी तथा बनाइये, 'चन्दन' यथा-विचार॥

नहिं कर्कश नहिं कटुक हो, हो वाणी गम्भीर।
गला फाड़ जो बोलते, वे नहिं 'चन्दन' वीर॥

चिल्लाना असमर्थता- का करवाता बोध।
चिल्लाता 'चन्दन' वही, मन में जिसके क्रोध॥

नहिं 'चन्दन' चिल्लाइये, सपने में भी भूल।
वचन बोलिये जिस तरह- मुख से झड़ते फूल॥

इतनी भी 'चन्दन' नहीं, वाणी गिरने पाय।
आधी मुख में ही रहे, समझ सभी नहिं आय॥

सम्भव बातें कीजिये, धर धरती पर पैर।
कहीं बोलते - बोलते, करें न नभ की सैर॥

विज्ञ जनों का जगत में, हो स्वर पर अधिकार।
सरस वचन 'चन्दन' कहा, सज्जन का शृंगार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वर पर अय 'चन्दन' नहीं, जिनका कुछ अधिकार ।
विनय-बात में भी लगें, डाल रहे फटकार ।।

न तो दागें तोप ही, न ओले बरसांय ।
शब्दोच्चारण के समय, मानस स्वस्थ बनांय ।।

रूपवती भी भामिनी, अगर कर्कशा होय ।
'चन्दन' कोई भी कभी, नहिं सत्कारे कोय ।।

कोई अगर अ-सुन्दरी, मधुर भाषिणी होय ।
अधिक-अधिक सत्कार दे, अय 'चन्दन' हर कोय ।।

व्यक्तित्व की सौम्यता, शील रसीले वचन ।
नहिं किसका करते कहो, अय 'चन्दन' मन हरण ।।

लखी न किसने कोकिला, काली-कुटिल-कुरूप ।
'चन्दन' मीठे वचन से, उसको पालें भूप ।।

अब भी मुखड़ा खोलता, और बोलता काग ।
उसका भी कोई कभी, सरस ! सराहे राग ?

शीतल जल से जिस तरह, मिटता दूध-उफान ।
मधुर वचन से उसी तरह, थमे क्रोध-तूफ़ान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनय-वचन जो बोल कर, दिया गया हो दान।
तीन लोक की सम्पदा, उसके नहीं समान॥

निन्दा तथा सराहना, करें न अपनी भूल।
सब समझेंगे आपकी, वरना बात फ़िज़ूल॥

समझेंगे सब स्वयं ही, जब यों बनता नीच।
पता न अवगुण और भी, होंगे कितने बीच॥

स्वयं स्वयं की जो करे, सराहना नादान।
करता है विश्वास नहिं, कोई भी मतिमान॥

'चन्दन' निन्दा-स्तुति वही, करें अन्य जो लोग।
निज 'कर' सिर जूता सुमन, नहीं चढ़ाना योग॥

आक्षेपक वाणी कही, यथा विषैला बान।
नहीं कभी भी बोलते, 'चन्दन' चतुर सुजान॥

जूते आप उतारते, जैसे जप के बीच।
बातें करते अन्य से, भाव तजें त्यों नीच॥

सत्य स्थिर 'चन्दन' रहे, बढ़े परस्पर प्रीत।
गुणियों की यों गुण भरी, बात-चीत की रीत॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सारे ही संसार पर, मार देखिये ध्यान ।
झूठे, निन्दक नरन का, कहीं नहीं सम्मान ।।

रहे वार्तालाप में, ध्यान सत्य की ओर ।
रहे याद यह बात भी, हो नहिं सत्य कठोर ।।

जहां प्रश्न हो न्याय का, खपता सत्य कठोर ।
लेकिन बिन मज़बूरियां, देखो नहिं उस ओर ।।

निज-पर-हित रख ध्यान में, जो भी बोला जाय ।
'चन्दन' असली अर्थ में, सत्य-स्वरूप कहाय ।।

कोई हित की वार्ता, अगर कहे साल्हाद ।
कभी न 'चन्दन' चूकिये, कीजे साधुवाद ।।

तज़ें करेले नीम-से, कड़वे जो अत्यन्त ।
'चन्दन' मिश्री-से वचन, सभी सराहें सन्त ।।

प्रेम बढ़ाना आपको, जिनके भी हो साथ ।
बहुत ध्यान से मान से, सुनें उन्हीं की बात ।।

अपनी तो थोड़ी कहैं, सुने उन्हों की अधिक ।
प्रबल विरोधी आपके, सन्मुख सकें न टिक ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किसी घमण्डी से कभी, पाला जो पड़ जाय।
देगा भारी काम बस, उत्तम यही उपाय ॥

बातों की महिमा बड़ी, दुनिया के दरम्यान।
बात-चीत की रीत पर, अतः सदा दें ध्यान ॥

देश-काल को भूल कर, जो देगा व्याख्यान।
तीन काल में भी लहे, नहिं 'चन्दन' सम्मान ॥

अय 'चन्दन' धारा प्रवाह, बोलें चाहे आप।
मगर विषय औ व्याकरण, हो नहिं जाएं साफ़ ॥

नीरस और अनावश्यक, चर्चा नहीं चलायं।
यथासाध्य 'चन्दन' सदा, रोचक बिषय बनायं ॥

सज्जन के सम्मान के, जो भी हो प्रतिकूल।
मन-गढ़न्त कहिये नहीं, बातें ऊल-जलूल ॥

सहज सरस हों, सरल हों, हों नहिं किन्तु क्लिष्ट।
वचन सुधा-से मिष्ट हों, और साथ हों शिष्ट ॥

जिससे आए और के, बिल्कुल नहिं कुछ हाथ।
नहीं सयाने बोलते, शीघ्रता के साथ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

पाते आदर अधि नहिं, लिए उधार विचार ।
नई सूझ का बूझ का, है 'चन्दन' सत्कार ॥

'चन्दन' अपना काट लें, कहीं न आप बयान ।
सोच-समझ कर दीजिये, हर इक अत: प्रमाण ॥

'चन्दन' धीरज सदा, कीजे शब्द-प्रयोग ।
जिससे जग में य मले, समझ सकें सब लोग ॥

बनिये और वकी को, देखो लोचन खोल ।
एक-एक हैं ोलते, वचन किस तरह तोल ॥

कहो वकीलों क तरह, 'चन्दन' वचन स-तर्क ।
मगर उन्हीं-सी कर ज़िरह, नहीं निकालें अर्क़ ॥

सजती है 'चन्दन' यथा, लज्जा से कुल-नार ।
शील और सौजन्य त्यों, भाषा के शृंगार ॥

'चन्दन' की यह भी, नहीं भूलने योग ।
बहु बक्ता होते सदा, हीन विचारी लोग ॥

शब्दाडम्बर छो सार-सार ही बोल ।
'चन्दन' बनकर हीरे - मोती तोल ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' इक ही बात को, पुनः - पुनः जो कहें।
ऐसे वक्ता से सभी, दूर सर्वदा रहें॥

नपी-तुली वाणी बहुत, रहती 'चन्दन' याद।
ज्यादा बोले बचन हों, ज्यादातर बर्बाद॥

समझें चाहे लोग कम, कहें सार ही सार।
अय 'चन्दन' उस सार पर, होंगे सब बलिहार॥

सार रूप संक्षिप्त ही, मीठी लगती बात।
ज्यों गन्ने का रस बिके, 'चन्दन' हाथों हाथ॥

कम-से-कम ही बोलिये, जितना 'चन्दन' होय।
काम एक से जो चले, शब्द कहो नहिं दोय॥

कर्ण-प्रियता, स्पष्टता, वाणी के गुण ख़ास।
इन बिन हर वक्ता लहै, अय 'चन्दन' उपहास॥

अधिक बोलने से कहीं, सुनना अधिक भला।
'चन्दन' अच्छा पुरुष नहिं, फाड़े व्यर्थ गला॥

'चन्दन' की यह बात भी, रखिये याद विचित्र।
भावुकता से हास्य-से, भाषा बने सचित्र॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शहां ज़िक्र हो हास्य का, भावुक वहां रहें।
नपी-तुली व्यापार में, लेकिन बात कहें॥

'चन्दन' हास्य-विनोद के, शब्द हंसाएं नित्त।
लेकिन चिन्ता-दुःख के, सदा दुखाएं चित्त॥

॥ ७२ दोहे सम्पूर्ण ॥

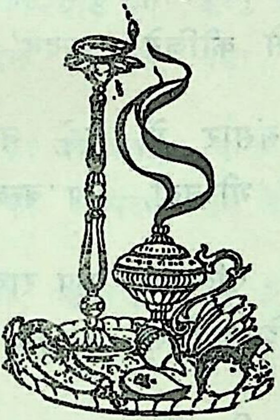

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रंग-राग तज जगत के, लिया त्याग अपनाय।
गुण-गाथा गुरुदेव की, कहा न मुख से जाय॥

गुरु ही माता, गुरु पिता, गुरु ही देव-न देव।
निर्मल मन से कीजिये, 'चन्दन' गुरु की सेव॥

सारे ही संसार में, देखें नज़र पसार।
गुरु बिन कोई भी नहीं, अग्र 'चन्दन' हितकार॥

सुन्दर पत्नी पतिव्रता, रूप राज, धन-माल।
सहज मिलें, मुश्किल मिलें- सद्‌गुरु 'चन्दनलाल'॥

गुरु की तारे जाति नहिं, गुरु का तारे त्याग।
गुरु के तप से, त्याग से, करें अतः अनुराग॥

गुरु के तप पर, त्याग पर, जिसे अटल विश्वास।
फटके उसके पास क्यों, कभी नर्क का त्रास॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिक्षा दें गुरुदेव जी, चाहे कभी कठोर।
'चन्दन' हित ही जानकर, रहें सदा कर जोड़ ॥

भेदभाव गुरुदेव से, जो रखते नादान।
ग्रय 'चन्दन' उनका नहीं, तीन काल कल्याण ॥

गुरु की निन्दा जो करें, करें ग्रौर अपमान।
'चन्दन' चौरासी रुलें, वे मूर्ख - नादान ॥

गुरु के तप को-त्याग को, करें भंग नहिं ग्राप।
वरना 'चन्दन' ग्रापको, बड़ा लगेगा पाप ॥

गुरु-चरणों का जो बना, 'चन्दन' सच्चा दास।
तीन लोक की सम्पदा, उस सेवक के पास ॥

जो है कामी, लालची, जो है दुनियादार।
तीन काल भी वह कभी, गुरु नहिं तारनहार ॥

माया-ममता में बंधा, गुरु ही हो जो आप।
दूर करेगा ग्राप के, कहिये कैसे पाप ?

भवजल तारणहार हैं, ग्रय 'चन्दन' ग्रतएव।
वहीं वन्दना कीजिये, जहां मिलें गुरुदेव ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुरु की महिमा का नहीं, कोई पारावार।
नमस्कार गुरुदेव के, चरणन बारम्बार ॥

गुरु की सेवा स्वर्ग दे, गुरु की सेवा मुक्त।
पाता 'चन्दन' सर्व सुख, गुरु - सेवा - संयुक्त ॥

गुरु-चरणन पर जो हुआ, अय 'चन्दन' कुर्बान।
उस-सा जग दरम्यान नहिं, पुण्यवान गुणवान ॥

सच्चे गुरुवर बिन मिले, कभी न सम्यग्ज्ञान।
बिना ज्ञान इनसान का, हो कैसे कल्याण ॥

अय 'चन्दन' संसार से, तरना जो स्वीकार।
अपने तथा बनाइये, गुरु के यथा विचार ॥

बिना परीक्षा गुरु किया, जिसने अंगीकार।
तीन काल में भी कभी, पहुंचेगा नहिं पार ॥

शांति, शील, शम, सरलता, सत्य, दया की खान।
मोह, मान, मद, रहित ही, गुरु करता कल्याण ॥

॥ २१ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन मुनि

जीवों की हिंसा नहीं, करते जैनी सन्त ।
मनसा - वाचा - कर्मणा, 'चन्दन' करुणावन्त ।।

कभी असत्य नहिं बोलते, वाणी सुधा समान ।
'चन्दन' जैनी सन्त की, यह पक्की पहचान ।।

'चन्दन' चोरी के निकट, नहीं भूल भी जायं ।
महाव्रत यह तीसरा, निर्मल नित्य निभायं ।।

विषय–विकार-शृंगार से, रह कर दूर अत्यन्त ।
ब्रह्मचर्य निर्दोष हो, निश-दिन पालें सन्त ।।

गेह-गलीचा-खाट औ– खेत - बग़ीचा - बाग़ ।
'चन्दन' जैनी सन्त के, धन-दौलत का त्याग ।।

अन्धा खाना रात का, आगमकार बतायं ।
सभी सन्त नहिं भूल भी, कभी रात को खायं ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं निमन्त्रण मानते; खुद भी नहीं पकायं।
घर-घर से कर गोचरी, थोड़ा - थोड़ा लायं॥

करते धर्म प्रचार हित, जगह-जगह की सैर।
जूते नहिं पर पहनते, नित्य नगन ही पैर॥

सिरके-दाढ़ी-मूंछ के, जितने भी हैं बाल।
हाथों से ही नोच कर, करते सन्त कमाल॥

बीड़ी या सिगरेट या— सुलफ़ा - गांजा - चरस।
'चन्दन' हुक्का चिलम का, करें न सन्त स्पर्श॥

जितनी रिश्तेदारियां, देते सब ही त्याग।
वीतराग भगवान के, गाते निश-दिन राग॥

मौज-मज़े की ज़िन्दगी— का नहिं किंचित ध्येय।
जीवन में रख सादगी, सदा साधते श्रेय॥

नहीं किसी से राग है, नहीं किसी से द्वेष।
सबके सांझे सन्तजन, सांझा दें उपदेश॥

'चन्दन' जिसकी आठ तह, बीच पड़ी हो डोर।
साधू मुख पर बांधते, मुखपत्ती चौकोर॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुनि-महिमा

जिसके तप का, त्याग का, कोई भी नहिं अन्त।
मिलना मुश्किल हर जगह, 'चन्दन' सच्चा सन्त॥

शील, सत्य, सन्तोष से, शोभित जो अत्यन्त।
कल्प विटप भू-लोक का, 'चन्दन' सच्चा सन्त॥

'चन्दन' महिमा सन्त की, रूप-रंग नहिं राग।
महिमा सच्चे सन्त की, ज्ञान, त्याग, वैराग॥

प्रेम पगे, तप में लगे, 'चन्दन' सगे समान।
भाग्य जगे तब ही मिलें, ऐसे सन्त महान॥

अय 'चन्दन' साधू वही, सहनशील हो धीर।
साधू क्या जो हो नहीं, सागर सम गम्भीर॥

माया-ममता में फंसा, जो ढूंढे भगवन्त।
कोल्हू का ही बैल है, 'चन्दन' ऐसा सन्त॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माया-ममता की नहीं, 'चन्दन' दिल में गन्ध।
बैठ शान्त एकान्त में, भजता परमानन्द ।।

माया ममता-मोह जो, मानव मार मुकाय।
तजे क्रोध को, काम को, सोई सन्त कहाय ।।

सिरफ़ सन्त जो वेश का, त्याग न तप का काम।
पल्ले तो पाई नहीं, पर है लक्खी नाम ।।

जिसको प्यारा त्याग-तप, ज्ञान-ध्यान भगवन्त।
रजिस्ट्री खेत-मकान की, क्यों करवाए सन्त ।।

अपने ही जब तज दिये, आलीशान मकान।
कहो कराएं किस लिये, डेरे का निर्माण ।।

मान और अपमान में, सुख-दुख में सम भाव।
'चन्दन' ऐसे सन्त की, तरी समझिये नाव ।।

सन्त सुपात्र बिना पते, जो दे दर्शन आन।
त्याग मान, सम्मान से, 'चन्दन' दीजे दान ।।

दर्शन सच्चे सन्त का, तृष्णा-तप्त बुझाय।
मिलता मन को शान्ति-सुख; कही न माहिमा जाय ।।

।। १४ दोहे सम्पूर्ण ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानव

'चन्दन' जिससे आपका, जीवन बने विराट।
पढ़ना पहले चाहिये, मानवता का पाठ॥

अधिक-अधिक जिससे बने, औरों का कल्याण।
सर्व श्रेष्ठ 'चन्दन' वही, है होता इनसान॥

अय 'चन्दन' जिस पुरुष का, बाहर-भीतर एक।
दुनिया में नहिं दूसरा, उस - सा कोई नेक॥

सच्चा मानव वह जिसे, मानवता से प्यार।
अभिनन्दन 'चन्दन' करे, सारा ही संसार॥

जीना भी है इक कला, जिसको भी बस आय।
सुर दुर्लभ जीवन वही, 'चन्दन' सफल बनाय॥

शिक्षित और सु-सभ्य जो, अपने को प्रगटाय।
'चन्दन' अपने आप पर, पहले क़ाबू पाय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवन सादा, सरल मन, बोले भी कम बोल।
अय 'चन्दन' उपकार-रत, मानव है अनमोल ।।

बिना विचारे एक भी, करे कभी नहिं काम।
अय 'चन्दन' 'मानव' मधुर, मननशील का नाम ।।

इज्ज़त अपनी आप जो, है करता इनसान।
पाता है 'चन्दन' वही, औरों से भी मान ।।

मिलना मानव है कठिन, खोट न जिसमें पायं।
सही वही पर पुरुष जो, खोट मिटाता जायं ।।

भले सताएं दुष्ट जन, मन में भर दुर्भाव।
नहीं भूलता शिष्टता, सज्जन यही स्वभाव ।।

निन्द्य कर्म करते नहीं, तजें भले ही प्राण।
विपदा में भी सत्पुरुष, 'चन्दन' रहें महान ।।

मिट जाती है दुश्मनी, दुश्मन जब मिट जाय।
'चन्दन' सज्जन पुरुष पर, जीवित उसे मिटाय ।।

बाहर मानव रूप, पर– भीतर दानव रूप।
'चन्दन' पापी पुरुष ज्यों, अन्धंकारमय कूप ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिर्च - मसाला - दूध में, करें मिलावट ग्राम।
उसको भी इनसान का, कहिये क्या दें नाम ?

दुराचार से दोस्ती, महा मलिन मन-बुद्ध।
मानव कहने के उसे, हम हैं सख्त विरुद्ध ॥

'चन्दन' लोभी स्वार्थी, दिखें अधिक अब लोग।
मानव मुश्किल से मिलें, मानव कहने योग ॥

नाचें नर बाज़ार में, रही कहां फिर लाज ?
चला किधर है जा रहा, 'चन्दन' आज समाज ?

'चन्दन' जो हंस-हंस करे, यौवन में अपराध।
आख़िर रोता वृद्ध हो, कर-कर उनको याद ॥

पहले - पहले आदमी, मदिरा पी हर्षाय।
पीछे मदिरा ही उसे, अय 'चन्दन' पी जाय ॥

अण्डे-मांस चबाय जो, भूल अहिंसा धर्म।
नर्कों में दुःख़ पांयगे, मानव वे बे-शर्म ॥

दया, सत्य से, शील से, जिसे न 'चन्दन' प्यार।
नर्कों में जा खायगा, यमदूतों की मार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तज इज्जत-इनसानियत, जो बनता हैवान।
अय 'चन्दन' इनसान का, वह वैरी इनसान॥

निश-दिन फ़ैशन का फिरे, जो भी बना गुलाम।
'चन्दन' रोशन वह कभी, कर सकता नहिं नाम॥

कामुक, क्रूर, कुमार्गी, झूठा बेईमान।
मानव के है रूप में, मानव वह 'शैतान'॥

भले-बुरे की है नहीं, जिसे ज़रा पहचान।
मानव के ही रूप में, मानव वह 'हैवान'॥

नीतिमान, निर्मलमना, न्यायी करुणावान।
असल रूप में है वही, अय 'चन्दन' 'इनसान'॥

क्रोधी,कामी,कुटिल नहिं, शम, दम, दया निधान।
मानव के है रूप में, मानव वह 'भगवान'॥

कौन तुझे पहुंचायगा, पगले ! परले पार।
'चन्दन' अपनी नाव का, खुद तू खेवन हार॥

कल के बदले आज ही, चलें भले ही प्राण।
रहें धर्म में दृढ़ त्यों, ज्यों 'चन्दन' चट्टान॥

॥ ३० दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नारियां

नारी हो तो नेक हो, सीता सती समान।
'चन्दन' जीवन वार जो, रखती कुल की आन॥

जिसमें 'चन्दन' हो दया, जिसमें विनय-विवेक।
बिना पुण्य के नहिं मिले, नारी निश्छल-नेक॥

भामनियां जो पतिव्रता, रहें फटे भी हाल।
कौन उन्हों की कर सके, समता 'चन्दन लाल'॥

'चन्दन' जीवन वार कर; रखी धर्म की टेक।
'अबला' सबला को कहें; देखो पुरुष-विवेक!!

शान्ति,शील,शम, सत्य की, जगा हृदय में जोत।
अय 'चन्दन' सन्नारियां, करतीं कुल उद्योत॥

नारी को विश्वास के, कहता कौन अयोग।
नारी-सा विश्वस्त तो, अधिक न कोई लोग॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चतुर निपुण हो, पतिव्रता, विनयी आज्ञाकार।
'चन्दन' ऐसी भामिनी, जानो कुल शृंगार॥

दूर कलह से जो रहें, सुख-दुख में मुस्कायं।
'चन्दन' ऐसी देवियां, घर को स्वर्ग बनायं॥

पत्नी में, पतिदेव में, छिड़ी जहां भी जंग।
'चन्दन' सुख का क़ाफ़िया, हुआ वहीं बस तंग॥

पत्नी में, पतिदेव में, निश्छल हो जो नेह।
'चन्दन' पल में ही बने, स्वर्गपुरी वह गेह॥

नारी-शोभा लाज औ- 'चन्दन' शुद्धाचार।
बाहर के आभरण सब, दोनों बिन बेकार॥

जब तक नारी जाति का, होगा नहीं सुधार।
तीन काल में भी नहीं, सुधरेगा संसार॥

करें वासना से घृणा, नारी से नहिं भूल।
अरे अनाड़ी! नारियां, जगत-जन्म का मूल॥

सौ शिक्षक इक ओर हों, हो माता इक ओर।
'चन्दन' माँ की सीख में, सब से ज्यादा ज़ोर॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सन्नारियां

गज-हौदे पर मुक्ति है, जिसकी जग विख्यात।
धन्य! ऋषभ भगवान की, 'मरुदेवी, जी' मात ॥

पिता जिन्हों के पूज्य थे, आदिनाथ जिनराज।
'चन्दन' 'ब्राह्मी', 'सुन्दरी', सतियों में सिरताज ॥

'चन्दन' जिसने शीलहित, संकट सहे महान।
'चन्दनबाला'-सी सती, देखी-सुनी न कान ॥

भूप शतानिक की प्रिया, 'मृगावती' शुभ नाम।
संयम ले कर पा लिया, 'चन्दन' अविचलधाम ॥

जिसकी पावन कोख से, 'चन्दन' जन्मे राम।
अरुण-चन्द्र-सा चमकता, 'कौशल्या' का नाम ॥

ममता, समता, शील, शम, सेवा, सत्य-निधान।
'चन्दन' दुर्लभ देवियां, 'सीता' सती समान ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' देखा जगत सब, मिली न ऐसी अन्य।
शील शिरोमणि 'अंजना', धन्य! धन्य!! फिर धन्य!!

निर्मल-मति 'सुलसा' सती- सी नहिं होगी और।
देव-परीक्षा में रही, 'चन्दन' दृढ़ हर तौर॥

किया क्षमा भू-देव का, जिसने सब अपराध।
'शिवा' सती को जगत यह, 'चन्दन' करता याद॥

पैदा पाण्डव-से किये, जिसने पुत्र महान।
मिलनी महिला सरल नहिं, कुन्ती सती समान॥

सहे अनेकों कष्ट थे, शील-धर्म के काज।
सती 'द्रौपदी' हो गई, सतियों की सिरताज॥

कष्ट सहे पर शील में, रही अडिग हर तौर।
'चन्दन' 'दमयन्ती' सती, सतवन्ती - सिरमौर॥

सती 'मदनरेखा' अहो! निर्मल शील-निधान।
युगबाहु को ठीक कर, किया स्वयं कल्याण॥

उदयन प्रतिबोधित किया, देवलोक से आय।
'प्रभावती' ने वचन यों, 'चन्दन' दिया निभाय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सती 'सुभद्रा' पर लगा, 'चन्दन' झूठ कलंक।
चलनी में भर नीर तब, खोले द्वार निशंक॥

समाधान जिनका किया, महावीर भगवान्।
प्रश्न 'जयन्ती' के अहो ! निरे ज्ञान की खान॥

चला भगवती सूत्र में, जिसका शुभ अधिकार।
गाथा-पत्नी 'रेवती' जैसी दुर्लभ नार॥

शादी के भी बाद में, जिसने जीता काम।
'विजयाकुंवरी' कर गई, रोशन जग में नाम॥

खेले जिसकी गोद में, महावीर भगवान।
'तृशला'-सी अब मां कहां, दुनिया के दरम्यान॥

जिनको सुनकर नींद से, जागे नृप इषुकार।
अय राणी 'कमलावती'! तेरे धन्य ! विचार॥

अय 'चन्दन' घनश्याम के, महलों का श्रृंगार।
राणी जी 'पद्मावती', हुई जगत से पार॥

'गोरी' राणी के जगा, जब मन में वैराग।
दुनिया की सुख-सम्पदा, क्षणभर में दी त्याग॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राणी 'सुषुमा' 'रुकमणी', 'लक्ष्मणा' फिर जान।
दुनिया तज-प्रभु-भज किया, तीनों ने कल्याण ॥

प्यारी श्रेणिक भूप की, 'काली' राणी जान।
'चन्दन' संयम धार कर, पाया पद निर्वाण ॥

सुन करके भगवान की, वाणी मंगलकार।
सती 'सुकाली' ने किया, भव से बेड़ा पार ॥

राणी श्रेणिक भूप की, 'नन्दा जी' शुभ नाम।
पंच महाव्रत धार कर, काटे कर्म तमाम ॥

'नन्दवती' फिर दूसरी, श्रेणिक नृप की नार।
जीवन सफल बना गई, पंच महाव्रत धार ॥

अय 'चन्दन' 'नन्दुत्तरा', आदिक और अनेक।
श्रेणिक नृप की राणियां, तरीं जगत से देख ॥

धन्य! सती 'सुरसुन्दरी', कष्ट अनेक सहार।
'चन्दन' शील-प्रभाव से, भेंटें अमरकुमार ॥

मुक्त किया था कुष्ठ से, जिसने नृप श्रीपाल।
शील शिरोमणि धन्य वह, 'मैना' 'चन्दनलाल' ॥

॥ ३० दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समय

समय बराबर धन नहीं, 'चन्दन' जग दरम्यान।
पल भी खोएं एक नहि, ज्ञानवान - गुणवान ।।

समय बहुत अनमोल है, थोड़े में कहें बात।
हर आगत से बात यह, कहता था सुकरात ।।[1]

आगे बढ़ स्वागत करें, प्राज्ञ समय का सब।
मूर्ख पीछे भागते, मिले मगर वह कब ।।

पीछे से खल्वाट है, आगे सिर पर बाल।
पकड़ें आगे से अतः, इसको "चन्दनलाल' ।।

'चन्दन' पीछे दौड़ कर, समय न पकड़ा जाय।
जो मूर्ख ऐसा कहे, शीश पकड़ पछताय ।।

दिनकर स्वामी समय का, चलने का अभ्यस्त।
एक आयु का भाग ले, होता हर दिन अस्त ।।

---

1. अमर्सन भी यही कहा करता था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हर क्षण ही 'चन्दन' करें, कुछ न कुछ शुभ काम।
पता नहीं क्षण कौनसा, अमर बनादे नाम ॥

इक क्षण भी मतिमान का, जीवन कहा अमूल्य।
जन्म मूढ़ का पर सभी, समझो तृणके तुल्य ॥

करने योग्य तुरन्त जो, काम करें तत्काल।
अच्छी अच्छे काम में, टाल न 'चन्दनलाल' ॥

जगत कहीं का भी कहीं, जाता पल दरम्यान।
अतः उपेक्षा नहिं करें, क्षण की भी गुणवान ॥

भविष्य भरोसे बैठना, भारी है अपराध।
वर्तमान 'चन्दन' अतः, रहे हमेशा याद ॥

धर्म, कर्म, व्यवहार जो, करे समय अनुसार।
पाता वह जन सफलता, 'चन्दन' सभी प्रकार ॥

जिस भी प्रज्ञावान ने, सफल बनाया 'आज'।
उसका 'कल' भी आयेगा, सिर पर पहने ताज ॥

जिसका निर्बल 'आज' है, 'कल' भी निर्बल जान।
'चन्दन' ऐसे जीव का, जीवन है वीरान ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'कल करना जो आज कर, कल को कहते 'काल'।
कभी प्रतीक्षा नहिं करें, 'कल' की 'चन्दनलाल'॥

आज 'आज' तो हाथ है, पता न कल क्या होय।
अय 'चन्दन' मतिमान जन, अतः 'आज' नहिं खोय॥

जहां खड़े हैं आप, है– जीवन की बस राह।
सफ़र यहीं से कीजिये, मेरी मान सलाह॥

आंखों का इस देह में, है यों उच्च स्थान।
'चन्दन' जिससे दूर तक, देख सके इनसान॥

वायुयान-युग आज है, गाड़ी युग नहिं जान।
इसकी 'चन्दन' चाल तू, चातुर बन पहचान॥

होना 'चन्दन' कालज्ञ, गुण है एक महान।
त्रिकालज्ञ कहला गए, कई एक विद्वान॥

'चन्दन' यह तो बात है, सूरज के सम स्पष्ट।
नष्ट समय उसको करे, करे समय जो नष्ट॥

मूल्यवान हैं जगत में, सोना - हीरे - लाल।
सबसे समय अमोल है, 'चन्दन' करें ख़याल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाता है जब हाथ से, निकल समय अनमोल।
होता है मालूम तब, 'चन्दन' उसका मोल ॥

'चन्दन' करते शोक सब, खोने के पश्चात्।
मोल मिले हर चीज़ पर, मिलें नहीं दिन-रात ॥

घड़ी लगा 'कर' पर करें, काम समय अनुसार।
ठीक उन्हीं की है घड़ी, बाक़ी की बेकार ॥

गई घड़ी जो हाथ से, आएगी नहिं हाथ।
चलिये 'चन्दन' सर्वदा, अतः समय के साथ ॥

समय-नदी की बाढ़ में, बहे बहुत नर-नार।
कुछ ही नर पर कर गए, निर्मल यश विस्तार ॥

भला समय का मांगना, भला समय का दान।
भला समय का बोलना, कथा - कीर्तन - गान ॥

बिना समय इक बात भी, सजे न उसी प्रकार।
बुढ़िया के 'चन्दन' यथा, सोलह ही श्रृंगार ॥

गया समय जो हाथ से, आएगा नहिं हाथ।
'चन्दन' अच्छे काम में, लगे रहो दिन-रात ॥

॥ ३० दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन

मन की दुनिया है अजब, रचे अनेकों खेल ।
गगन-कुसुम यह तोड़ता, खींचे बालू - तेल ॥

एक जगह पर चौकड़ी, बैठे मुश्किल मार ।
चंचल 'चन्दन' मन बड़ा, दौड़े बारम्बार ॥

करती 'काया' पाप कम, बहुत 'वचन' नादान ।
सर्वाधिक यह 'मन' करे, 'चन्दन' है हैरान ॥

दिल को दास बनाइये, बनिये मत दिल-दास ।
'चन्दन' कारज आपके, होंगे सारे रास ॥

खाली मन मत छोड़िये; खाली खींचे खाल ।
काम इसे शुभ सौंपिये; कोई 'चन्दनलाल' ॥

स्वर्ग-मुक्ति में तो गया, कोई 'चन्दनलाल' ।
बहुतों को पर ले गया, मन पापी पाताल ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'मुश्किल मन है रोकना', कहते सारे लोग।
मुश्किल मन क्या रोकना, 'चन्दन' साधें योग॥

जब तक मन में नहिं जगे, गहरा ज्ञान-विवेक।
भटकेगा – भटकायगा, इसमें मीन न मेख॥

वश में 'चन्दन' देह हो, नयन, नाक, मुख, कान।
मनो विजेता की यही, है पक्की पहचान॥

'चन्दन' मन से हो गये, हों जो नाहक पाप।
दूर उन्हें कर लीजिये, करके पश्चाताप॥

'रावण' मरता मुफ्त क्यों, जो लेता मन मार।
'चन्दन' जीवन-राज-सुख, गया सभी कुछ हार॥

'सीता' ने मन जीत की, क़ायम एक मिसाल।
विश्व-वन्द्य माता बनी, देखो 'चन्दनलाल'॥

'सेठ सुदर्शन' ने किया, मन को जीत कमाल।
सिंहासन शूली बनी, 'चन्दन' चकित नृपाल॥

चमत्कार-सा हो गया, शीश-महल दरम्यान।
मन की दुनिया बदलते, बने 'भरत' भगवान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माशा सोना मांगते, जगी ताज की चाह।
बने 'कपिल' मन जीत पर, शाहों के भी शाह ॥

नहीं पहाड़-उजाड़ में, बैठा बन में नाहिं।
'चन्दन' प्यारा ढूंढिये. अपने ही मन माहिं ॥

जब तक मन में हैं भरे, कूट - कपट - तूफ़ान।
'चन्दन' कितना नाम रट, नहिं होगा कल्याण ॥

मन माला नहिं फेरता, फेरें केवल हाथ।
इस से तो 'चन्दन' कभी, बने न बिगड़ी बात ॥

माला तो मन की भली, बिन मन माला भार।
'चन्दन' चाहे मुक्ति जो, चंचल मन को मार ॥

पढ़ें मन्त्र मन शान्तकर, साथ विचारें अर्थ।
'चन्दन' सुमरन आपका, कभी न होगा व्यर्थ ॥

जो चाहें सुख-सम्पदा, जो चाहें कल्याण।
निश्चल-निश्छल मन जपें,अय 'चन्दन' भगवान ॥

जिस बिन अय 'चन्दन' नहीं,तीन काल कल्याण।
देह-शुद्धि से है बड़ी, मन की शुद्धि सुजान !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुद्धि करें सब देह की, करे न मन की कोय।
निर्मल मन को जो करे, जन्म-मरण क्यों होय ॥

देही दुनिया देखती, दिल को पर भगवान।
जो देखे भगवान को, झट 'चन्दन' कल्याण ॥

कभी चले अनुकूल तो, कभी चले विपरीत।
'चन्दन' मन-सा और नहिं, कोई वैरी - मीत ॥

हानि विचारे और की, ले ठगने की राह।
मांगे माया जगत की, यह मन बे-पर्वाह ॥

'चन्दन' 'सुनवाए' बुरा, 'करवाए' दुष्कर्म।
'दिखलाए' नीचा सदा, चंचल मन बेशर्म ॥

अय 'चन्दन' चल चित्त हो, जो कोई नर-नार।
न ही वह इस पार है, न ही है उस पार ॥

तन-मन-वाणी पर सदा, है जिसका अधिकार।
उसे योगियों का कहें, अय 'चन्दन' सरदार ॥

ज्ञान,ध्यान,जप,तप तथा, स्वाध्याय, सत्संग।
मन वश करने के सरल, अय 'चन्दन' छः ढंग ॥

॥ ३० दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दान

औरों का उत्थान हो, हो अपना कल्याण।
इसी भाव से जो दिया, कहें उसे ही 'दान'[1] ॥

यह भी कहते हैं कई, भारत के विद्वान्।
'चन्दन' जाए जो दिया, वही कहाए 'दान'[2] ॥

नेक नरन ने नेक दी, 'चन्दन' सहज सलाह।
अर्पण[3] करना सीखिए, पाने की जो चाह ॥

लेना जितना सहज है, देना कठिन महान।
दिये बिना 'चन्दन' मगर, मिलें नहीं भगवान ॥

सोच-समझ कर दीजिए, हो जिससे कल्याण।
शुभ कामों में जो लगे, वह ही सच्चा दान ॥

---

1. अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम्। —तत्त्वार्थ सूत्र अ० ७/३८
2. दीयते इति दानम्।
3. दानं संविभागः। —आचार्य शंकर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वही कहाये कर[1] कमल, जो कर करता दान ।
दान-हीन कर जानिये, 'चन्दन' चाम समान ॥

मेघ[2] सदा ऊंचा रहे, जो है जल-दातार ।
संग्रह करता सिन्धु लें, नीचे मगर निहार ॥

चित्त, वित्त और पात्र[3] ये, जितने शुद्ध महान् ।
अल्प,अधिक फल आपको, 'चन्दन' देगा दान ॥

रत्न - जटित अंगूठियां; कंगन हैं सब भार ।
अय 'चन्दन' है दान ही, हाथों का श्रृंगार[4] ॥

अजा-गले के जिस तरह, दोनों थन बेकार ।
बिना दान इनसान भी, है 'चन्दन' भू-भार ॥

अय 'चन्दन' सद्-दान है, धर्म-भवन का द्वार ।
जो भी चाहे पहुंचना, करले अंगीकार ॥

---

१. दानामृतं यस्य करारविन्दे ।

२. गौरवं प्राप्यते दानान्न तु वित्तस्य संचयात्
स्थितिरुच्चैः पयोदानां पयोधीनामधः स्थितिः—नीतिशतक

३. दव्व सुद्धेणं, दायग सुद्धेणं, पडिग्गह सुद्धेणं
तिविहं तिकरण सुद्धेणं, दाणेणं । —भगवती श० १५

४. दानेन पाणिर्नतु कंकणेन ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दान वही 'चन्दन' हरे, जो कि कष्ट, अज्ञान ।
दुर्गुण-पोषक दान को, समझो पाप महान ॥

जिसमें यश की-कामना, कहें उसे नहिं दान ।
दान, मान 'चन्दन' कभी, रहें न एक स्थान ॥

धन संचय से नहिं धनी– पाता है सम्मान ।
है 'चन्दन' संसार में, गौरव-दाता दान ॥

आवश्यकता हो जिसे, उसको[1] ही दें दान ।
आवश्यकता - हीन को, करें दान नादान ॥

'चन्दन' अन्धे पुरुष को, दर्पण बिल्कुल व्यर्थ ।
गंजे को कंघी भला, देने का क्या अर्थ ?

भोजन भूखे को भला, भरे पेट को पाप ।
औषधि रोगी को यथा, 'चन्दन' सोचें आप ॥

वही आपका है जिसे, आप करेंगे दान ।
'चन्दन' बाक़ी तो सभी, औरों का सामान ॥

---

१. *दरिद्रान् भर कौन्तेय ! मा प्रयच्छेश्वरे धनम् ।*
व्याधितस्यौषधं पथ्यं, नीरुजस्य, किमौषधम् ?

—हितोपदेश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन की गतियां तीन[1] हैं, दान, भोग औ नाश।
जो नहिं देता, भोगता, रहे न पाई पास॥

मधु-मक्खी[2] को देखिये, रखती जो मधु-जोड़।
दान, भोग से रहित को, लेते लोग निचोड़॥

दान, शील, तप, भावना, चार धर्म - आधार[3]।
प्रथम सभी में दान है, 'चन्दन' करें विचार॥

दानवीर नहिं समझिये, अधिक करे जो दान।
ठीक समय पर दे वही, दानवीर इनसान॥

बोकर बीज किसान ज्यों, ढंक देता तत्काल।
त्यों दे दान छुपाय जन, चंगा 'चन्दनलाल'॥

---

१. दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुंक्ते, तस्य तृतीया गतिर्भवति॥

—नीतिशतक

२. देयं भोज! धनं धनं सुकृतिभिर्नो संचितं सर्वदा।
श्री कर्णस्य बलेश्च विक्रमपतेरद्यापि कीर्तिः स्थिता॥
आश्चर्यं मधुदानभोगरहितं नष्टं चिरात् संचितम्।
निर्वेदादिति पाणिपाद-युगलं घर्षन्त्यहो मक्षिकाः॥

३. दुर्गतिप्रपतज्जन्तु-धारणाद् धर्म उच्यते।
दान-शील-तपो भाव-भेदात् स तु चतुर्विधः॥

—त्रिषष्टिशलाका पुरुष-चरित्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दान-दान नहिं एक-से, दान-दान में फ़र्क़।
मिले एक से मुक्ति तो, मिले एक से नर्क॥

निर्मल मन से ही दिया, दान करे कल्याण।
'नागश्री' भव-भव भ्रमी, देकर खोटा दान॥

तामस, राजस, सात्विक, कहती गीता दान।
तीनों पर ही दीजिये, 'चन्दन' गहरा ध्यान॥

देश-काल और पात्र का, ठीक-ठीक कर ज्ञान।
अनउपकारी को दिया, ही है 'सात्विक' दान॥

जो उपकारी को दिया, या फल का अरमान।
देने से हो दिल दुखी, है वह 'राजस' दान॥

देश-काल के ज्ञान बिन, अथवा बिन सम्मान।
दिया अपात्र को तथा, तीनों 'तामस' दान॥

जैन, बौद्ध का, हिन्दुओं-का है यह ऐलान।
अन्न, अभय औ ज्ञान का, सबसे दान महान॥

अभयदान औ ज्ञान औ-औषध औ आहार।
दान कहा कुछएक ने, 'चन्दन' चार प्रकार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' इस संसार में, हैं जितने अरणगार।
उनको कहना चाहिये, ज्ञान - दान - दातार ॥

करुणा, संग्रह, भय तथा, लज्जा, गौरव, धर्म।
कृत, कारुण्य, करिष्यति, दसवां दान अधर्म ॥

रोगी, दीन, अनाथ पर, होकर करुणावान।
'चन्दन' देते लोग जो, है 'अनुकम्पा' दान ॥

दुख में फंसा सहायता–पाने को इनसान।
देता है जो कुछ कहें, उसको 'संग्रह' दान ॥

राजपुरुष को, भूप को, जो जन या बलवान।
'चन्दन' भय से जो दिया, कहें उसे 'भय' दान ॥

मन में तो 'चन्दन' नहीं, देने का अरमान।
लज्जा से पर जो दिया, है वह 'लज्जा' दान ॥

जिसने जो कुछ भी दिया, पाने को सम्मान।
उसका ही तो नाम है, 'चन्दन' 'गौरव' दान ॥

महाव्रती को भक्ति से, दिया गया जो दान।
'धर्म-दान' 'चन्दन' उसे, कहें सभी गुणवान ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बदले में उपकार के, देता जो इनसान।
अथ 'चन्दन' विद्वान सब, कहें उसे 'कृत' दान ।।

किसी मृतक के शोक में, किया जाय जो पुण्य।
'चन्दन' उसको ही गुणी, दान कहें 'कारुण्य' ।।

दिया जाय जो सामने, रख कर प्रत्युपकार।
दान 'करिष्यति' है वही, 'चन्दन' कहे पुकार ।।

हिंसा-चोरी-झूठ औ— दुराचार के कर्म।
जिससे हों 'चन्दन' वही, जानो दान 'अधर्म' ।।

दश दानों का जो किया, किंचित यह विस्तार।
भला-बुरा है कौन सा, पण्डित करें विचार ।।

बिना दान दुश्वार है, श्रावक का कल्याण।
चौथा शिक्षाव्रत अतः, है सिखलाता दान ।।

पूज्य तीर्थङ्कर हुए, जितने जग दरम्यान।
सब ने ही तो था दिया, 'चन्दन' वर्षी-दान ।।

'ऋषभदेव' के जीव ने, पहले भव मंझार।
दिया दान जो सन्त को, पाई समकित सार ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'महावीर' के जीव ने, बन करके 'नयसार'।
दान दिया तो पालिया, समकित का उपहार॥

रोग-मुक्त जिससे हुए, महावीर भगवान।
गाथा-पत्नी 'रेवती', दिया प्रशंसित दान॥

जब भी कोई सामने, आता था धनवान।
गौतम प्रभु से पूछते, क्या कर आया दान?

जैन-धर्म का जिस समय, जाना सत्य स्वरूप।
तभी दानशाला शुरू, करी 'प्रदेशी' भूप॥

शालिभद्र को जो मिला, वैभव, मान महान।
कारण उसका भी यही, अय 'चन्दन' था दान॥

श्रावक 'तुंगिया नगर' के, दिल उदार - दातार।
दिन को रखते थे खुले, 'चन्दन' घर के द्वार॥

धन सब वारा देश पर, बिना किये परवाह।
ओसवाल-कुल-तिलक था, 'चन्दन' 'भामाशाह'॥

सुनकर जिनका नाम शुभ, हैं कहते सब वाह!
दानी वीर गुजरात के, 'खेमा' 'जगडूशाह'!!

॥ ५५ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शासक

●

कच्चा हो नहिं कान का, रसिया नहिं वाचाल ।
भावुक नहिं उद्दण्ड हो, शासक 'चन्दनलाल' ।।

अय 'चन्दन' न्यायी नहीं, अक़्लमन्द नहिं और ।
न निष्ठा कर्त्तव्य की; शासक वह किस तौर ?

शोषण नहिं, पोषण करे, उजड़ा नगर बसाय ।
'चन्दन' दे न धमकियां; शासक वही कहाय ।।

अनुशासन के नियम सब, शासक खुद अपनाय ।
जिससे जनता आप ही, उन पर चलती जाय ।।

अनुशासन को तोड़ दे, शासक ही जब आप ।
'चन्दन' उसके राज्य में, क्यों न पनपे पाप ।।

पक्षपात से जो बचे, शासक सच्चा होय ।
बने नहीं दुस्साहसी, गुण गावे हर कोय ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्त चित्त हो, चतुर हो, तीजे सद्गुणवान ।
'चन्दन' साधे सतत ही, जनता का कल्याण ॥

कभी किसी का भी करे, हरगिज़ नहीं अनिष्ठ ।
अय 'चन्दन' शासक रहे, सभ्य, शिष्ट औ मिष्ठ ॥

सुन्दर जीवन, साथ में, सुन्दर हो स्वभाव ।
ऐसे शासक पुरुष की, तरी समझिए नाव ॥

प्रेम, दया, करुणा, क्षमा, शील, सत्य, सन्तोष ।
सप्त गुणों से युक्त जो, शासक गुण का कोष ॥

जुआ, चोरी, ब्लैक का, है जैसे प्रतिषेध ।
शासक शासन में करे, तैसे मद्य निषेध ॥

गुण्डा-गर्दी, ठग्गियां, हत्या, अत्याचार ।
शासन में से दूर कर, शासक करे सुधार ॥

जिसके शासन काल में, स्वर्ग बने संसार ।
'चन्दन' उसको देवता, कहते सब नर-नार ॥

जनता बेटी - बेटियां, शासक माई - बाप ।
घी-खिजड़ी जो परस्पर, वहां कहां सन्ताप ॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्यार्थियों से

प्यारे छात्रो ! देश को, है तुम पर अभिमान ।
सभ्य-भव्य बन कीजिये, जीवन का निर्माण ॥

जिसमें विनय, विवेक, शम, शील, सत्य, सन्तोष ।
उसी छात्र का ही बढ़े, विद्या धन का कोष ॥

लेकर अच्छे अंक जो, होना चाहो पास ।
फ़िल्म, सुरा, सिगरेट के, कभी न फटको पास ॥

वैरी विद्या के बड़े, तोड़ - फोड़, हड़ताल ।
दोनों ही से दूर तुम, रहना 'चन्दन लाल' ॥

दया, सत्य से, प्रेम से, रख कर पूरा प्यार ।
दुराचार को दूर से, ही देना दुत्कार ॥

हिंसा, चोरी, झूठ, छल, देना द्वेष बिसार ।
आपस में रखना सदा, बहन-बन्धु-सा प्यार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सेठ सुदर्शन, शिवा जी, पूरनभक्त, प्रताप।
जैसे उच्च चरित्र थे, बनना बच्चो! आप॥

जो कि काले नाग-सा, करे रंग में भंग।
करें कभी नहिं भूल भी, दुष्ट जनों का संग॥

नक़ल मार कर छात्र जो, हो जाते हैं पास।
उन के जीवन का कभी, होता नहीं विकास॥

जिनसे लेते आप हैं, सद् विद्या का दान।
मात-पिता सम कीजिए, उन सब का सम्मान॥

पुत्र-पुत्रियों-सा स्नेह, जिनसे पाते आप।
शिक्षक के अपमान से, मिलता दुख-सन्ताप॥

विद्या-गुरु तुम को कभी, डालें भी फटकार।
महा मधुर ही मानना, मिकचर के अनुसार॥

अन्दर हित का हाथ पर, ऊपर मारें चोट।
शिक्षक सदा निकालता, कुम्भकार सम खोट॥

जिसने शिक्षण ले लिया, खूब लगा कर ध्यान।
चन्दा-सा वह चमकता, दुनिया के दरम्यान॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पश्चिम-पुजारी

'चन्दन' चाहे लाख है, हिन्द हमारा देश।
प्यारा प्राण समान पर, हमें विदेशी वेश!!

किसी फिरंगी के कभी, दिखा न हिन्दी-वेश।
'चन्दन' पर यह नक़लची; धन्य! हमारा देश॥

अय हिन्दी! अंग्रेज का; क्यों भरता है रूप।
रूप बदल कोई बना, अभिनेता क्या भूप?

हिन्द देश की ही सजे, तव तन पर हर चीज़।
हिन्द देश को भूलना, अच्छा नहीं अज़ीज़!

भूलेगा जो हिन्द को, भूले गा मां-बाप।
भूल जायगा एक दिन, फिर तो अपना आप॥

जिसको प्यारा प्राण से, 'चन्दन' अपना देश।
तन पर नहीं सजायगा, कभी विदेशी वेश॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपने भाषा, वेश से, जिसको भी हो द्वेष।
'चन्दन' गौरव एक दिन, खो बैठे वह देश॥

इंगलिश है हर काम में, हिन्दी से परहेज़।
'चन्दन' हिन्दी बन चले; एक तरह अंग्रेज़॥

'चन्दन' भाई-भगिनियां, भारत-भाषा भूल।
मिस-मिस्टर हैं बन रहे, अंग्रेज़ी में फूल॥

लिखें 'वैलकम' द्वार पर, हिन्दी द्रोही लोग।
सभी फ़िरंगी-दास वे, हैं निन्दा के योग॥

हिन्दी तज हिन्दी करें, जो इंगलिश से प्यार।
अय 'चन्दन' वे क्यों नहीं, हिन्दी के गद्दार ?

पत्रों पै इंगलिश पते, तन पर इंगलिश वेश।
बोर्ड इंगलिश के यहां, यह है भारत देश!!

नज़र मार 'चन्दन' ज़रा, देखो तो बाज़ार।
इंगलिश बोर्ड हैं सैंकड़ों, हिन्दी के दो-चार!!

उन में भी हिन्दी तले, ऊपर इंगलिश-मेम।
'चन्दन' हिन्दुस्तान का; यह है हिन्दी-प्रेम!!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अधिक पढ़े हिन्दी यहाँ, कम इंगलिश-विद्वान् ।
छोड़ अधिक,कम के लिये, बोर्ड क्यों श्रीमान् ?

ऊपर हिन्दी, बाद में. चाहे इंगलिश होय ।
ऐसे बोर्ड को बुरा, कहे न 'चन्दन' कोय ।।

पहले अपना देश हो, सभी विदेशी बाद ।
उत्तम पुरुषों की यही, है 'चन्दन मर्याद ।।

तन,मन,धन 'चन्दन' सभी, वारे वही सहर्ष ।
रोम-रोम में रम रहा, जिसके भारतवर्ष ।।

ऊपर से तो हिन्द का, अन्दर जिसके द्वेष ।
'चन्दन' ऐसे ढीठ से, रहना दूर हमेश ।।

जड़ काटैं जो हिन्द की, बैठ हिन्द के बीच ।
कोई होगा और क्या, उससे भी बढ़ नीच ?

सिर पर चढ़ने दे न जो, कभी विदेशी भूत ।
'चन्दन' भारत मात का, सच्चा वही सपूत ।।

देश-द्वेष मन में भरा, शीश विदेशी भूत ।
'चन्दन' भारत मात का, असली वही कपूत ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' तन स्वाधीन है, है मन मगर गुलाम ।
अपने भाषा, वेश से; क्या हिन्दी को काम ?

गला सजाने के लिए, 'चन्दन' 'टाई' व्यर्थ ।
गला सजाने को सिरफ़, वाणी मधुर समर्थ ॥

निन्दा, चुग़ली गालियाँ; वाणी जिसकी सख्त ।
ख़ाक सजाएगा गला, 'चन्दन' टाई-भक्त ॥

साधु, सती को देख जो, 'चन्दन' झुके तुरन्त ।
बिन टाई के ही सजे, गर्दन वह अत्यन्त ॥

'चन्दन' जब अंग्रेज़ वह, चला हिन्द को लूट ।
दिये तीन तोहफ़े हमें, इंगलिश, फ़ैशन, फूट ॥

'चन्दन' 'मम्मी' अब कहो, 'माँ' कहने में पाप ।
ख़बरदार! जो बाप को, कहा किसी ने बाप !!

'चन्दन' इंगलिश क्या पढ़े, बने लोग अंग्रेज़ ।
शीश 'हैट', 'टाई' गले, इंगलिश बोलें तेज़ ।

इंगलिश पढ़ने के नहीं, 'चन्दन' कभी विरुद्ध ।
बनिये पर अंग्रेज़ मत, रखिये निर्मल बुद्ध ॥

॥ ३० दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खान-पान

खाना खाना चाहिये, कभी न धर्म-विरुद्ध ।
खाना ख़ाना चाहिये, सदा-सर्वदा शुद्ध ।।

जिसका 'चन्दन' शुद्ध नहिं, खान-पान-पहरान ।
वह भी दुनिया में भला, है कोई इनसान ?

जो चाहें 'चन्दन' अधिक, रहना आप निरोग ।
अधिक खटाई-खाण्ड का, करिये नहीं प्रयोग ।।

अय 'चन्दन' मधुमेह-से, उपजत उनको रोग ।
चीनी आदिक अधिक जो, खाते मूर्ख लोग ।।

सारे जग से हिन्द की, उलटी 'चन्दन' चाल ।
खाण्ड खायंगे खूब ही, खीर-दूध में डाल ।।

अधिक मसाला-मिर्च से, होते रोग अनेक ।
भोजन में 'चन्दन' अतः, रखिये बहुत विवेक ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुण्य-पाप का आपको, कुछ हो अगर विचार।
सिरका जिस में हो पड़ा, मत खाना आचार ॥

लोक और परलोक में, जो है दुख की खान।
भोजन कभी अभक्ष्य का, करें नहीं मतिमान ॥

मच्छर-कीट-पतंग-से, पड़ते जीव अपार ॥
'चन्दन' भोजन रात का, दीजे विज्ञ ! बिसार ॥

'चन्दन' अपनी भूख से; जो जन ज्यादा खाय।
रोग अनेकों मोल ले, मूर्ख मुफ़त कहाय ॥

बिना भूख भोजन करे, अय 'चन्दन' बीमार।
गरल अधिक आहार है, अमृत अल्प आहार ॥

चाहे कोई भी कभी, अय 'चन्दन' ले देख।
हित-मित-अल्पाहार से, मिटते रोग अनेक ॥

चप-चप की ध्वनि नहिं करे, करे न हाथ खराब।
खाएगा मुख बन्द कर, मानव 'स्थिर स्वभाव' ॥

सड़प-सड़प मुख खोलकर, करता वसन खराब।
जल्द-जल्द है निगलता, जन 'चंचल स्वभाव' ॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हंसना

है हंसना भी इक कला, हरइक को नहिं आय।
रोता एक हंसाय तो– हंसता एक रुलाय ॥

सन्तन का हंसता हृदय, पण्डित के द्वय नैन।
मार ठहाका मूढ जन, है हंसता दिन-रैन ॥

हंसे सरलजन खिलखिला, शान्त पुरुष मुस्काय।
नीच-निकम्मा जिस तरह, घोड़ा हिनहिनाय ॥

हंसे शिष्ट अवसर लखा, अवसर बिना अशिष्ट।
महा शुष्क स्वभाव को, कभी न हंसना इष्ट ॥

सदा करे उपहास को, धूर्त या चालाक।
जो नर गन्दी प्रकृति का, भद्दे करे मजाक ॥

देख सुखी संसार को, हो नहिं जो सन्तुष्ट।
संकट में लख और को; 'चन्दन' हंसता दुष्ट ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खुल जाता है दैत्य-सा, जिसमें सभी गला।
'चन्दन' कभी असभ्य का, हंसना नहीं भला ॥

चाहे 'चन्दन' है हंसी, एक सुगन्धित फूल।
लख लोगों के दोष पर, हंसना भारी भूल ॥

हंसी-हंसी में भी कभी, कहें न ऐसी बात।
जिससे जलता मन रहे, अय 'चन्दन' दिन-रात ॥

रोग-मूल खांसी अगर, हंसी कलह का मूल।
हंसी-दिल्लगी नहिं करें, 'चन्दन' कभी फ़िज़ूल ॥

खुल करके हंसते सदा, 'चन्दन' जो भी लोग।
रोग उन्हें कम व्यापते, रहते अधिक निरोग ॥

अगर गिरे बाज़ार में, बाईसिकल - सवार।
मददगार कोई बने, हंसते मगर अपार ॥

अन्धा, काना, निर्धनी, बेढंगा — बेडौल।
दीन-दुखी-दुर्बल लखा, करता मूढ मखौल ॥

बात हंसी की देख-सुन, हैं हंसते अल्पज्ञ।
छुपा जिन्होंसे कुछ नहीं, नहीं हंसें सर्वज्ञ ॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चोरी

छल से-बल से और के, लेना हक को मार।
अथ 'चन्दन' चोरी उसे, कहता सब संसार॥

पहुंचे जिससे और को, भारी दुख-सन्ताप।
चोरी-सा संसार में, नहीं दूसरा पाप॥

रस्ता चलते लूटना, या फिर खनना खात।
जेब काटना, चोर के, लक्षण हैं साक्षात॥

बने सहायक चोर का, ले चोरी का माल।
ताला तोड़े—तीन ये, तस्कर 'चन्दनलाल'॥

चीज़ और की और दे, लेना ज्यादा दाम।
हीन-अधिक भी तौलना, चोरी का है काम॥

करें मिलावट लोभ से, चीजों में जो लोग।
वे भी 'चन्दन' चोर हैं, भारी निन्दा योग॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नीर दूध में, स्वर्ण में, जो भी खोट मिलाय।
होने पर भी चोर न, 'चन्दन' चोर कहाय॥

करना राज्य विरुद्ध औ, देना नहीं जगात।
चोरी के ही भेद हैं, ये भी दो विख्यात॥

कविता लेकर अन्य की, भर देना निज नाम।
यह भी एक प्रकार से, चोरी का है काम॥

प्रायः थोड़े दाम में, मिले चुराया माल।
कभी भूल कर भी नहीं, लेना 'चन्दनलाल'॥

जूते धर्म-स्थान से, जो भी दुष्ट चुरायं।
जन्मान्तर में शीष पर, वही तड़ातड़ खाँयं॥

आदमियत है आपको, 'चन्दन' अगर कबूल।
बिन आज्ञा नहिं लीजिये, चीज़ किसी की भूल॥

हीरे-सा अनमोल जो, मिले न बारम्बार।
सुरदुर्लभ मानव जनम, जाते तस्कर हार॥

यहां अयश औ जेल-दुख, आगे नर्कावास।
समझदार जन जांयं क्यों, फिर चोरी के पास॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूर्ख

मलिन रूप पहुंचे सभा, बैठे अंग भिड़ाय।
अनहोनी इच्छा करे, महा मूढ़ कहलाय॥

दो में बनता तीसरा, बिन न्योते घर जाय।
बोले बिना बुलाय ही, महा मूढ़ कहलाय॥

बिना भूख ही खाय या, अधिक भूख से खाय।
मग में खाता जाय जो, महा मूढ़ कहलाय॥

बिन परिचय अनजान के, साथ सफ़र में जाय।
धर्मी की निन्दा करे, मूढ़न - भूप कहाय॥

बेटा रखकर लाड़ला, विद्या नहीं पढ़ाय।
विषसे जो करता नशा, मूढन - भूप कहाय॥

नगन नाक जो छींकता, नंगे मुख जमुहाय।
गुप्त बात चौड़े कहे, मूढ़न-भूप कहाय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाते छेड़े सर्प को, लाठी–छड़ी लगाय।
करे संगती नीच की, मूढ़न - भूप कहाय ॥

शौच समय जो बोलता, पड़ा रहे बेकार।
करे व्यर्थ ही पाप जो, मूढ़न का सरदार ॥

यान चलाये दृष्टि बिन, बुद्धि बिना व्यापार।
बिना प्रयोजन डोलता, मूढ़न का सरदार ॥

जो जन करे अनेक से, एकाकी तकरार।
उसको भी 'चन्दन' कहा, मूढ़न का सरदार ॥

रोके जो दातार को, नहिं माने उपकार।
गुणियों की निन्दा करे, मूढ़न का सरदार ॥

चलते - उठते, बैठते, करे बड़ों को पीठ।
'चन्दन' उसको जानिये, महामूढ़ जन ढीठ ॥

बात-बात में गालियां, कवि से करे विरोध।
नमता से जो नहिं नमे, मूर्ख महा अबोध ॥

केवल रीझे रूप पर, न देखे गुण - दोष।
अय 'चन्दन' उस मूढ़पर, पुनः–पुनः अफ़सोस ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीपक के आगे खड़े, निशि में खींचे खाट।
बिना सुहाती सीख दे, मूर्ख बारह बाट॥

करता आलस पठन में, लिखते करता बात।
पत्नी से करता कलह, जानो मूर्ख-जात॥

बात कहे समझे बिना, करे प्रकाशित मर्म।
खर्च बढ़ावे लाभ बिन, जानो मूर्ख परम॥

रुष्ट मनावे मीत नहिं, करे मीत से वाद।
हंसी-हंसी में हो कुपित, मूर्ख की औलाद॥

मात-पिता-गुरुदेव औ– कहे बड़ों को 'तू'।
उस मूर्ख मतिहीन पर, सब ही करते 'थू'॥

लघुशंका निर्लज्ज हो, जो करता नादान।
मूढ शिरोमणि जानिये, करे ज्ञान पा मान॥

रूपवती लख भामिनी, मन में करता चाह।
मूर्ख जानो जो चले, एकाकी भय - राह॥

बैठे आगे आन कर, बिना दिये सम्मान।
करे राड़ जो ज़ोर बिन, महामूढ़ लो जान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करे बड़ों का सामना, करे काम में देर।
मूढ़-शिरोमणी जानिये, जो बातों का शेर॥

अय 'चन्दन' जो जन करे, हरइक का विश्वास।
उसको भी बस जानिये, मूर्ख-दल का दास॥

'चन्दन' जिस बे-अक़्ल का, नहीं अक़ल में दखल।
बन सकता न वह बड़ा, औरों की कर नक़ल॥

बन करके अति आलसी, रखना घर में दास।
चन्दन यह भी जानिये, मूर्खता के पास॥

धर्म-पुण्य - भगवान के, कहकर छल से वाक।
मूर्ख जन को लूटते–रहते हैं चालाक॥

पाने को सम्मान या– पाने को सन्तान।
मूर्ख बनते बहुत से, बनने को धनवान॥

करे बुद्धि-विपरीत जो, अय 'चन्दन' हर काम।
उसको तो संसार में, 'मूर्ख' कहते आम॥

बालिश, मूर्ख, मूढ औ– यथाजात, वैधेय।
अज्ञ, 'मूढ' के नाम छः, अय 'चन्दन' हैं ज्ञेय॥

॥ ३० दोहे सम्पूर्ण॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूर्ख-नीति

सोच-समझ कर कीजिये, मूर्ख से व्यवहार।
मूर्ख से व्यवहार है, 'चन्दन' कठिन अपार॥

बुद्धिहीन हर आदमी, बड़ा भयंकर होय।
सुनता वह 'चन्दन' नहीं, बात किसी की कोय॥

अधिक सुनाता आप ही, सुनना जाने व्यर्थ।
'चन्दन' सुनता भी अगर, करता अर्थ - अनर्थ॥

कहा न माने और का, समझ स्वयं की नाहि।
रहे सलामत किस तरह, मूर्ख जन जग माहि॥

'मूर्ख जन जो कुछ करे, करे नहीं मतिमान।'
देखो मिलता मूढ़ से, अय "चन्दन' यों ज्ञान॥

जिससे मूर्ख पुरुष का, पलटें शीघ्र स्वभाव।
कोई भी औषधि नहीं, कोई नहीं उपाव॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसे सिखाने में सदा, मन में उपजे कोप।
उसकी भी औ स्वयं की, हो प्रज्ञा का लोप॥

सबसे अच्छी अक़ल की, बात यही कहलाय।
मूर्ख को 'चन्दन' कभी, कहीं न छेड़ा जाय॥

मूर्ख रीझे सहज ही, बहुत सहज विद्वान।
अर्द्ध-पठित का रीझना, 'चन्दन' कठिन महान॥

फिरे महाज्ञानी बना, अल्प ज्ञान जो पाय।
उसको तो सर्वज्ञ भी, नहिं सकता समझाय॥

बचें अगाड़ी सांड की, बचें पिछाड़ी घोड़।
बचें सदा 'चन्दन' मगर, मूर्ख से चहुं ओर॥

कथा-कहानी सरस सुन, या फिर कुछ भी खाय।
'चन्दन' मूर्ख आदमी, वशीभूत हो जाय॥

कुछ भी कर दें आप या- उसके मन अनुकूल।
वशीभूत हो जायगा, खुशियों में वह फूल॥

झूठा, निन्दक, नीच, खल, चोर, चुग़ल, शठ, मूढ़।
परिचय 'चन्दन' आठ से, करें कभी नहिं गूढ़॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बुद्धि

वृषभ, अश्व, गज, सिंह से, मानव मानी हार।
तन-बल से 'चन्दन' गये, ढोर मोरचा मार॥

पर, प्रज्ञा में और नहिं, मानव के समकक्ष।
कभी कहे वह बात जो, मोल पड़े शत-लक्ष॥

जिसके प्रज्ञा पास है, पुरुष वही बलवान।
बुद्धि बिना 'चन्दन' मगर, मानव ढोर समान॥

कुटिल अगर प्रज्ञा बने, हने अनेकों लोग।
प्रज्ञा का बन्दूक-सम, है दुस्तर उपयोग॥

खोज-खोज कर सत्य को, करना सतत प्रकाश।
धिषणा का 'चन्दन' यही, काम एक है खास॥

पाप, पुण्य की धर्म की, असल जिसे पहचान।
अय 'चन्दन' है असल में, वही मनुज मतिमान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रोध, कपट से, काम से, बचता रहे विशेष।
बुद्धिमान जन जानिये, करे न ईर्ष्या, द्वेष ॥

रहे सदा ही सोचती, जो कि धर्म-विरुद्ध।
अय 'चन्दन' पण्डित सभी, कहते उसे 'कु-बुद्ध ॥'

भ्रमणशील चित-वृत्तियां, जो हैं करती तंग।
रोका जाता है उन्हें, 'चन्दन' प्रज्ञा-संग ॥

जिससे अय 'चन्दन' मिटे, जन्म-मरण का रोग।
मनो-वृत्ति का रोकना, ही कहलाता 'योग' ॥

रहे न कोई काम का, बुद्धि बिगड़ जो जाय।
अय 'चन्दन' संसार में, 'पागल' वह कहलाय ॥

करता ही यों तो रहे, उन्मादी उत्पात।
अधिक उछलता-कूदता, मगर चान्दनी रात ॥

मानस-उन्मादी लखो, पर पूनम की रात।
अगर हुआ उन्माद तो, करे अधिक उत्पात ॥

जमुहाना, अंगड़ाइयां— लेना बारम्बार।
पागलपन का चिन्ह है, 'चन्दन' सभी प्रकार ॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मित्रता

मधुर मित्रता का वहीं, होता आविर्भाव।
दोनों में हो सरलता, दोनों सम स्वभाव॥

आए दोनों के नहीं, सन्मुख स्वार्थ गिद्ध।
होती है 'चन्दन' तभी, मधुर मित्रता सिद्ध॥

जल्द बनाना मीत या— बनता जल्दी मीत।
प्रीत-रीत के सर्वथा, अय 'चन्दन' विपरीत॥

फंसकर मीठी बात में, लख कर केवल रूप।
'चन्दन' बनता मीत जो, मूढ़न का है भूप॥

बनना परिचित प्रथम तो, आपस का फिर ज्ञान।
उसके पीछे मित्रता, करने में कल्याण॥

नहिं ऋण दीजे मित्र को, नहीं लीजिए आप।
वरना 'चन्दन' मित्रता, पाप-शाप-सन्ताप॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन देना तो मित्रता– का है 'चन्दन' काम।
पीछे वैर-विरोध जो, वापिस मांगे दाम॥

'चन्दन' सच्चे मित्र की, विपद कराए परख।
रहे विपद में दूर जो, दूर उसी से सरक॥

अंतरंग - सच्चा सखा, हरइक को ही मान।
मित्रोचित व्यवहार से, होता है नुक़सान॥

साथी स्वार्थ समय के, जो होते इनसान।
'चन्दन' उनसे दूर ही, रहने में कल्याण॥

श्रेष्ठ मित्र की है यही, अय 'चन्दन' पहचान।
सुख-दुख में व्यवहार है, करता एक समान॥

रोके 'चन्दन' पाप से, अच्छे राह चलाय।
अवगुण लोपे, गुण कहे, सच्चा मीत कहाय॥

करता अनुचित लाभ का, जो भी पुरुष प्रयास।
'चन्दन' उसकी मित्रता, हुई समझिये नाश॥

लेन-देन का कीजिये, नहि 'चन्दन' व्यवहार।
बना-बनाया अन्यथा, बिगड़ जायगा प्यार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहिं मिलना, मिलना अधिक, बिन अवसर की मंग।
तीनों से ही मित्रता, हो जाती है भंग ।।

नहीं भला है मित्र का, अय 'चन्दन' उपहास।
वश करने को भी बुरा, दम्भों भरा प्रयास ।।

बहुत अधिक भी मित्र का, ठीक नहीं विश्वास।
वैरी वह बन कर कभी, करदे पर्दाफ़ाश ।।

शीघ्र भड़कना चाहिये, 'चन्दन' नहीं कभी।
दूर रहेंगे आप से, वरना मित्र सभी ।।

अगर मित्र को चाहते, सदा देखना शकल।
निज जीवन में मित्र के, कभी न दीजे दखल ।।

सज्जन से सज्जन भले, कैसा ही हो मीत।
सीमा तक ही त्याग की, सदा निभाहे रीत ।।

दृढ़ रहे जो मित्रता, शिक्षा सुनें अनूप।
'चन्दन' बनना मीत को, कभी न भार स्वरूप ।।

कभी बनो बल अन्ध नहिं, ऊच्च दोस्त को पाय।
वैद्य भरोसे पर कभी, क्या कोई विष खाय ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' की इस बात पर, खूब दीजिये ध्यान।
पर-बल से कोई कभी, बनता नहिं बलवान ॥

मैत्री के - व्यवहार में, रहिये सदा सतर्क।
तिल-से संशय से कहीं, पड़े न गिरि-सा फ़र्क़ ॥

मिलते रहने से भले, चलें प्रेम - व्यवहार।
मिलना 'चन्दन' चाहिये, पर नहिं बारम्बार ॥

सखा स्वार्थी की कथा, कहता यों संसार।
'चन्दन' खिसके दम लगा, गांजू किसके यार ॥

कभी कहावत भूलिये, 'चन्दन' यह भी मत।
किसके मीत पहाड़िये, खिसके खाकर भत्त !!

होता स्वागत था कभी, दूध पिला भर पेट।
'चन्दन' पर अब मीत मिल, पेश करें सिगरेट !!

मित्रता का रेत से, आज निकलता तेल।
मिला मित्र तो ले चले, गन्दे सिनमा खेल ॥

आज बिगाड़ें यार ही, यारों का परलोक।
'चन्दन' सिनमा-शौक पर, शोक! शोक! शत शोक!!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिनमा से सीता बनी, कहिये कोई नार ?
बनी सरूपनखा मगर, 'चन्दन' कई हज़ार ॥

उसी सिनेमा का अहो ! 'चन्दन' कितना प्यार!
आज दिखा करती सखी, सखियों का सत्कार ! !

बना एक भी राम नहिं, रावण बने अनेक।
मूर्ख गाल बजा रहे, सड़ियल सिनमा देख ॥

जहां कला के कण्ठ पर, चलता काम-कुठार।
'चन्दन' ऐसे खेल पर, लाख-लाख धिक्कार ! !

खेल बुरा नहिं देखना, अगर बनाए राम।
बुरे खेल को दूर से, 'चन्दन' करो सलाम ! !

सच्ची उसकी प्रीत है, सच्चा है वह मीत।
'चन्दन' भाता है जिसे, सन्त-संग - संगीत ॥

दुराचार - दुर्व्यसन का, महा लगावे रोग।
दोस्त न, दुश्मन ही उसे, कहते पण्डित लोग ॥

चिता-धूम की तरह से, दुष्ट मीत से भाग।
लग जायगा अन्यथा, कड़ा कलंकित दाग़ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फ़िल्म, सुरा, सिगरेट के, मिलते मित्र अनेक।
दोस्त दुर्लभ एक भी, जिस में विनय-विवेक॥

करे प्रशंसा सामने, निन्दा पर पश्चात।
'चन्दन' ऐसे मीत से, करें कभी नहिं बात॥

'चन्दन' दाख सुपारियां, और बेर, बादाम।
चार तरह के मीत के, साफ़ समझिये नाम॥

प्रीत रीत की है अहो! कैसी यह विपरीत।
सुख में न, दुःख में सदा, परखा जाए मीत॥

पीछे करे सराहना, मिलने पर सम्मान।
दुःख में करे सहायता, रीत प्रीत की जान॥

मित्रता का बहुत है, करना तो आसान।
उसे निभाना है मगर, 'चन्दन' कठिन महान॥

जिससे जाए न कहीं, कोई कभी छला।
सदा सखा संदिग्ध से, वैरी प्रगट भला॥

कहीं बुराई आपका, ले नहिं गला दबोच।
'चन्दन' अतः बनाइये, सखा सदा ही सोच॥

॥ ४६ दोहे सम्पूर्ण॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

युवा-वर्ग से

जागो युवको ! युवतियो ! करो समाज सुधार ।
देश आपका आपको, कब से रहा पुकार ॥

आज रिवाज समाज के, हुए और के और ।
अफ़रा-तफ़री का इसे; क्यों न कहिये दौर ?

बैठीं बहुत कुमारियां, मुश्किल बहुत विवाह ।
लालच का घुण क़ौम को, करे न कहीं तबाह ?

बिन मांगे ही जो मिले, वही लीजिये आप ।
छीना-झपटी छोड़िये, जो है भारी पाप ॥

जीवन भर देते रहें, बेटी को मां-बाप ।
उनके नहीं कृतज्ञ क्या, फिर भी होंगे आप ?

औरों को जो लूटते, कभी लुटेंगे आप ।
आख़िर को पछतायंगे, बन बेटी के बाप ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आज करेंगे आप जो, औरों से व्यवहार।
वही करेगा आप से, क्या न कभी संसार ?

बहुत बड़ी बारात का, गया ज़माना लद्द।
बहुत बड़ी बारात को, करदो फ़ौरन रद्द ॥

पांच-सात से अधिक न, बिल्कुल भी हों साथ।
सब से अच्छी अब वही, कहलाती बारात ॥

वाद्य, बीज, मिष्टान्न पर, खर्च ज़रा नहिं होय।
छोटी सी बारात की, करे न समता कोय ॥

पैसा खर्च विवाह पर, होता है जो व्यर्थ।
सोच-समझ कर देखिये, क्या है उसका अर्थ ?

बेटी को पैसा वही, नक़द दिया जो जाय।
आगे उसके सैंकड़ों, बिगड़े काम बनाय ॥

शेर बबर हो किस लिये, बैठे हिम्मत छोड़ ?
बन्धन बुरे विवाह के, 'चन्दन' फैंको तोड़ ॥

सभी भविष्य सुधार लो, अभी समय है हाथ।
कभी बनेगी फिर नहीं, हरगिज़ बिगड़ी बात ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तोड़ - फोड़ - विध्वंस न, करना बन नादान ।
नहीं किसी भी अन्य का, है अपना नुक़सान ।।

भारत भर है आपका, भारत के हैं आप ।
भारत के नुक़सान को, अतः समझना पाप ।।

जिसकी प्यारी गोद में, पलकर हुए जवान ।
उच्च चरित्री बन करें, भारत का उत्थान ।।

भारत देश - विदेश में, जिस से हो बदनाम ।
ऐसा कोई भूल भी, कभी न करना काम ।।

पश्चिम का न अनुकरन, करना आंखें मीच ।
भारतीयता हो भरी, भारी रग-रग बीच ।।

सुन्दरता न सादगी, जैसी और महान ।
सादा सारा चाहिये, खान-पान - पहरान ।।

कैंसर जैसे रोग की, है जो जननी ख़ास ।
बीड़ी के - सिगरेट के, कभी न फटकें पास ।।

बड़ा न कोई डाक्टर, वैद्य, बज़ीर, वकील ।
सबसे ही बस वह बड़ा, जिसके पल्ले शील ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो है शिवा - प्रताप-सा, उच्च चरित्र जवान ।
देश, क़ौम की, वंश की, सच्ची उससे शान ॥

दुराचार औ द्यूत औ- मदिरा, मांस, कु-संग ।
पांचों प्रायः छोड़ते, मानव को कर नंग ॥

खाना - पीना - पहनना, चौथी मौज बहार ।
इनको ही मत समझना, नर जीवन का सार ॥

विनय, वीरता, धीरता, न्याय, नीति, उपकार ।
दया, दान नर जन्म के, आठ कहे शृंगार ॥

उभय लोक में सुधरता, जिनसे काम तमाम ।
सदाचार का, सत्य का, रखना दामन थाम ॥

मानव जीवन का पतन, होता जिससे ख़ास ।
खोटी संगत के कभी, नहीं फटकना पास ॥

धर्म-देश पर क़ौम पर, गए जान जो वार ।
अय 'चन्दन' बलिहार है, उन पर सब संसार ॥

कभी आप थे बाल तो- पूरे आज जवान ।
होना है फिर बृद्ध भी, रहे धर्म का ध्यान ॥

॥ ३० दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिगरेट

खुश्की, खांसी जो करे, भरे कभी न पेट।
पता न 'चन्दन' लोग क्यों, पीते फिर सिगरेट !!

दूध-दही को तरसता, खालमखाली पेट।
'चन्दन' पीने को बचा, आग लगा सिगरेट ?

पीयेंगे सिगरेट ही, अगर लगी हो प्यास।
कैसी दुनिया बन चली, दुर्व्यसनों की दास !!

तम्बाकू-दुर्व्यसन को, कहें न छोटा आप।
'चन्दन' इसमें है छुपा, बहुत पाप - सन्ताप ॥

क़िस्मत में माखन नहीं, क़िस्मत में न घी।
मूर्ख रक्त सुखायेंगे, बीड़ी पर पी-पी !!

दुर्व्यसनों का दास है, जो 'चन्दन' नादान।
तीन काल न बन सके, मानव कभी महान ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' अपनी सभ्यता, जब से भूले लोग।
दिन-दिन देखो बढ़ चले, कैंसर जैसे रोग॥

बाबू बनने के लिये, लोग हुए पथ भ्रष्ट।
धुआं निकालें नाक से, करके पैसे नष्ट!!

धुआं निकालें नाक से, इस में कौन कमाल।
अगर निकालें कान से, माने 'चन्दनलाल॥'

वे ही पैसे दूध पर, अगर लगायें लोग।
'चन्दन' प्रज्ञा-बल बढ़े, कम ही व्यापें रोग॥

अब तो डाक्टर-वैद्य भी, हैं कहते यह बात।
'बीड़ी न सिगरेट को, कभी लगाओ हाथ॥'

अमरीका - इंग्लैंड भी, अब करते ऐलान।
'तम्बाकू - सिगरेट हैं, निरे रोग की खान॥'

कारतूस कहिये इसे, कहिये मत सिगरेट।
'चन्दन' चूसे रक्त यह, करे न लाग-लपेट॥

धुआं बुरा सिगरेट का, करे मुन्ज-सी मूंछ।
'चन्दन' अन्दर की दशा, मन से प्यारे! पूछ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दान्त, हाथ भी पीत हों, मुख देता बदबू ।
बहुत बुराइयाँ देख भी, क्यों न करते थू ?

शौक लगाते शान से, पहले तो नादान ।
बहुत-बहुत-पश्चात् पर, हैं होते हैरान ॥

खट्टा- मीठा- चटपटा, कोई भी न स्वाद ।
'चन्दन' पी-पी किसलिये, होते फिर बरबाद ?

नहीं सुखाना आप को, अपना जो है रक्त ।
तम्बाकू के भूल न, 'चन्दन' बनिये भक्त ॥

छोटे-छोटे बाल भी, करके आंखें बन्द ।
बीड़ी का–सिगरेट का, लेते हा ! आनन्द ॥

पीते हैं जब सामने, उनके भाई - बाप ।
समझें कैसे फिर भला, वे हो पीना पाप ॥

उन्हें पता क्या–रक्त है, उनका सुमन समान ।
पहुंचेगा सबसे अधिक, उनको ही नुक़सान ॥

नहीं समझते बात यह, वे बच्चे अनभोल ।
देखा - देखी रोग यों, ले लेते हैं मोल ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' खुश्की-कब्ज़ से, हो करके फिर ग्रस्त ।
टट्टी बैठे भी बनें, पीने के अभ्यस्त !!

'चन्दन' मेरे देश की, कैसी उलटी चाल ।
शादी पर सिगरेट के, भर-भर बाटें थाल !!

बिगड़े ही थे वृद्ध तो, पहले 'चन्दनलाल' ।
बाल, युवक भी बिगड़ते, देख मुफ़्त का माल ॥

बच्चों का जो बिगड़ना, 'चन्दन' नहीं पसन्द ।
ब्याह बीच सिगरेट का, देना कीजे बन्द ॥

नशा न कोई भी भला, नशा बुरा हर एक ।
'चन्दन' जी करता नशा, दशा बुरी लो देख ॥

बिगड़े उसका लोक भी, बिगड़े फिर परलोक ।
'चन्दन' बदले हर्ष के, पड़ता पल्ले शोक ॥

धन, सेहत का नाश हो, और अनेकों रोग ।
करें कभी भी न नशा, अतः सयाने लोग ॥

जीवन समझो न इसे, समझो इक वरदान ।
दुर्व्यसनों को छोड़ कर, मानव बनो महान ॥

॥ ३० दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वचन वीर

लम्बी-चौड़ी ही करे, बातें जो दिन - रात।
'चन्दन' उसका नाम है, 'वचन-वीर' विख्यात ॥

वचनवीर का दूसरा, 'गप्पी' भी है नाम।
गप्प हांकना दून की, 'चन्दन' उसका काम ॥

हमने है यह-वह किया, छेड़े यही वृतन्त।
उसकी बातों का कहीं, कोई भी न अन्त ॥

'चन्दन' चाहे श्रवण कर, श्रोता जाए ऊब।
बात-बात में गरजता, और उफनता खूब ॥

मनगढन्त किस्से अगर, रहें न उसके पास।
पूर्वजों के झूठ तब, ले बैठे इतिहास ॥

कटु भाषी भी हो बड़ा, और असहनशील।
'चन्दन' अच्छी एक न, उसके पास दलील ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बात-बात पर धमकियां, देता वह खुर्राट।
कभी रहेगा न खड़ा, अगर पिलाएं डांट॥

फ़ौरन ही तब बोलता, वह छलिया इस तौर।
'मतलब मेरा और था, लिया आपने और॥'

नहीं एक भी बोलता, कभी काम की बात।
व्यर्थ बोलता - डोलता, रहता वह दिन-रात॥

'चन्दन' ज्यादा बोलते, मूर्ख और अशक्त।
बड़-बड़ करते देखिये, दोनों को हर वक्त॥

तरकश सम जिसमें रहें, भरे वचन के वाण।
उसको मुखड़ा नीच का, अय 'चन्दन' लो जान॥

पर-निन्दा, अपशब्द तो, रहें सदा मुख बीच।
गला फाड़ कर बोलता, दुर्मुख- कर्कश - नीच॥

स्वार्थवश वह नीच जन, बनता बड़ा मधुर।
हिरण-शिकारी व्याध ज्यों, छेड़े मीठा स्वर॥

काक वृत्ति उसकी कभी, छुपती नहीं छुपाय।
हो ही जाती है प्रगट, कितने करे उपाय॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाणी से परीक्षा

संयत शुभ शब्दावली, सुन सब लेते जान।
सभ्य-शिष्ट नर नेक है, पण्डित है गुणवान॥

मूर्ख अपनी बात से, खुल जाता तत्काल।
अतः मौन ही शोभता, उसको 'चन्दनलाल'॥

मुख्य विषय रख सामने, सदा समयानुसार।
श्रोता का स्वभाव लख, 'चन्दन' करें प्रचार॥

अर्थहीन - अस्पष्ट जो, भाषा को अपनाय।
अविवेकी-अनपढ़-कुटिल, मूर्ख माना जाय॥

'मैं', 'मैंने' का बहुत जो, करता पुरुष प्रयोग।
बकरी का बेटा उसे, कहते पण्डित लोग॥

'चन्दन' सज्जन, सरल जन, जब भी बोले बयन।
स्वर मीठा, मन सरल हो, खिले कमल-से नयन॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गहन विषय में बात जब करता कोई धीर।
'चन्दन' स्वर से-शकल से, हो वह गहन गम्भीर ॥

भावों में गम्भीरता, स्वर में दृढ़ता होय।
'चन्दन' विषय अनावश्यक, विज्ञ छुए न कोय ॥

पुनः-पुनः इक बात को, घोटे न विद्वान।
तौल-तौल कर शब्द हर, बोले प्रज्ञावान ॥

पुनः-पुनः इक बात को, जो जन कहे निशंक।
'चन्दन' उसको जानिये, ज्ञान-गुणों से रंक ॥

सज्जन बोले अल्प ही, मन में विनय बसाय।
पर-निन्दा, पर-भामिनी—चर्चा नहीं सुहाय ॥

दुर्विनीत - दम्भी करे, कर्कश स्वर में बात।
आकृति से ऐसे लगे, जैसे यम साक्षात ॥

धूर्त का 'चन्दन' विषय, पर-निन्दा हो एक।
मुख मुद्रा रहस्यमयी, दबा हुआ स्वर देख ॥

मुख छोटा, बातें बड़ी, बाणी लच्छेदार।
चाटुकार 'चन्दन' सदा, बने विनय—अवतार ॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनादर

आदर अद्भुत मन्त्र है, सब का ले मन मोह ।
भूल करें 'चन्दन' नहीं, कभी किसी से द्रोह ॥

सब का आदर जो करे, सब से आदर पाय ।
करे अनादर मूढ़ जो, हाथ अनादर आय ॥

करें बड़ों का ही नहीं, केवल आदर-मान ।
छोटों का भी चाहिये, 'चन्दन' मान महान ॥

आदर औ सम्मान पर, खर्च न कौड़ी आय ।
लाभ मगर अनगिनत हैं, 'चन्दन' सत्य सुनाय ॥

अय 'चन्दन' जो चाहता, जग में यश-कल्याण ।
अधिक मीत से भी करे, बैरी का सम्मान ॥

जहां अनादर बहुत दे, बनते काम बिगाड़ ।
बनते आदर से वहां, बिगड़े काम हज़ार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं इष्ट जो अपको, 'चन्दन' मन-सन्ताप।
आदर में न कृपणता, कभी कीजिये आप॥

आदर से आदर सभी, करते 'चन्दन' लोग।
बिन आदर आदर करे, वही बड़ाई योग॥

करें भले ही न करें, औरों का सत्कार।
तिरस्कार का आपको, मगर नहीं अधिकार॥

करे अनादर न कभी, सहकर भी अपमान।
सज्जन की सबसे बड़ी, अय 'चन्दन' पहचान॥

औरों का अपमान कर, अपना चाहे मान।
दुर्जन की सबसे बड़ी, अय 'चन्दन' पहचान॥

सहता क्यों अपमान अहि, जो गुण होते बीच।
जिसको भी बस देखता, डंक चलाता नीच॥

अय 'चन्दन' गुणवान बन, जो चाहे सत्कार।
गुण से कोयल का करे, आदर सब संसार॥

अगर अनादर से मिले, मत खा हलवा-खीर।
'चन्दन' अमृत तुल्य पर, आदर का तो नीर॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गृह-जीवन

अपने - अपने गेह में, सब हैं भूप समान।
चाहे 'चन्दन' नहिं कभी, कोई भी अपमान ॥

जिस घर में नहिं न्याय हो, उठे उपेक्षा - लहर।
भीतर ही भीतर वहां, फैल जायगा ज़हर ॥

सत्य, अहिंसा, प्रेम, शम, सुन्दर सेवा-भाव।
'चन्दन' ऐसा गेह-पति, पार लगाता नाव ॥

चौबीसों घण्टे रहे; जिसे कोप का ज्वर।
'चन्दन' थानेदार-सा, मुखिया घाले घर ॥

सब के पीछे गुप्तचर, लगा-लगा ले भेद।
ऐसे गेहाध्यक्ष पर, अय 'चन्दन' है खेद !!

सहनशील हो; स-क्षमा, छोटे बड़े समक्ष।
सब से आदर पायगा, ऐसा गेहाध्यक्ष ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गृह-स्वामी को चाहिए, मधुर-मृदुल व्यवहार।
स्वयं सभी स-स्नेह रहें, 'चन्दन' ताबेदार ॥

बालक, बूढ़े, नारियां, तीन तरह के लोग।
अलग-अलग सत्कार के, समझो 'चन्दन' योग ॥

शुद्ध स्नेह, सुख; सरलता- मिश्रित जो व्यवहार।
'चन्दन' बालक हैं सभी, उस के ही हक़दार ॥

गेह-देवियों के लिये, बोल गए गुणवान।
रमा-रूप हैं वे सभी, कभी न हो अपमान ॥

नहीं ठहरती लक्ष्मी, उसके घर दरम्यान।
जहां सदा होता रहे, गृहिणी का अपमान ॥

वृद्धों का हो बाल-सा, अय 'चन्दन' स्वभाव।
विनय बिना नहिं कीजिए, कोई भी बरताव ॥

निर्बलता के ही सबब, रहते वृद्ध हताश।
समझदार उनको नहीं, करते कभी निराश ॥

बच्चों-सी हो सरलता, युवकों-सा हो जोश।
स्वर्ग सदन न क्यों बने, वृद्धों-सा जो होश ॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्यापार

मुनिजन पुजते त्याग से, धन से दुनियादार ।
धनोपार्जन को अतः, बना बनज-व्यापार ।।

धन से ही जन सद्गुणी, रूपवान विद्वान ।
'चन्दन' जान जहान में, पैसा परम प्रधान ।।

बुद्धिमान इनसान हर, अय 'चन्दन' बतलाय ।
भला नौकरी से अधिक, छोटा भी व्यवसाय ।।

सब ही सेवा-वृत्ति को, हेय कहें गुणवान ।
रमा बसे व्यापार में, निश्चय 'चन्दन' जान ।।

बिना साख के नहिं चले, कभी एक भी काम ।
जम जाने पर साख के, फिर तो बिकता नाम ।।

सच्चे ही व्यवहार से, 'चन्दन' जमती साख ।
उखड़े पर न फिर जमे, कीजे कोशिश लाख ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साख उखड़ जाए अगर, फिर नहिं बिकता माल।
होता है नीलाम ही, कहता 'चन्दनलाल'॥

अय 'चन्दन' उत्साह औ, आशा औ विश्वास।
इनको जागृत बिन किये, रमा न फटके पास॥

एकाग्रता औ लगन औ– तीजा अध्यवसाय।
तीनों बिन व्यापार में, कौन सफलता पाय॥

अधिक लाभ के लोभ से, ग्राहक से धो हाथ।
व्यापारी पछतायगा, अय 'चन्दन' दिन-रात॥

जो जन स्थायी लाभ हित, क्षणिक लोभ दे छोड़।
धनाधीश बनता वही, 'चन्दन' दौलत जोड़॥

अर्थ-शुद्धि बिन धन कभी, कहीं ठहरता नाहिं।
अनुचित साधन त्याग दें, अर्थोपार्जन माहिं॥

दुरुपयोग धन-धान्य का, करें कभी नहिं भूल।
धनपति बनने के लिये, यही मन्त्र है मूल॥

दुराचार - दुर्व्यसन का, जो नहिं रोग लगाय।
व्यापारी 'चन्दन' चतुर, वही एक कहलाय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हेरा-फेरी, कुटिलता, दीजे तज तत्काल।
हेराफेरी से बनज, चौपट 'चन्दनलाल'॥

धन अन्यायोपार्जित, टिकता कुछ हो साल।
लेकरके फिर मूल भी, जाता 'चन्दनलाल'॥

डाकू, गठिया, रिश्वती, चोर लुटेरे लोग।
पाप-द्रव्य का क्या कभी, करते देखे भोग?

जिसके पल्ले में नहीं, अय 'चन्दन' ईमान।
बनना उस नादान का, बहुत कठिन धनवान॥

जनता का अब साथ दें, गया पुराना वक्त।
बन कर अर्थ पिशाच नहिं, चूसें उसका रक्त॥

कर्मचारियों से करे, जो नहिं सद्व्यवहार।
उसका 'चन्दन' चमकना, मुश्किल कारोबार॥

ग़लत हिसाब-किताब से, कारोबार ख़राब।
दर्पण है व्यापार का, सही हिसाब-किताब॥

ऐसे ही व्यापार की, जान पत्र-व्यवहार।
जिसमें अक्षर बहुत कम, बहुत मगर हो सार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देते तो हो मित्रता, लेते पड़े बिगाड़।
'चन्दन' दुश्मन कर लिया, जिसको दिया उधार ॥

निर्धन हो या सेठ हो, चाहे हो भूपाल।
लेना - देना कर्ज़ का, शुभ नहिं 'चन्दनसाल' ॥

पल में मालामाल तो, पल में ही कंगाल।
सट्टे की खटपट तजें, चटपट 'चन्दनलाल' ॥

न्याय-नीति-हो-धर्म हो, अगर बनज के साथ।
सोना और सुगन्ध की, अय 'चन्दन' है बात ॥

याद रहे व्यापार में, 'चन्दन' की यह बात।
अन्त समय परलोक में, चले न कौड़ी साथ ॥

अय व्यापारी आदमी! अतः धर्म नहिं भूल।
धन से बढ़कर धर्म है, सर्व सुखों का मूल ॥

धर्म सामने रख करे, जो भी कारोबार।
दिन-दिन दुगुना-चौगुना, चमकेगा व्यापार ॥

न्याय-नीति को लोग नहिं, बैठें कहीं बिसार।
किंचित-सा व्यापार का, किया अतः विस्तार ॥

॥ ३० दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिष्टाचार

जैसे सुमन सुगन्ध से, विधु से जैसे रात।
हर नर शिष्टाचार के- ही है सजता साथ॥

जो भी 'चन्दन' आपका, करे कभी उपकार।
प्रगटाइये कृतज्ञता, है यह शिष्टाचार॥

साथ बड़ों के आवश्यक, जैसे शिष्टाचार।
छोटों के भी साथ है, 'चन्दन' उसी प्रकार॥

वाणी के व्यवहार से, प्रगट न ऐसा होय।
'चन्दन' नारद वंशधर, जो समझे हर कोय॥

मान-भंग हो अन्य का, हो अपना उपहास।
'चन्दन' ऐसे काम के, कभी न फटकें पास॥

अपना गौरव हो प्रगट, जिससे 'चन्दनलाल'।
हंसी-दिल्लगी-वेश वह, रहन-सहन हो चाल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाहे हो—कितना धनी; बली और विद्वान।
सज्जनवेशी दुष्ट जन, कभी न पाए मान॥

बनिताओं पर बद नज़र, और उठाना हाथ।
'चन्दन' परम असभ्यता— की ही समझें बात॥

बनिता-बालक-बृद्ध से, हर दारुण व्यवहार।
'चन्दन' सदा असह्य ही, होता सभी प्रकार॥

'चन्दन' सर्व समाज में, निर्बल जन का मान।
रक्षणीय है कह गए, चोटी के विद्वान॥

धर्म-शास्त्र औ नीतियाँ, 'चन्दन' कहें पुकार।
बनिता-बालक-बृद्ध पर, करें न अत्याचार॥

वैरभाव को दृढ़ करे, बार-बार का कोप।
जिससे 'चन्दन' शाँति सुख, हो जाते हैं लोप॥

अमन-चैन-आनन्द है, 'चन्दन' जिसे पसन्द।
सामाजिक संसार में, बने कभी नहिं अन्ध॥

स्वार्थ-अन्ध मदान्ध औ— धर्म-अन्ध फिर जान।
तीन तरह के अन्ध हैं, दुनिया के दरम्यान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिसे रतौन्धी हो-उसे– नक्षत्र न दीखें रात।
उसी तरह से समझिये, अन्ध-त्रय की बात॥

नेक बने बिन जो चहे, करें सभी सम्मान।
उस-सा अय 'चन्दन' नहीं दुनिया में नादान॥

उसको झुकते जगत-जन, जो भी हो गुणवान।
बिना योग्यता, सबलता, नहीं मिले सम्मान॥

'चन्दन' करते मूढ़ जन, जो मिथ्या अभिमान।
उनके पल्ले में सदा, है पड़ता अपमान॥

जिनमें शिष्टाचार नहिं, कैसे वे नर-नार।
सज्जनता का सार है, 'चन्दन' शिष्टाचार॥

रावण के औ राम के, महायुद्ध के बाद।
आती इक घटना हमें, इस बारे में याद॥

रावण जब मरने लगा, लम्बे पाँव पसार।
लछमन से रघुवीर जी, स-सस्नेह कहें पुकार॥

'राजनीति का इक परम, पण्डित है लंकेश।
उससे लछमन! आख़िरी, ले आओ उपदेश'॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिरहाने लंकेश के, लखन खड़ा तब जाय।
कारण रावण जान कर, बोला यों मुस्काय ॥

"धन्य! लखन! है आपको; होकर राजकुमार।
इतना भी नहिं जानते, क्या है शिष्टाचार ॥

'चन्दन' जाए माँगने, शिक्षा की जो भीख।
शिक्षक के सिर पर नहीं, खड़े पांव नज़दीक ॥

करें लोक-मर्याद का, आप न जब तक मान।
दे सकता मैं किस तरह, कहो ज्ञान का दान" ॥

लखनलाल चेते तभी, खड़े पांव के पास।
रावण ने उपदेश तब, दिया उन्हें यों खास ॥

"नया आप पर आ रहा, यौवन दशरथ-लाल !
खूब संभल इस में रहें, लख कर मेरा हाल ॥

जिसने मारा है मुझे, नहीं लखन, नहिं राम।
उस ज़ालिम का नाम है, मनसिज-मन्मथ-काम ॥

अधिक कहूं क्या आप हो, 'चन्दन' चतुर-सुजान।
भले-बुरे की आप ही, कर लेना पहचान ॥"

॥ ३० दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सन्तति

●

भले-बुरे दो भान्ति के, दुनिया में इनसान।
उन में कैसा कौन है, कर लीजे पहचान॥

'चन्दन' उत्तम वंश की, जो उत्तम औलाद।
पालन करती वह सदा, उत्तम गृह - मर्याद॥

मेरे द्वारा हो नहीं, नष्ट उन्हों का मान।
पुरखाओं का वह सदा, रखता पूरा ध्यान॥

जिसके घर की हो दशा, सुन्दर सभी प्रकार।
वह सज्जन सम्भालता, घर - बाहर का भार॥

'चन्दन' जहां अशान्ति अति, नित्य नाच दिखलाय।
उस घर का हरएक ही, उच्छृंखल हो जाय॥

जिस घर संकट आर्थिक, करे वही छल-कपट।
अथवा करता चोरियाँ, जाती थाने रपट॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करने को इनसान की, और अधिक पहचान।
उसके मां औ बाप का, लीजे जीवन जान॥

होंगे जैसे बाप - मां, हो वैसी सन्तान।
मीन-मेख इसमें नहीं, कहते प्रज्ञावान॥

मात - पिता हों संयमी, शीलवान गुण-खान।
प्रायः होगी सद्गुणी, उनकी सब सन्तान॥

'चन्दन' चाहे अन्य का, सेर पड़े या पाव।
मां का पर सन्तान पर, सबसे अधिक प्रभाव॥

माता के मन की दशा, है दिखलाती रंग।
गर्भ - जीव फूले - फले, उसके ही तो संग॥

मां का हो 'चन्दन' अगर, मिथ्या हाराचार।
रोग जन्म से लायगी, सन्तति विविध प्रकार॥

दुराचारिणी मात हो, जिसकी जग दरम्यान।
सदाचारिणी - सद्गुणी, हो कैसे सन्तान?

मात-पिता को चाहिये, जैसी भी सन्तान।
उनके ही है हाथ में, सन्तति का निर्मान॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0: In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेश

'चन्दन' चाहे आपको, नहिं पूरा हो ज्ञान ।
लेकिन लख कर वेश को; कर सकते अनुमान ।।

अस्त-व्यस्त चित, चपल या— सादा है इनसान ।
करवाता है वेश भी, मानव की पहचान ।।

मानव सरल स्वभाव का, सादा रहे हमेश ।
आडम्बर से युक्त हो, बने हुए का वेश ।।

'चन्दन' जिस भी पुरुष का, है प्रज्ञा व्यवसाय ।
ढीला-ढाला वेश वह, तन पै सदा सजाय ।।

हलका-फुलका - चटपटा, चंचल चित-चालाक ।
'चन्दन' महा महीन ही, पहनेगा पोशाक ।।

व्यक्ति बनावट से रहे, जो भी 'चन्दन' दूर ।
मोटा ही पट पहनना, उसका है दस्तूर ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' रखता उद्यमी, नर पहनावा चुस्त।
नारी को पर वेश नहिं, 'चन्दन' चुस्त दुरुस्त ॥

जिसका अय 'चन्दन' रहे, अस्त-व्यस्त ही चित्त।
अस्त-व्यस्त ही वेश भी, होगा उसका नित्त ॥

भड़कीली तबियत रखें, जो 'चन्दन' नर-नार।
होगा उनका वेश भी, भड़कीला हर बार ॥

'नेहरू' नेता जब बने, त्यागे टाई-टोप।
सादा सभी लिवास था, जब भी गए यूरोप ॥

ईसा - शूली - चिन्ह है, यह नकटाई साफ़।
रहे इसे क्यों बान्ध जब, नहिं ईसाई आप ?

अंग्रेजों के राज में, 'चन्दन' चला जनून।
लगे लोग बनने बड़े, पहन-पहन पतलून ॥

देश-प्रेम दिल बीच का, करने को फिर व्यक्त।
लोग बने थे खूब ही, खद्दर के भी भक्त ॥

खद्दर में भी आ घुसा, अय 'चन्दन' इक खोट।
कई करें मन-मानियां, लेकर इसकी ओट ॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दृष्टि

'चन्दन' कैसा कौन है, करने को पहचान।
नज़रों का करलें अतः, एक नज़र से ज्ञान॥

अस्थिर उसकी नज़र हो, अस्थिर जिसका चित्त।
तरह-तरह के रंग वह, रहे पलटता नित्त॥

हक्का-बक्का-सा रहे, मानव जो भयभीत।
उसकी आंखें देखतीं, अय 'चन्दन' विपरीत॥

जिसके मन में मान ने, आसन लिया जमाय।
सिर ही सबका देखता, नीचे नहीं लखाय॥

सत्य-स्वभावी आदमी, या फिर जो हो वीर।
नज़र मिलाता नज़र से, 'चन्दन' जन गम्भीर॥

सज्जन-सरल स्नेहिजन, जितने जग के मायं।
अय 'चन्दन' जब भी मिलें, आनन अधिक लखायं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्य अंग प्रायः रहें, बिल्कुल नहीं समक्ष।
शीलवान नर की नज़र, सदा देखती वक्ष ॥

नीच नरन की नज़र का, अजब-निराला ढंग।
अधिक कमर ही देखती, अन्य छोड़ सब अंग ॥

अय 'चन्दन' अति नीच के, सन्मुख जो भी आय।
उसके पांवों में पड़ा, जूता खड़ा लखाय ॥

महानिकम्मा और की, केवल लखता पीठ।
क्योंकि पीछे गमन का, हो अभ्यासी ढीठ ॥

लज्जित-जन का देखिये, अधिक अनोखा ढंग।
रहता है वह देखता, अपने ही तो अंग ॥

पुरुष भाण्ड स्वभाव का, आंखों को मटकाय।
देखें उसको तो सभी, वह नहिं मगर लखाय ॥

सच्चे सन्तों की नज़र, सरल-शान्त-निष्पाप।
देखें सब को प्रेम से, ज्यों 'चन्दन' मां-बाप ॥

बच्चों की निर्मल नज़र, सर्वाधिक निर्दोष।
न ही देखें गहन गुण, न ही देखें दोष ॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाह्याभ्यन्तर

वाह्य रूप ही देख कर, करना मत अनुमान।
ठीक पुरुष पहचान हित, अन्तर भी लें जान॥

कभी किसी से श्रवण कर, सतियों के आख्यान।
'चन्दन' उसे महात्मा, सहसा लें मत मान॥

उसके कमरे की ज़रा, देखें तो दीवार।
गन्दे चित्रों की कहीं, है तो नहिं भरमार?

टंगे हुए दीवार पर, कुलटाओं के चित्र।
साफ़-साफ़ बतलांयगे, कितना पुरुष पवित्र?

धर्म-ग्रन्थ लख मेज़ पर, सहसा नहिं भरमांयं।
अन्दर गन्दी पोथियां, सम्भव है मिल जांयं॥

रीझ न केवल रूप पर, चाल-चलन भी देख।
काली लगी कलंक की, नहीं कहीं तो रेख?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुराचारिणी क्या नहीं, वेश्या पाकर रूप ?
अतः अकेले रूप पर, रीझें मूढ़न - भूप !

होना 'चन्दन' चाहिये, सही परीक्षा - ढंग ।
कस्तूरी नहिं फैंकिये, लख कर काला रंग ॥

हो नहिं योग्य-अयोग्य का, रूप - रंग से ज्ञान ।
उसके कार्य-स्वभाव से, लीजे 'चन्दन' जान ॥

चमक-दमक से ही नहीं, रुपया परखा जाय ।
खोटा है या है खरा, 'चन्दन' लखें बजाय ॥

सर-गहराई का पता, दे न प्रथम सोपान ।
अन्दर पैठे बिन कभी, ठीक कहीं अनुमान ॥

स्वच्छ पुरुष नहिं जान लें, लख कर स्वच्छ कमीज़ ।
सम्भव है बनियान हो, अन्दर सड़ी-गलीज़ !!

सुखी जिसे भी जानना, चाहें 'चन्दन' आप ।
उसके सब परिवार पर, देखें सुख की छाप ॥

आप भले हों नर सुखी, दुखी अगर परिवार ।
सुखी उसे तब समझना, अय 'चन्दन' बेकार ॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नीति-निचोड़

वैरी को तो युक्ति से, सरलपने से मीत।
स्वामी का हितकाम कर, धन से लोभी जीत ॥

अति क्रोधी को विनय से, विद्या से विद्वान।
वन्दन से गुरुदेव को, जीते चतुर सुजान ॥

मूर्ख कथा - कहानियां, स्व-जन सम व्यवहार।
जीता जाए शील से, 'चन्दन' सब संसार ॥

एक मात्र संकल्प से, काम बने नहिं कोय।
'चन्दन' किये प्रयास से, सदा सफलता होय ॥

अहं प्रदर्शित जो करे, झूठा रोब जमाय।
रहे ताड़ता - तर्जता, मुखिया नहिं यश पाय ॥

बने जहां तक आप से, न देखें पर - खोट।
हंस-वृत्ति से मात्र गुण, करना 'चन्दन' नोट ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' दुर्गुण छोड़िये, जिसके भी हों पास।
सद्गुण लेकर कीजिये, अपना परम विकास॥

प्रज्ञा, गुण का कीजिये, 'चन्दन' सद् उपयोग।
बुरे काम में जो करें, बुरे समझिये लोग॥

चाहे कितना कीजिये, यत्न आप दिन-रात।
'चन्दन' पहुंची तीन में, गुप्त रहे नहिं बात॥

'चन्दन' पहुंची तीन में, गुप्त रहे तब बात।
उनमें से दो देह का, अगर छोड़ दें साथ॥

अय 'चन्दन' जो बात हो, पहुंची दो के पास।
रह सकती है वह छुपी, काफ़ी किये प्रयास॥

सिवा एक के और तक, बात न पहुंची जौन।
उसको तो भगवान बिन, 'चन्दन' जाने कौन॥

'चन्दन' शिष्टाचार से, व्यक्त बड़प्पन होय।
बुद्धिमान इसको अतः, कभी न भूले कोय॥

भूले न व्यवहार में, स्वाभिमान इनसान।
औरों के अपमान औ- रहे मान का ध्यान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो चाहे व्यवसाय में, अय 'चन्दन' उत्कर्ष ।
कभी किसी से भूल कर, करे नहीं संघर्ष ॥

आंख निकालेंगे अगर, होकर पीले - लाल ।
कटुता तब व्यवहार में, आयेगी तत्काल ॥

जिसके अन्दर क्रोध की, बहुत बड़ी हो खोट ।
रिपुओं की 'चन्दन' भला, उसे कहो क्या टोट ॥

कहता 'चन्दन' सत्य यह, चाहे जब लें देख ।
उत्तम जन का क्रोध हो, जैसे जल पर रेख ॥

शान्ति, सरलता, सौम्यता, सद्गुण जिसके पास ।
अय 'चन्दन' संसार सब, समझो उसका दास ॥

महापुरुष को ढूंढिये, उसके तन में नाहिं ।
उसे उसी के ढूंढिये, बचन कर्म के माहिं ॥

महापुरुष का भले ही, हम - सा दिखे शरीर ।
चरित्र विचित्र, अगाध मन, वाणी गहन-गम्भीर ॥

महापुरुष की अय सखे ! अद्भुत जीवन-रेख ।
आकृति में नहिं देख कर, कृति में ही बस देख ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वज्र हृदय के, हैं कहीं- कोमल कुसुम समान ।
महापुरुष की जीवनी, 'चन्दन' लखो महान ।।

सज्जन कम, जग में अधिक- मायावी इनसान ।
'चन्दन' आश्रय नीति का, लेते अतः सुजान ।।

सह सकता नहिं और की, अय 'चन्दन' जो बात ।
हंसी-दिल्लगी क्यों करे, वह औरों के साथ ।।

जो औरों की बात को, सकता स्वयं सहार ।
उसको ही उपहास का, है 'चन्दन' अधिकार ।।

सद्गुण जहां पचास हों, दुर्गुण हों दो-चार ।
गुठली जैसे आम में, छुपते उसी प्रकार ।।

'चन्दन' चाहें लोग जो, स्वयं मान-सम्मान ।
कभी भूल भी नहिं करें, औरों का अपमान ।।

औरों का अपमान कर, जो चाहे सम्मान ।
अय 'चन्दन' नहिं दूसरा, उस-सा है नादान ।।

'चन्दन' चान्दी-स्वर्ण से, सुखी न हो इनसान ।
केवल सद्गुण ही सही, सुख-आनन्द निधान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिसे सुखी सन्तान को, लखना हो दरकार।
'चन्दन' उसका वह करे, सद्गुण से श्रृंगार॥

रूप-रंग को गुण बिना, 'चन्दन' ऐसे जान।
हो फीका पक्वान हर, ऊंची मगर दुकान॥

'चन्दन' सुन्दरता नहीं, श्रेष्ठ सर्वदा होय।
सुन्दर है बस श्रेष्ठता, फ़र्क़ न इसमें कोय॥

पृथ्वी पर ही स्वर्ग का, बनना क्या दुश्वार।
अगर आप सब सुर बनें, बने स्वर्ग संसार॥

द्वेष त्याग हर जीव को, जानो स्वयं समान।
'चन्दन बनना 'देव' यों, बिल्कुल है आसान॥

जो भी देता द्वेष से, जग-जीवों को कष्ट।
पा सकता सुख, स्वर्ग नहिं, 'चन्दन' कहे स्पष्ट॥

जहां द्वेष दिल में बसे, नहीं दया का नाम।
वहां प्रेम का धर्म का, अय 'चन्दन' क्या काम॥

'चन्दन' जिसमें हित रहे, रहे अहित नहिं कोय।
स्वार्थ से जो हो परे, 'प्रेम' कहावे सोय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रेम-प्रेम सब ही कहें, पर नहिं जाने मर्म।
नाम प्रेम का दूसरा, अय 'चन्दन' है धर्म॥

प्रेम-प्यार से काम जो, बनता 'चन्दनलाल'।
भय-धमकी-आतंक से, बने नहीं त्रैकाल॥

अगर अधिक सम्मान के, नहीं पात्र हैं आप।
मिलने पर कम मान के, क्यों करते सन्ताप?

गुरुता, लघुता, योग्यता, औ अयोग्यता जान।
अन्य नज़र में आपका, इनसे बनता स्थान॥

थोड़ों से ही ठीक है, अधिक जान-पहचान।
परिचय अधिकों से अधिक, अधिक करे नुक़सान॥

प्रगट करो वैसे नहीं, जैसे नहिं हों आप।
करना होगा अन्यथा, 'चन्दन' पश्चाताप॥

पहले ही हर बात को, सोचो खूब संभाल।
पीछे निर्णय जो करो, 'चन्दन' मत वह टाल॥

करना पार पहाड़ को, 'चन्दन' कर इकसार।
अधिक सुगम उससे कहीं, चढ़कर करना पार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घड़ी गई जो हाथ से, नहीं आयगी हाथ।
चलना 'चन्दन' चाहिये, सदा समय के साथ॥

कोई ही लेता जिसे, देते बहुत हमेश।
'चन्दन' उसका नाम है, 'शिक्षा' या 'उपदेश'॥

उसका ही उपदेश है, 'चन्दन' तारनहार।
जो कि उसी उपदेश को, खुद ले पहले धार॥

अपने ही उपदेश पर, चले न जो जन आप।
'चन्दन' उसके पास भी, जाना जानो पाप॥

बचो बुरों के संग से, निश-दिन 'चन्दनलाल'।
आने दो मन में नहीं, खोटा कभी ख़याल॥

खोटी संगति-सा नहीं, खोटा कोई और।
इससे बचना चाहिये, अय 'चन्दन' हर ठौर॥

'चन्दन' कैसा कौन है, करने को यह ज्ञान।
संगति किस की वह करे, केवल लो यह जान।

'चन्दन' रवि से ही सदा, खिले कमल का बाग़।
खिले कमल नहिं एक पर, धधके कितनी आग॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो चाहो 'चन्दन' रहे, रहस्य आपका लुप्त ।
सर्व प्रथम तो आप ही, रखना उसको गुप्त ॥

जो चाहो तुम दूसरे, उसको मत फैलायं ।
तीन काल भी बात यह, होने वाली नायं ॥

निज रहस्य जो स्वयं ही, सेवक को बतलाय ।
'चन्दन' सेवक को वही, स्वामी स्वयं बनाय ॥

नक़ली नक़ली है सदा, असली का क्या काम ।
अभिनय करने से कभी, बनें न कोई राम ॥

ठीक दिशा में जो चले, होकर मंगल-युक्त ।
उस नेता का अनुसरण, करें लोग भय-मुक्त ॥

'चन्दन' भली भलाइयों– की है कैसी रीत ।
रहें मीत तो मीत ही, हों वैरी भी मीत ॥

कोई कूड़ा भर चले, अपनी गाड़ी बीच ।
अय 'चन्दन बस जानिये, तैसे निन्दक नीच ॥

'चन्दन' चाहें आप जो, जीवन का उत्थान ।
गुणी स्वयं बनकर करें, गुणियों का सम्मान ॥

॥ ६२ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रोध

●

अनुचित हठ से जन्म ले, आत्म-विनाशक क्रोध।
बचना 'चन्दन' चाहिये, बढ़े न वैर-विरोध॥

जिसका अपने क्रोध पर, हो 'चन्दन' कण्ट्रोल।
सारे ही सुख स्वर्ग के, ले सकता वह मोल॥

'चन्दन' बनता मूढ़ जो, विनय-विवेक बिसार।
भूत चढ़े जब क्रोध का, मुख उगले अंगार॥

क्रोध प्रगट हो जिस समय, हो जाएं गंभीर।
क्रोध-नाश की यह सबल, है 'चन्दन' तदबीर॥

कोमल मन हों नारियां, करें न उन पर क्रोध।
'चन्दन' घर वह नर्क है, जिसमें वैर-विरोध॥

नयन बन्द, मुखड़ा खुला, चिन्तन का अवरोध।
'चन्दन' अन्धा आदमी, जब आता है क्रोध॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'शान्तिस्वरूप' अनेक हैं, 'चन्दन' जग में नाम ।
मिला मगर नहिं एक भी, कोई 'क्रोधीराम' ।।

क्रोध-क्रोध न एक-से, क्रोध-क्रोध में फ़र्क़ ।
एक क्रोध से स्वर्ग तो, एक क्रोध से नर्क ।।

जान जलाता जो रहे, जीवन भर नहिं जाय ।
'चन्दन' पत्थर-लीक-सा, क्रोध नर्क दिखलाय ।।

एक वर्ष से जो अधिक, क्रोध रखे नादान ।
'चन्दन' अगले जन्म में, वह बनता हैवान ।।

चार महीने से अधिक, रहने नहिं जो पाय ।
मानव को मानव पुनः, ऐसा क्रोध बनाय ।।

जो पखवाड़े से अधिक, कभी न रहने पाय ।
अय 'चन्दन' जल-लीक-सा, क्रोध स्वर्ग पहुंचाय ।।

उत्तम जन क्षण कोप ही, रखता 'चन्दनलाल' ।
आठ पहर मध्यम मगर, जीवन भर चंडाल ।।

क्रुद्ध अवस्था में कभी, करें न कोई काम ।
केवल 'चन्दन' चाहिये, चुप हो जपना नाम ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानी करता क्रोध नहिं, मूर्ख करता क्रोध।
दोनों का ही क्रोध से, हो जाता यों बोध॥

क्रोध जहां सुख-शान्ति का; वहां कहाँ खुर-खोज।
अय 'चन्दन' हैरानियां, परेशानियाँ रोज़॥

करता क़ाबू क्रोध को, अय 'चन्दन' बलवान।
निर्बल को क़ाबू मगर, करे क्रोध शैतान॥

मुखड़े पर मुस्कान नहिं, देह अरक्त - अशक्त।
'चन्दन' मोटा हो नहीं, कभी क्रोध का भक्त॥

सभी पुराने दूर हों, बनें नये नहिं मीत।
अय 'चन्दन' इस क्रोध की, कैसी खोटी रीत॥

है होता तत्पर तभी, लेने को प्रतिशोध।
हंसी-खुशी को नष्ट यह, क्षण में करता क्रोध॥

क्रोध-सुता है क्रूरता, निरी पाप की खान।
कलह, मारना, पीटना, उसकी फिर सन्तान॥

क्रोध क्षमा का काल है, क्षमा क्रोध का काल।
कैसी अद्भुत बात है, देखो 'चन्दनलाल'॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो दिखलाए नर्क गति, जो दिखलाए जेल।
अय 'चन्दन' इस क्रोध के, डालो नाक नकेल ॥

क्रोध कठिन है जीतना, जीते कोई सन्त।
'चन्दन' कोई विज्ञ या- ज्ञानी या गुणवन्त ॥

अय 'चन्दन' है क्रोध का, कठिन जीतना कौन।
बन्द कीजिये बोलना, धार लीजिये मौन ॥

चेले के अपराध पर, आया गुरु को क्रोध।
चण्डकौशिया सर्प वह, मर कर बना अबोध ॥

समता सागर 'वीर' से, पा कर 'चन्दन' बोध।
चण्डकौशिया आठवें, स्वर्ग गया तज क्रोध ॥

चक्रवर्ती बनने चला, वह कौणिक भूपाल।
छठी नर्क में क्रोध से, पहुंचा 'चन्दनलाल' ॥

क्रोधी कौरव नहिं रहे, रहा न क्रोधी कंश।
अय 'चन्दन' संसार से, मिटा उन्हीं का वंश ॥

क्रोध, कोप, संज्वलन, कलह, क्रुध, रुट, रोष, विवाद।
प्रतिघः और अमर्ष दश, क्रोध-नाम रख याद ॥

॥ ३० दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहंकारी

नहिं देखे छोटा-बड़ा, नहिं देखे दिन-रात।
सदा अहङ्कारी करे, अहंकार की बात॥

सम्मुख देखे कम मगर, इधर-उधर दिन-रैन।
चढ़े रहें 'चन्दन' सदा, मानी के द्वय नैन॥

गर्दन उसकी नहिं झुके, झुकें न उसके नैन।
रहें अकड़ता-ऐंठता, अय 'चन्दन' दिन-रैन॥

तनी ज़रूरत से अधिक, छाती रहे निशंक।
'चन्दन और कमान-सी, दोनों भौहें बंक॥

'चन्दन' बातें वह करे, पटक-पटक कर हाथ।
रेखांकित मस्तक रहे, गर्दन उचके साथ॥

किसी सभ्य के पास वह, मिलने को जब जाय।
कुर्सी कोई खींच कर, बैठे झट-पट धाय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हाथ मिलाता मीत से, मन में भर कर जोश।
अंग-अंग उठता झटक, गुम हों उसके होश !

वाणी से व्यवहार से, अन्य न कुछ दिखलाय।
बस स्वविद्या, वंश का, अहंकार प्रगटाय ॥

उसके मिथ्या मान का, जहां समर्थन होय।
मन्त्र-मुग्ध-सा हो सुने, उसमें ही बस खोय ॥

जो सामाजिक आ गया, सम्मुख कभी प्रसंग।
वहां सिकोड़े नाक-भौं, बदले मुख का रंग ॥

रुचे लोक व्यवहार नहिं, रुचे नहिं शिष्टाचार।
औरों से कर बैठता, अकसर दुर्व्यवहार ॥

सच्चा साक्षर है वही, निर अभिमानी जौन।
महा घमण्डी का भला, आदर करता कौन ॥

होता जिसे अजीर्ण है, विद्या का भरपूर।
रहना 'चन्दन' चाहिये, उस से कोसों दूर ॥

अहंकार से नर्क है, फ़र्क न इसमें जान।
सब धर्मों का अर्क यह, अय 'चन्दन' पी छान ॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माया

अर्थ अनेकों जगत में, माया के मशहूर।
यहां कपट के अर्थ में, लेकिन है मंजूर॥

'चन्दन' तन-मन-वचन की, जहां कुटिलता होय।
'माया' उसका नाम है, करो न शंका कोय॥

कहता तो कुछ और है, करता पर कुछ और।
मायावी मानव वही, अय 'चन्दन' हर तौर॥

मायावी का मन नहीं, पढ़ सकता इनसान।
उसको तो पहचानते, हैं केवल भगवान॥

सज्जन प्रगटाता वही, जो हो मन के बीच।
'चन्दन' इससे उलट पर, जानो दुर्जन नीच॥

निकट कपट नहिं कुटिलता, जिसके 'चन्दनलाल।
सब को ही सबसे अधिक, प्रिय यों लगता बाल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्य उसे नहिं जानिये, जो हो छल से युक्त।
सत्य उसे ही मानिये, जो हो छल से मुक्त॥

कच्चे घट जल भर धरे, कोई ज्यों नादान।
धन धोखे से जोड़ना, 'चन्दन' तैसे जान॥

माया! तेरे चल पड़े, कैसे - कैसे ढंग!
रंग-रूप में बेचते, बालू रेत भी रंग!!

पीतल पर कर स्वर्ण की, पालिश 'चन्दनलाल'।
मायावी जन बेचते, कहकर असली माल!!

असली अब बादाम का, मिलना मुश्किल तेल।
'चन्दन' खसखस-तेल का, उस में भी हो मेल!!

कैसे आए रोग में, अय 'चन्दन' आराम।
डली बना चूना बिके, तवाशीर के नाम!!

तेरी माया मोहिनी! कही न महिमा जाय।
रंगा हुआ है घास पर, कहें उसे भी चाय!!

नीचे बुरी कपास तो, ऊपर भली कपास।
बेचें कर-कर ढेरियां, माया! तेरे दास!!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माया ! तेरे और क्या, काम गिनाऊं नीच।
मधु बिकता बाज़ार में, गुड़ का शर्बत बीच !!

सेव-मुरब्बा नाम से, नाशपातियां डाल।
बेचे माया मोहिनी, देखो 'चन्दनलाल' !!

चाहे 'चन्दन' ढूँढिये, सारा ही बाज़ार।
मिलना मुश्किल आपको, शर्बत असल अनार !!

असली कोई ही करे, अय 'चन्दन' तैयार।
एसेन्सों की समझिये, शर्बत में भरमार !!

माखन प्रथम निकाल या– पानी पय में डाल।
असली कहकर बेचना, माया 'चन्दनलाल' ! !

लड़का-लड़की और ही, अय 'चन्दन' दिखलाय।
पाणिग्रहण पर और से, महा कपट कहलाय ॥

जैसे जड़ हो बांस की, माया रग-रग बीच।
मानव जाता नर्क में, अय 'चन्दन' वह नीच ॥

मेष-शृंग-सा जो करे, माया पाप - प्रपंच।
निश्चित अगले जन्म में, वह बनता तिर्यंच ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गमनशील है बैल का, यथा मूत्र का बल।
मानवगति नहिं रोकता, 'चन्दन' थोड़ा छल॥

झटपट बट ज्यों ऊन का, अय 'चन्दन' खुल जाय।
नाम मात्र माया-सहित, प्राणी स्वर्ग सिधाय॥

कपट-कुटिलता का नहीं, जिन में नाम-निशान।
महा सरल मानव बने, अय 'चन्दन' भगवान॥

कपट कर्म नहिं भूल भी, कोई कभी कमाय।
'चन्दन' मानव अन्यथा, वनिता बन पछताय॥

ज्यों-ज्यों माया के अधिक, होता जीव क़रीब।
चार-तीन-दो-एक हो, इन्द्रिय वाला जीव॥

माया से इनसान है, रुलता जग दरम्यान।
जीत सरलता से इसे, 'चन्दन' कर कल्याण॥

उपधि, दम्भ, कैतव, कपट, शाठ्य, छद्म, छल जान।
कुसृति, निसृति औ व्याज दश, माया-नाम बखान॥

नये नाम की और की, माया ने बख्शीस।
'चन्दन' उसको कह रहे, सभी 'चार सौ बीस'॥

॥ ३० दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोभ

पाप अठारह 'वीर' ने, जो बतलाए साफ़।
अय 'चन्दन' यह 'लोभ' है, उनमें नौवां पाप॥

तथा पांचवां 'परिग्रह', पाप कहा जो और।
वह भी इसके निकट है, अय 'चन्दन' हर तौर॥

ऐसा है इस 'लोभ' का, जाल कमाल विशाल।
बचता विरला वीर है, कोई 'चन्दनलाल'॥

तृष्णा-लालच-लोभ के, वशीभूत इनसान।
अय 'चन्दन' है तोलता, कूड़ - कपट - तूफ़ान॥

ब्रह्मचर्य-सा तप नहीं, सब दुनिया दरम्यान।
अवगुण नहिं है दूसरा, 'चन्दन' लोभ समान॥

दौलत सब संसार की, लोभी को दे डाल।
फिर भी समझेगा सदा, अपने को कंगाल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सन्ध्या नहिं, सत्संग नहिं, अय 'चन्दन' नहिं दान।
कहिये कैसे लालची, कर सकता कल्याण ॥

'चन्दन' दौलत के लिये, पलट-पलट कर वेश।
कितना मानव भटकता, फिरता देश-विदेश !!

जो चाहो तुम स्वर्ग के, सुख से भरे विमान।
'चन्दन' पैसे के लिये, नहिं बेचो ईमान ॥

'चन्दन' दौलत देख जो, तजे दीन - ईमान।
दुनियां में नहिं दूसरा, उसा-सा फिर नादान ॥

धन पाकर नहिं कीजिये, थोड़ा भी अभिमान।
धन-दौलत यह नहिं रहे, 'चन्दन' एक स्थान ॥

अय 'चन्दनमुनि' मंगनी, और ब्याह के बीच।
ख़लल आजकल डालता, यह लालच ही नीच !!

फंसे लोभ से जाल खग, बनता बन्दी चोर।
मीन मरे, मर्कट लहे, अय 'चन्दन' दुख घोर ॥

रूप होटलों में बिके, फिल्म स्टुडियो लाज़।
सब कुछ नंगे नाच में, नीच लोभ के काज ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डाके, चोरी ठगियां, रिश्वत, जुल्म, अन्याय।
झूठ, मिलावट पाप सब, 'चन्दन' लोभ कराय॥

महा लोभ से आदमी; कर्म कमाकर नीच।
हन्त ! अन्त में जा पड़े, घोर नर्क के बीच॥

धेला भी जब अन्त नहिं, चलना 'चन्दन' साथ।
धनहित क्यों फिर नर भला, पाप करे दिन-रात॥

गेही को श्रृंगार धन, सन्तों को संहार।
'चन्दन' गेही पर तजे, धन-हित अत्याचार॥

जिस धन में अन्याय, अघ, और न अत्याचार।
खुले रहें 'चन्दन' सदा, सद्-गतियों के द्वार।

मोटें पापों से मिले, धन जो 'चन्दनलाल'।
कालकूट-सा समझ कर, दीजे तज तत्काल॥

सन्तोषी ही वैद्य का, चमके कारोबार।
जाता लोभी के निकट, कोई ही बीमार॥

वैद्य, वैश्य—सन्तोष का, चमत्कार लें देख।
दुनिया दौड़ी आयगी, इसमें मीन न मेख॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्म तथा भगवान का, लेकर लोभी नाम।
फिरते स्वार्थ साधते, मांग-मांग कर दाम ।।

न करवाये नीच जो, नहीं एक भी पाप।
ग्रन्थ-पन्थ सब कह रहे, 'लोभ पाप का बाप' ।।

अय 'चन्दन' निर्लोभता, दूजा फिर सन्तोष।
दोनों बिन नहिं लोभ के, लगें ठिकाने होश ।।

अय 'चन्दन' जो लाडली, लालच की सन्तान।
दुर्गत - दुख - दाता तजें, 'पन्द्रह कर्मादान' ।।

कैसे रहना, और क्या- करना जग दरम्यान ?
सोच शान्त एकान्त में, अय लोभी इनसान !

सोने में है सुख कहां, सोना दुख की खान।
'सो ना, सोना कह रहा, समझे नहिं नादान ।।

बुझ सकती है पलक में, पानी की तो प्यास।
पैसों की पर प्यास को, कम हैं लाख गिलास ।।

बुरे तरीकों से अगर, अय 'चन्दन' धन आय।
संग बहुत हैरानियां, परेशानियां लाय ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'दौलत मेरी बहुत है, नहीं चाहिये और'।
अय 'चन्दन' ऐसा धनी, मिला किसी नहिं ठौर ॥

लोभी की नीयत नहीं, भरती है त्रैकाल।
कूप न भरता ओस से, जैसे 'चन्दनलाल' ॥

भला-बुरा कुछ भी कभी, लोभी लखता नांय।
वह तो चाहे जिस तरह, पैसे आते जांय !!

जाते थे जिसके सदा, मस्ती में दिन-रैन।
निर्धन पा निन्यानवें, खो बैठा सुख-चैन !!

सहस, लक्ष फिर कोटि फिर, चाहे अरब, असंख।
अय 'चन्दन' मन लालची, उड़े लगा यों पंख ॥

धर्म-कर्म से बहुत ने, 'चन्दन' आंखें मीच।
जीवन की सब सफलता, समझी धन के बीच ॥

शुभ में धन को खर्चते, विरले ही धनवान।
दुर्व्यसनों में फूंकते, बहुत मगर नादान ॥

फैसी डाली लोभ ने, नर के नाक नकेल !
मानवता तज रच रहा, गन्दे सिनमा-खेल ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' लालच-लोभ जो, सीमा से बढ़ जाय।
दया, सत्य, सन्तोष, सुख, समता सभी नसाय॥

हीन-अधिक ही तोल तो— हीन-अधिक ही माप।
करवाता है लोभ ही, और अनेकों पाप॥

'नर्क भेजदें आपको, या कि स्वर्ग मंझार'?
'कहे लालची चाहिए, मुझको पैसे चार'॥

पैसे को ही देवता, वर्तमान में मान।
दौड़े जाते जर्मनी, अमरीका जापान॥

नहिं धनिकों को चैन है, नहिं निर्धन को चैन!
दोनों ही बे-चैन हैं, अय 'चन्दन' दिन-रैन!!

ज्ञान, ध्यान का, दान का, तप का लोभ प्रशस्त।
धन, भोजन का, भोग का; लालच बुरे समस्त॥

खाने के जो लालची, जाते बहुत समेट।
क्या बतलायें बाद जो, भुगते उनका पेट!!

हमें दिया है खाक जो; कहता बारम्बार।
उस लोभी दामाद का, कौन करे सत्कार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सन्त, चिकित्सक, वैश्य, द्विज, शासक, न्यायाधीश ।
छः निर्लोभी ही भले, कहते गुणी, मुनीश ।।

है अनीति के लोभ पर, वही लगाता रोक ।
'चन्दन' जिसको याद है, मृत्यु और परलोक ।।

अरबों के धन पर रहा, 'चन्दन' जिनका हाथ ।
एक सुई भी नहिं गई, आख़िर उनके साथ ।।

पैसों के जो वास्ते, पाप करेंगे आप ।
पैसे तो नहिं जांयगे, जायेंगे संग पाप ।।

लोभ-लोभ नहिं एक-से, लोभ-लोभ में फ़र्क ।
स्वल्प लोभ से स्वर्ग तो- महालोभ से नर्क ।।

जो मानव इस लोभ का, करे सर्वथा नाश ।
अय 'चन्दन' वह मुक्ति में, करता अन्त निवास ।।

'चन्दन' तृष्णा-लोभ को, जो जीते बलवान ।
उसके चरणन का बने, सेवक सभी जहान ।।

'नन्दीवर्द्धन' ने किया, ताज-तख़्त जब पेश ।
'वर्धमान' ने त्याग का, दिया स्पष्ट सन्देश ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'चन्दन' माया मोहिनी, जादू जिसके पास।
जीत-जीत जिसने किया, जगत चरण का दास॥

तख्त-ताज के लोभ का, करके खड़ा फिसाद।
सौ के सौ कौरव हुए, अय 'चन्दन' बर्बाद॥

तख्त-ताज के लोभ को, दिखलाया जिस जीत।
धन्य! 'राम' के साथ की, 'भरत' भ्रात की प्रीत॥

लालच करवाता नहीं, कहो कौन सा पाप।
राजा 'कौणिक' ने किया, बन्दी अपना बाप॥

'चन्दन' जोड़ा था जिन्हें, मेहनत कर दिन-रात।
छिने बैल तो रह गया, 'मम्मन' मलता हाथ॥

बादशाह यूनान का, लोभी जग विख्यात।
कहो 'सिकन्दर' ले गया, जाते दम क्या साथ॥

क़बरें आदिक तोड़ कर, जोड़े गंज अनेक।
क्या कुछ 'कारूं' ले गया, अय 'चन्दन' लें देख॥

किसे नहीं मालूम है, 'शाहजहां' का हाल।
बन्दी बेटे ने किया, जिसको 'चन्दनलाल'॥

॥ ६२ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनय

प्रथम परीक्षा कीजिये, जो हो मनुज महान ।
विनय नहीं कुछ भी नहीं; 'चन्दन' का ऐलान ॥

विनय धर्म का मूल है, विनय गुणों की खान ।
विनयी बन्दा चमकता, 'चन्दन' चांद समान ॥

गुरुजन के रहता निकट, जो हो आज्ञाकार ।
उसको ही विनयी कहे, अय 'चन्दन' संसार ॥

तत्व-ज्ञान से शून्य जो, सदा चले विपरीत ।
दूर रहे गुरुदेव से अय 'चन्दन' अविनीत ॥

कितना हो ज्ञानी-गुणी, कितना हो विद्वान ।
कहीं कभी भी नहिं लहे, विनय-हीन सम्मान ॥

करना हो जो आपको, अपना परम विकास ।
अविनय औ अविचार के, कभी न फटकें पास ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रवि रजनी नहिं ठहरते, जैसे एक स्थान।
मानी में न रहे विनय, विनयी में नहिं मान॥

जिसको 'चन्दन' चाहिये, विद्या, गहरा ज्ञान।
है बनता विनयी वही, बालक, वृद्ध, जवान॥

राग, रुपया, विनय औ, शील, रूप, मधु बोल।
'चन्दन' ये हैं जगत में, छः जादू अनमोल॥

अर्थ-विनय और भय-विनय, काम-विनय फिर और।
धर्म-विनय ही एक है, विनयों की सिरमौर॥

सेवक, शिष्या, शिष्य, सुत, नव वधुएं, परिवार।
बहुत-बहुत ही विनय से, लहें सदा सत्कार॥

नम्र रहे जो अहर्निश, ज्ञान गुणों के साथ।
गणधर 'गौतम' की विनय, विश्व बीच विख्यात॥

'पंथक जी' मुनिराज-सा, विनयवान गुणवान।
'चन्दन' मिलना है कठिन, आज जगत दरम्यान॥

चन्दनबाला भी जिसे, थकी न कहते धन्य।
'मृगा सती'-सी केवली, विनयवती नहिं अन्य॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हम पूछें आप बताएं

रात रहे पर पहर भर, 'चन्दन' नींद बिसार।
आत्म-चिन्तन का किया, कहिये कभी विचार ?

'चन्दन' आशय आपका, बिन ही किये बयान।
लोग अन्य अनुमान से; लेते तो नहिं जान ?

लगे बुरा जो आपको, 'चन्दन' सभी प्रकार।
करते ऐसा तो नहीं, औरों से व्यवहार ?

इक दिन जाना जगत से, रखते हैं क्या याद ?
'चन्दन' चखना पाप का, पड़ता क्या नहिं स्वाद ?

मिले किसी को हर्ष क्यों ? मिले किसी को शोक ?
कहो मानते आप क्या, नर्क, स्वर्ग, परलोक ?

'चन्दन' लगते बोलने, जिस दम भी हैं आप।
उगलें सुन्दर शब्द या– करते व्यर्थ प्रलाप ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बने सहस्रनाग नित्य, निन्दा करें निशंक।
गुणियों की तारीफ़ में, पर क्या वाणी-रंक ?

पर-दोषों को खोज कर, रखने में कण्ठस्थ।
ठीक ज़रा बतलाइये, हो कितने अभ्यस्त ?

औरों का खुद आप हो, करते सदा बखान ?
करे आपका भी कभी, कोई या गुणगान ?

कौन अधिकतर आपके, गाता है यश - गीत ?
आप स्वयं ? या आपके– बैरी ? अथवा मीत ?

आते ही घर आपके, चलता क्या तूफ़ान ?
सन्नाटा या एकदम, जैसे बन सुनसान ?

कितना मन में क्रोध है ? कितना मन में मान ?
कितना मन में लोभ-छल ? किया कभी क्या ध्यान ?

निर्धन-दुखिया-दीन के, कुचल-कुचल अरमान।
नहीं किये क्या नव्य ये, भव्य भवन निर्माण ?

नर्क बना या आपसे, स्वर्ग बना संसार ?
अय 'चन्दन' बतलाइये, करते कभी विचार ?

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्म-परिचय

शहर भटिण्डा के निकट, 'त्योना' नामक गाँव।
'ओसवाल' कुल-बोथरा, 'रामामल जी' नाम॥

दिल के सरल उदार थे, ऊंचे स्वच्छ विचार।
सब का वे, उनका सभी, करते थे सत्कार॥

पुण्योदय से था लिया, जन्म वहाँ सुखकार।
'लछमी' मां के हर्ष का, रहा न पारावार॥

कभी-कभी उपवास पर, सामायिक हर प्रात।
माता जी थीं धर्म में, लछमी ही साक्षात॥

उन्नीसौ इकहत्तरा, अट्ठाइस आसौज।
कर्क लग्न लग्नेश युत, सब ने मानी मौज॥

'शान्तिदेवी' बहन थी, और बड़े दो भ्रात।
'मेहरचन्द जी' और थे- 'कृपाराम' विख्यात॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अल्पावस्था में गए, दोनों स्वर्ग सिधार ।
'कंवरचन्द' है, और है– उसका अब परिवार ॥

भगिनी की सुसराल शुभ, जीजा जी 'गोपाल' ।
भूलूं क्यों 'हनुमानगढ़', जहां पढ़ा कुछ साल ॥

विद्यालय फिर सेठिया, पहुंचा 'बीकानेर' ।
बाबू 'भैरोंदान जी', दया दिखाई ढेर ॥

'पूज्य जवाहरलाल' के, दिल्ली के चौमास ।
जा करके फिर था किया, कुछ-कुछ शास्त्राभ्यास ॥

उन्नीसौ अट्ठासिया, आया माघ बसन्त ।
गुरुवर 'पन्नालाल' से, बना जैन था सन्त ॥

'पूज्य आत्माराम जी', कवि 'अमर उपाध्याय' ।
के भी चरणों में किया, शास्त्रों का स्वाध्याय ॥

बचपन में ही बहुत था, काव्य-कला से प्यार ।
गुणियों के संसर्ग से, आए अक्षर चार ॥

है तो यह भी धृष्टता, यों ही किया खयाल ।
'आत्म-परिचय' और अब, क्या दे 'चन्दनलाल' ॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपसंहार

मानव-मानव में जगे, मानवता का भाव।
दोहे लिखने का अतः, उपजा मन में चाव॥

मानव-जीवन-सा नहीं, जीवन कोई और।
इसको सफल बनाइये, अय 'चन्दन' हर तौर॥

मानव-जीवन का किया, जिसने नहिं सम्मान।
दुनिया में नहिं दूसरा, उस-सा फिर नादान॥

व्यवहारिक औ धार्मिक, दोनों विध का ज्ञान।
देखें पाठक ! प्रेम से, पुस्तक के दरम्यान॥

जन-गण-मन में जो जगा, मानवता का प्यार।
समझूंगा श्रम सार्थक, अपना सभी प्रकार॥

कविता का कुछ बोध नहिं, नहिं पिंगल का ज्ञान।
दोष देख उपहास नहिं, कभी करें विद्वान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनकी कृतियां भी बनीं, दोहों की आधार।
'चन्दन' लेखक-वृन्द का, रहा मान आभार॥

'स्थानकवासी जैन' में, जिनका उच्च स्थान।
धर्म-धुरन्धर धीर-धर, आगम-ज्ञान-निधान॥

आचार्य 'श्रीचन्द्र' के, जो हैं शिष्य महान।
वैरागी, त्यागी, तपी, जैन जगत की शान॥

गुरुवर 'पन्नालाल' का, सारा है उपकार।
जो 'चन्दन दोहावली', सहज हुई तैयार॥

'बरनाला मण्डी' जहां, धर्मी - प्रेमी लोग।
लिखने का दोहावली, बना यहीं संयोग॥

विक्रम सम्वत् 'दोसहस– सत्ताइस' शुभ जान।
करी पूर्ण दोहावली, माघ शुक्ल दरम्यान॥

दीक्षा दिन भी आ गया, मंगलकारी साथ।
सोना और सुगन्ध की, बनी सहज ही बात॥

दया-धर्म-सा अन्य नहिं, धर्म परम निर्भय।
दया धर्म की प्रेम से, कहता 'चन्दन' जय॥

॥ १४ दोहे सम्पूर्ण॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi